हिन्दी दैनिक

# प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • मंगलवार • 19.11.2024 • वर्ष : 15 • अंक : 117 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

# अंतिम चरण के चुनाव में स्टार प्रचारकों ने झोंकी ताकत

## ये विचारधारा की लड़ाई है : राहुल गांधी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड विधानसभा चुनाव के मद्देनजर रांची पहुंचे कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि ये लड़ाई विचारधारा की लड़ाई है। संविधान को बचाने की लड़ाई है। आरक्षण को बढ़ाने की लड़ाई है। किसानों की मजदूरों की रक्षा की लड़ाई है। युवाओं की रक्षा की लड़ाई है। कांग्रेस संविधान की रक्षा कर रही है जबकि बीजेपी और आरएसएस के लोग संविधान को खत्म करना चाहते हैं। कांग्रेस कभी संविधान को खत्म नहीं होने देगी। राहुल गांधी ने पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि लोकसभा में मैंने कहा कि कांग्रेस पार्टी और इंडिया गठबंधन जातिगत जनगणना कराएगी। हम पता लगाना चाहते हैं कि इस देश में पिछड़े वर्ग के कितने लोग हैं, दलित कितने है, आदिवासी कितने हैं और उनकी भागीदारी कितनी है। मैंने खुद लोकसभा में कहा कि जाति जनगणना को हम करेंगे। वहीं, मैंने कहा कि जो 50 प्रतिशत आरक्षण का बैरियर लगा रखा है, इस बैरियर को कांग्रेस तोड़ देगी। प्रधानमंत्री झूठ बोलते हैं और कहते हैं कि मैं आरक्षण के खिलाफ हूं। मैं आरक्षण के खिलाफ नहीं हूं। मैं आरक्षण को 50 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ाना चाहता हूं। राहुल ने कहा कि मैंने लोकसभा में पीएम को कहा कि आप जाति जनगणना किजिए हम आपका सहयोग करेंगे लेकिन पीएम ने मेरा जवाब नहीं लिया। हम झारखंड में भी आरक्षण को बढ़ाएंगे। एसटी के आरक्षण को 26 से 28 प्रतिशत करेंगे। एससी के 10 प्रतिशत को 12 प्रतिशत करेंगे। ओबीसी के प्रतिशत को 14 से बढ़ाकर 27 करेंगे। हम ये कोशिश कर रहे हैं और बीजेपी के लोग इसको रोक रहे हैं। राहुल ने कहा कि मैं हर भाषण में कह रहा हूं कि मोदी झारखंड का जंगल, जल, जमीन तीन-चार अरबपतियों को देना चाहते हैं। हम गरीबों के सरकार चलाना चाहते हैं।

## विस्थापितों को देंगे मुआवजा और नौकरी : हेमन्त सोरेन

**नाला :** सीएम हेमन्त सोरेन ने सोमवार को नाला में चुनावी सभा को संबोधित किया। यहां उन्होंने लुईस मरांडी के पक्ष में चुनावी सभा की। सभा को संबोधित करते हुए सीएम सोरेन ने कहा कि अपनी अगली सरकार में हम विस्थापितों को मुआवजा और नौकरी देंगे। राज्य में ठोस विस्थापन नीति लागू करेंगे, जिसे तैयार कर लिया गया है। कहा कि हमारी सरकार को पूरा समय काम नहीं करने दिया गया। समय से पहले चुनाव करा दिया गया। कहा, सरकार बनते ही हमने कोरोना का सामना किया। कोरोना के कठिन समय में हमने अपने दो मंत्रियों को खो दिया। एक हाजी हुसैन अंसारी और दूसरे जगन्नाथ महतो। कहा हमारे ये दोनों मंत्री लोगों की सेवा करते-करते चल बसे। हेमंत ने आगे कहा कि कोरोना काल में हमारी दीदियों ने लाखों भूखे लोगों को भोजन खिलाने का काम किया था। उसी समय हमने फैसला किया था कि हम महिलाओं के सम्मान के लिए योजना की शुरूआत करेंगे। इस साल हमने इसीलिए मंईयां सम्मान योजना की शुरूआत की है। लेकिन बीजेपी को इस पर भी आपत्ति हो रही है। ये लोग कोर्ट में चले गये। लेकिन कोर्ट में भी इनको मुंह की खानी पड़ी है। कोर्ट ने योजना पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। कहा कि बीजेपी की नीति ही हो गयी है कि किसी भी योजना के खिलाफ कोर्ट में चले जाने की। सीएम ने कहा कि हमारा झारखंड पूरे देश में ऐसा पहला राज्य है, जिसने बूढा बुजुर्ग को पेंशन देने की योजना को सर्वजन पेंशन योजना से जोड़ने का काम किया। साथ ही हमने विधवा को भी पेंशन देने का काम शुरू किया है। कहा महिला जिस दिन से विधवा होगी, उसी दिन से विधवा पेंशन का लाभ मिलेगा। कहा कि बीजेपी के लोग बेटी सम्मान और महिला सम्मान की बात करते हैं। ये लोग कितना महिला सम्मान करते हैं, इस समझने की जरूरत है।

## झारखंड 25 साल का हो गया, अब नई शुरुआत करनी होगी : हिमंता

**धनबाद :** असम के मुख्यमंत्री और झारखंड चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रभारी हिमंता बिस्वा सरमा ने सोमवार को टुंडी विधानसभा क्षेत्र के तोपचांची मदयडीह स्टेडियम में जन आशीर्वाद सभा को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड 25 साल का हो गया है। अब एक नए झारखंड की शुरूआत हम सभी को मिलकर करनी है। हिमंता ने कहा कि राजमहल, पाकुड़ और जामताड़ा जैसे जिलों में शुक्रवार को स्कूल बंद रहता है। वहां के लोगों ने बताया कि शिक्षकों को नमाज पढ़ना रहता है, इसलिए शुक्रवार को स्कूल बंद रहता है। हमें भी मंगलवार को स्कूल छुट्टी चाहिए। हमें हनुमान जी की पूजा के लिए मंदिर जाना पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि जो इरफान अंसारी और आलमगीर आलम बोलते हैं, वही हेमंत सोरेन करते हैं। हमारी देश की संस्कृति और सभ्यता को ये खत्म कर देना चाहते हैं। सरमा ने कहा कि हेमंत सोरेन पाकिस्तान की संस्कृति हमारे यहां लाने का काम कर रहे हैं। रामनवमी में ये हमारे जुलूस निकलने पर रोक लगाते है। मोहर्रम का जुलूस यह निकलने देते हैं। यह सरकार हिन्दू समाज का विरोध करती है। यह देश प्रभु श्री राम का है। हम श्री राम को मानते है। यह हिंदू विरोधी सरकार है। उन्होंने टुंडी से भाजपा प्रत्याशी विकास कुमार महतो के समर्थन में वोट की अपील करते हुए कहा कि 20 तारीख को इस सरकार को गंगा मैया को सौंप दो। सरमा ने कहा कि हमलोगों को अब एक होना होगा। हिन्दू में शक्ति है। हम एक होंगे तभी शक्ति होगी। हिन्दू एक होते हैं तो बाबरी मस्जिद टूटती है और राम मंदिर बनता है। यह चुनाव मथुरा महतो और विकास महतो का चुनाव नहीं है। यह हमारे धर्म संस्कृति और समाज को बचाने का चुनाव है। साथ ही कहा कि इरफान अंसारी और आलमगीर आलम झारखंड को खा जाएंगे।

## भाजपा की सरकार में किसी घुसपैठिए के लिए कोई जगह नहीं : योगी

**साहिबगंज :** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्राकृतिक रूप से धनी झारखंड भौतिक रूप से पिछड़ रह गया। क्योंकि, यहां की जेएमएम-कांग्रेस सरकार ने इसे विकास से वंचित रखा गया। योगी सोमवार को राजमहल विधानसभा सीट के प्रत्याशी अनंत ओझा के लिए चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि झारखंड के राजमहल, पाकुड़ जैसे कई इलाकों में जेएमएम और कांग्रेस के जरिये बांग्लादेशी घुसपैठियों का गढ़ बनाने का प्रयास किया जा रहा है लेकिन भाजपा की डबल इंजन की सरकार में किसी घुसपैठिए के लिए कोई जगह नहीं। मैं आपसे एक ही बात कहने आया हूं कि जैसे यूपी में डबल इंजन के सरकार में कोई घुसपैठिया नहीं है, न कोई गोहत्या कर सकता है, न कोई बेटी की इज्जत पर हाथ डाल सकता है। इसी तरह झारखंड में भी हो सकता है और यह काम केवल भाजपा ही कर सकती है। ना कि कांग्रेस और जेएमएम की सरकार। योगी ने ने कहा कि झारखंड में पहले चरण का मतदान 13 नवंबर को हो चुका है और दूसरे चरण का मतदान 20 नवंबर को होने वाला है। इसके परिणाम 23 नवंबर को आने वाले हैं। अबतक के रुझान बताते हैं कि इस बार भाजपा के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन दो तिहाई से अधिक सीटों के साथ पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने जा रही है। इसके बाद सबसे पहले एनडीए की सरकार 21 लाख परिवारों को पीएम आवास योजना के अंतर्गत पक्का घर देने का काम करेगी। साथ ही गोगो दीदी योजना के अंतर्गत माताओं और बहनों को प्रति माह 2100 रुपये और ग्रेजुएशन-पोस्ट ग्रेजुएशन कर चुके नौजवानों को सरकार हर माह 2000 रुपये का बेरोजगारी भत्ता देगी। युवा वर्ग को झारखंड के अंदर ही डेढ़ लाख सरकारी नौकरी देने का कार्य किया जाएगा। झारखंड में गोहत्या बंद होगी और बेटियों को सुरक्षा मिलेगी।

### एक नजर

## दिल्ली के पूर्व मंत्री कैलाश गहलोत भाजपा में शामिल

**नई दिल्ली :** दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री और नजफगढ़ से विधायक कैलाश गहलोत सोमवार को भाजपा में शामिल हो गए। उन्होंने पार्टी मुख्यालय में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर और पार्टी महासचिव दुष्यन्त गौतम की मौजूदगी में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। कैलाश गहलोत ने रविवार को ही आम आदमी पार्टी की प्राथमिक सदस्यता और मंत्री पद से इस्तीफा दिया था।

## 'व्हिस्पर' नहीं, बल्कि 'बोल्ड' होकर बोलें कार्यकर्ता : हेमन्त सोरेन

**रांची :** मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भाजपा पर 'व्हिस्पर कैंपेन' चलाने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिसा और बंगाल से आए लोगों ने एक नया षड्यंत्र शुरू किया है। हेमंत सोरेन ने झारखंड के निवासियों से अपील किया है कि आज और कल मेरे लिए 'व्हिस्पर' नहीं, बल्कि खुलकर अभियान चलाएं। क्योंकि झारखंडियों की प्रकृति में डरना और धीरे-धीरे बोलना नहीं है। खुलकर बोलें, 'व्हिस्पर' नहीं, बल्कि 'बोल्ड' होकर बोलें। सोरेन ने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट कर उन्होंने उल्लेख किया कि जिन विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव हो रहे हैं, वहां ये लोग चौक-चौराहों पर चुनाव पर चर्चा करते हुए मिलेंगे। इसे भाजपा का नया षड्यंत्र माना जा रहा है, जिसे 'व्हिस्पर कैंपेन' कहा जाता है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा है कि इस अभियान के लिए हर विधानसभा में एक करोड़ से अधिक खर्च किए गए हैं। वीडियो में जो दिखाया गया है,वह इसी तरह का है। इस सबके केंद्र में डर होता है।

## विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण की 38 सीटों पर थमा प्रचार, मतदान की तैयारी पूरी : रवि कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा है कि विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण की 38 सीटों पर प्रचार अवधि समाप्त हो गयी है। इस साइलेंट पीरियड में प्रचार कार्य नहीं होगा। उन्होंने कहा कि मतदान वाले क्षेत्र में चुनाव प्रचार आदि के लिए बाहर से गए राजनीतिक नेता, कार्यकर्ता को वह जगह तत्काल छोड़ देना है। वे ही वहां रह सकेंगे, जो उस क्षेत्र के मतदाता हैं। कुमार सोमवार को धुर्वा स्थित निर्वाचन सदन में पत्रकार वार्ता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग की स्पष्ट गाइडलाइन है कि कोई भी बाहरी व्यक्ति मतदान वाले क्षेत्र में नहीं रहेगा। इसे लेकर जिला प्रशासन होटल आदि की भी जांच करेंगे। बाहरी लोगों के मिलने पर

वैधानिक कार्रवाई होगी। इसमें बीमारी की हालत में छूट के लिए मेडिकल बोर्ड के परीक्षण के परिणाम के आधार पर निर्णय होगा। कुमार ने कहा कि सभी प्रत्याशी 20 नवंबर की शाम पांच बजे तक काउंटिंग एजेंट के लिए आवेदन दे दें। इसके बाद के आवेदनों पर विचार नहीं होगा। उन्होंने कहा कि 20 नवंबर को स्वतंत्र, निष्पक्ष और भयमुक्त मतदान के लिए पर्याप्त संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती की गयी है। साथ ही हर मतदान केंद्र की लाइव निगरानी के लिए मतदान केंद्र के भीतर और बाहर दो कैमरे लगाये गए हैं। वेबकास्टिंग के माध्यम से इसकी सतत निगरानी जिला से लेकर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के कार्यालय तक से की जाएगी। कुमार ने कहा कि 43 विधानसभा सीटों पर कुल 1.23 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। जामताड़ा के मिहिजाम स्थित स्नेहपुर कुष्ठ आश्रम के मतदाताओं के सुगम मतदान के लिए स्नेहपुर सामुदायिक भवन, हांसीपहाड़ी में सहायक मतदान केंद्र का निर्माण किया गया है। यहां कुष्ठ पीड़ित कुल 57 मतदाता हैं। उन्होंने कहा कि मतदान के दिन सभी प्रत्याशियों को मतदान केंद्र के 200 मीटर की परिधि से बाहर अपना कैंप लगाना है। कैंप में पार्टी और प्रत्याशी से जुड़ा कोई पोस्टर, सिंबल आदि नहीं लगाना है। वहां से वे मतदाताओं को सादे कागज पर उनका सीरियल नंबर दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि मतदान की निजता अनिवार्य है। इस स्थिति में मतदान केंद्र के भीतर मोबाइल ले जाना, फोटो लेना, वीडियो बनाना अवैध है। ऐसा करते पकड़े जाने पर सजा का भी प्रावधान है।

## राहुल गांधी बताएं कि किस संविधान, आरक्षण और लोकतंत्र की हत्या हुई : चिराग पासवान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**धनबाद :** झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में 38 सीटों पर बुधवार को मतदान होना है। ऐसा में सोमवार को प्रचार के अंतिम दिन धनबाद पहुंचे केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने झरिया और धनबाद विधानसभा क्षेत्र के करकेन्द में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए एनडीए के पक्ष में मतदान करने की अपील की। इस दौरान उन्होंने झरिया में भाजपा प्रत्याशी रागिनी सिंह के समर्थन में रोड शो भी किया। जनसभा को संबोधित करते हुए लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष सह केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि मैं राहुल जी से पूछना चाहता हूं कि 5 महीने पहले लोकसभा चुनाव के दौरान राहुल गांधी घूम-घूम कर जो झूठ बोलते

थे कि नरेन्द्र मोदी की सरकार आई तो संविधान समाप्त हो जाएगा, आरक्षण समाप्त हो जाएगा, लोकतंत्र की हत्या कर दी जाएगी लेकिन वो बताए कि संविधान की हत्या हो गई, कौन सा आरक्षण समाप्त कर दिया गया जबकि लोकतंत्र की हत्या तो इन्होंने 1975 में देश में इमरजेंसी लगा कर किया था। चिराग ने कहा कि राहुल गांधी जिस संविधान को लेकर घूमते है और जिसकी दुहाई देते है, उसी संविधान के रचयिता डॉ बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर को इन्होंने प्रताड़ित और अपमानित करने का काम किया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने जहां देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का काम किया, वहीं हमारी आस्था (राम मंदिर) को भी सम्मान देने का काम किया। आज दुनिया की सबसे बड़ी गरीब कल्याण योजना पीएम मोदी के नेतृत्व में चलाई जा रही है। इसके अंतर्गत देश के 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त में अनाज देने का काम हमारी सरकार कर रही है।

## दिल्ली-एनसीआर में एक्यूआई भले ही 450 से नीचे आ जाए, बिना इजाजत ग्रैप-4 न हटायें : सुप्रीम कोर्ट

एजेंसी

**नई दिल्ली :** दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि एनसीआर के सभी शहरों में ग्रैप-4 लागू होंगे। जस्टिस एएस ओका की अध्यक्षता वाली बेंच ने ग्रैप-4 के प्रावधान सख्ती से लागू करने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि फिलहाल हमारी इजाजत के बिना ग्रैप-4 को हटाया नहीं जाएगा, भले ही एक्यूआई 450 से नीचे आ जाए। ग्रैप-4 आज सुबह से लागू किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में 12वीं तक सभी कक्षाओं को बंद करने का आदेश दिया है। कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया है कि वो भी हाइवे, पुल जैसे निर्माण रोकने

### दिल्ली-एनसीआर में 12वी तक की सभी कक्षाओं को बंद करने का आदेश

पर विचार करे। कोर्ट ने स्थिर सैटेलाइट से पराली जलाने की घटनाओं की निगरानी करने का आदेश दिया। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने दिल्ली सरकार से पूछा कि ग्रैप-4 पहले लागू क्यों नहीं किया गया। ग्रैप-4 लागू करने में देरी क्यों की गई। जब एक्यूआई 13 नवंबर को 400 के पार कर गया था तो तीन दिनों के बाद ग्रैप-3 क्यों लागू किया गया। आपने प्रदूषण कम करने को लेकर क्या कार्रवाई की है। तब दिल्ली सरकार ने कहा कि हमने ग्रैप-4 लागू

कर दिया है। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग से पूछा कि आपने तीन दिन तक का इतंजार क्यों किया। जब एक्यूआई 300 से 400 तक पहुंच गया तब जाकर आपने ग्रैप-3 लागू किया। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से वकील गोपाल शंकर नारायण ने कहा कि दिल्ली के स्कूलों में नौवीं तक के बच्चों को स्कूल आने से रोका गया है। उनकी ऑनलाइन पढ़ाई चल रही है। ग्रैप-4 में भी बहुत सारी बातें सरकार पर निर्भर करती हैं। जैसे स्कूलों को बंद किया जाए या नहीं। हालाकि यह गंभीर मसला है। इसे सरकार के विवेक पर नहीं छोड़ा जा सकता। कोर्ट ने पूछा कि ट्रकों का दिल्ली में प्रवेश कौन रोकेगा और कैसे पता चलेगा कि जो ट्रक आ रहे हैं वे आवश्यक सामान ले जा रहे हैं या नहीं। तब कोर्ट को बताया गया कि इसकी जांच ट्रैफिक पुलिस करती है और उसके पास जरूरी वस्तुओं की लिस्ट होती है। कोर्ट ने पूछा कि निर्माण गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसकी निगरानी कौन कर रहा है। क्या कोई साइट पर जाकर जांच कर रहा है। इस पर गोपाल शंकर नारायण ने कोर्ट को बताया कि अभी भी सुप्रीम कोर्ट के अंदर ही निर्माण कार्य चल रहा है। पत्थर तोड़े जा रहे हैं और हवा में धूल उड़ रही है। इस पर जस्टिस ओका ने गंभीरता दिखाते हुए सुप्रीम कोर्ट के सेक्रेटरी जनरल को कोर्ट में पेश होने को कहा। कोर्ट ने कहा कि हम राज्यों को कमेटी गठित कर यह सुनिश्चित करने का निर्देश देंगे कि कोई निर्माण कार्य न हो। कोर्ट ने दिल्ली सरकार से कहा कि जैसे ही एक्यूआई 401 पार हुआ आपको तुरंत ग्रैप-3 लागू करना चाहिए था। आपने लागू करने के लिए 24 घंटे का इंतजार क्यों किया।

## आप विधायक रघुविंदर शौकीन बनेंगे आतिशी कैबिनेट में मंत्री

एजेंसी

**नई दिल्ली :** दिल्ली के नांगलोई जाट क्षेत्र से आम आदमी पार्टी (आआपा) के विधायक रघुविंदर शौकीन दिल्ली की आतिशी सरकार में नए कैबिनेट मंत्री होंगे। यह जानकारी सोमवार को दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने पत्रकारों को दी। पत्रकार वार्ता में सिसोदिया ने कहा कि आम आदमी पार्टी के विधायक रघुविंदर शौकीन को आतिशी सरकार में दिल्ली कैबिनेट में शामिल किया गया है। शौकीन बाहरी दिल्ली से जाट नेता हैं। उन्होंने कहा कि रघुविंदर शौकीन ने शिक्षा जगत के लिए भी कई अच्छे काम किए हैं। वह खुद सिविल इंजीनियर रहे हैं। दो बार निगम पार्षद रह चुके हैं और दो

बार के विधायक हैं। वह बाहरी दिल्ली के नांगलोई जाट सीट का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस मौके पर रघुविंदर शौकीन ने आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया और पार्टी के शीर्ष नेताओं का आभार जताया। उन्होंने कहा कि वह दिल्ली के चौतरफा विकास का प्रयास करेंगे और प्रदेश की जनता और आआपा के शीर्ष नेताओं की उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

एक नजर

## चित्रगुप्त मंदिर निर्माण के लिए हुआ भूमि पूजन

**बड़कागांव :** हजारीबाग रोड स्थित बड़कागांव काली मंदिर के समीप बड़कागांव प्रखंड में इकलौता चित्रगुप्त मंदिर का शिलान्यास भूमि पूजन सोमवार को किया गया। आधारशिला स्वर्गीय नरसिंह प्रसाद के पुत्र बड़कागांव चित्रांश परिवार के प्रखंड अध्यक्ष कृष्णा प्रसाद के नेतृत्व में रखी गई। आधारशिला के लिए पुरोहित यदुनंदन मिश्रा के द्वारा विधिपूर्वक पूजा अर्चना कराई गई। बताते चलें कि पूरे प्रखंड में यह पहला चित्रगुप्त मंदिर बनेगा, जहां मंदिर का निर्माण का शुभारंभ किया गया है। मंदिर का निर्माण के लिए स्वर्गीय नरसिंह प्रसाद के परिवार वालों ने जमीन दान दी है। मौके पर अरुण प्रसाद, राजकिशोर प्रसाद, दिनेश प्रसाद, कमलेश श्रीवास्तव, दीपक सिन्हा, पुजारी बंटी सिन्हा, अरुण सिन्हा, अंशु सिन्हा, रवि सिन्हा, विनोद लाल, राजकुमार सिन्हा, अशोक सिन्हा, उमेश लाल के अलावा चित्रांश परिवार के कई सदस्य उपस्थित थे।

## शहर में जाम से जनता परेशान : शैलेंद्र कुमार शैलू

**मेदिनीनगर(पलामू) :** भाजपा नेता शैलेंद्र कुमार शैलू ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा की प्रतिदिन शहर के सदिक चौक से केलर शाहपुर तक सड़क जाम से जनता को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। खासकर नौकरीपेशा व्यक्ति, मरीज आदि को जाम से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।जो जनहित के लिए अच्छी बात नहीं है।उन्होंने जिला से लोगों को जाम से निजात दिलाने का आग्रह किया है। ताकि जनता समय पर अपना हर काम कर सके ,और सुकून से घर लौट सके। लगातार जाम होने से दुर्घटना और लड़ाई झगड़ा का संभावना बनी रहती है। इसके साथ ही ट्रैफिक व्यवस्था में भी कुछ सुधार बदलाव की जरूरत है।

## पत्रकार का परिवार हुआ हज के लिए रवाना

**छतरपुर(पलामू) :** छतरपुर नगर पंचायत क्षेत्र के खाटीन असगर हुसैन पत्रकार की माँ,भाई करि मनव्वर हुसैन नूरी ,बहनोई ,बहन ने जुमा की रात उम्रा के लिए रवाना हुए असगर हुसैन पत्रकार ने बतया की दिल्ली फ्लाइट से मक्का के लिए जाएंगे फिर मदीना आएंगे और वहां से फिर अपने वतन भारत के लिए लौटेंगे। पत्रकार असगर हुसैन की माँ से दुआ के लिए कहा गया उन्होंने कहा कि अपने छतरपुर के साथ-साथ मुल्क में आपसी एकता भाईचारगी,तरक्की के लिए पहले भी दो बार गई हूं दुआ किये थे और इस बार भी दुआ करूंगी उम्रा के लिए घर से निकलने से पहले हाजी करि मनव्वर नूरी ने हिफाजत और सफर के लिए दुआ मांगी मौके पर कांग्रेस के नगर अध्यक्ष मुस्तक आलम, सरफुदिन मियां, नरेश पासवान गोलू,समेत काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

## राज्यपाल से मिला विभावि शिक्षकों का प्रतिनिधिमंडल

**हजारीबाग :** विनोबा भावे विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभागो के शिक्षकों का एक प्रतिनिधिमंडल सोमवार को पूर्वाहन झारखंड के राज्यपाल सह कुलाधिपति संतोष गंगवार से हजारीबाग के सर्किट हाउस में मुलाकात की। राज्यपाल रांची से राजगीर जाने के क्रम में हजारीबाग सर्किट हाउस में थोड़ी देर के लिए रुके थे। इसी समय शिक्षकों को ऊपर से संदेश प्राप्त हुआ की राज्यपाल सह कुलाधिपति से मिलना है। पुराने सर्किट हाउस मे शिक्षकों को देखकर राज्यपाल सह कुलाधिपति बहुत प्रसन्न हुए एवं अपने बगल वाले सोफा में शिक्षकों को बैठने का आग्रह किया।

# मतगणना की तैयारियों को लेकर नगर आयुक्त व डीडीसी ने स्ट्रांग रूम का लिया जायजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**मेदिनीनगर (पलामू) :** 23 नवंबर को जी.एल.ए कॉलेज परिसर में होनेवाली मतगणना को लेकर सोमवार को डी. आर.डी.ए सभागार में मास्टर ट्रेनरों को प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण उप विकास आयुक्त सह प्रशिक्षण कोषांग के नोडल पदाधिकारी शब्बीर अहमद व जिला भू-अर्जन पदाधिकारी की देखरेख में किया गया। इस दौरान सभागार में सभी मास्टर ट्रेनरों को 23 नवंबर को होने वाली मतगणना की सभी बारिकियों को विस्तार से बताया गया। कंट्रोल यूनिट में प्राप्त मतों की गणना कैसे करनी है,उसे किस प्रपत्र में एंट्री करना है संबंधित अन्य तकनीकी पहलूओं के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गयी। इसके अलावे प्रपत्र 17 सी और कंपाइलेशन फॉर्म 20 में करने को लेकर भी ट्रेनिंग दिया गया। 19 से शुरू होगा मतगणना कर्मियों का प्रशिक्षण आज जो मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण प्राप्त किये हैं वे सभी 19 नवंबर को 700 से अधिक मतगणना पर्यवेक्षक/ मतगणना सहायकों व माईक्रोआर्जवर को प्रशिक्षण देंगे। यह प्रशिक्षण 19 के बाद 21 नवंबर को भी दिया जायेगा। यह सभी प्रशिक्षण गणेश लाल अग्रवाल कॉलेज में दिया जायेगा। वहीं 22 को काउंटिंग को लेकर ड्राई रन किया जायेगा। 23 नवंबर को पांचो विधानसभा के लिये 96 राउंड में होगी मतगणना गणेश लाल अग्रवाल कॉलेज स्थित स्ट्रांग रूम में आगामी शनिवार को पाँचों विधानसभा के लिये 96 राउंड में मतों की गणना की जायेगी। इसमें डालटनगंज में 20 राउंड में मतों की गणना की जायेगी। इसके अलावे पांकी, विश्रामपुर, छत्तरपुर एवं हुसैनाबाद में 19 राउंड में ही मतों की गिनती की जायेगी। इसी क्रम में पांकी में 18,डालटनगंज में 22,विश्रामपुर में 20,छत्तरपुर में 18 व हुस्सैनाबद में 18 टेबल बनाये गये हैं। इसी तरह पोस्टल बैलेट से प्राप्त मतों की गिनती हेतु 8-8 टेबल बनाये गये हैं। वहीं ईटीबीपीएस से प्राप्त मतों की गणना को लेकर 12 टेबल बनाया गया है। शनिवार को प्रातः 8 बजे से मतगणना का कार्य प्रारंभ हो जाएगा। मतगणना की तैयारियों को लेकर सोमवार को नगर आयुक्त जावेद हुसैन व उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद ने गणेश लाल अग्रवाल स्थित स्ट्रांग रूम का जायजा लिया।

## बीएसए बरही की नंदनी कुमारी का अंडर-15 क्रिकेट टीम में चयन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बरही :** बरही की उभरती क्रिकेट खिलाड़ी नंदनी कुमारी ने अपनी काबिलियत का परचम लहराया है। नंदनी का चयन अंडर-15 क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में झारखंड स्पोर्ट्स क्रिकेट एसोसिएशन में हुआ है। नंदनी कुमारी राणा मूलतः बरही के करसो की रहने वाली हैं। वह पंचमाधव स्थित सीबीएसई से मान्यता प्राप्त आइलेक्स पब्लिक स्कूल की छात्रा हैं। उनके पिता हरेंद्र राणा ने नंदनी को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित किया। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के तत्वावधान में रायपुर में क्रिकेट टूनार्मेंट आयोजित किया जा रहा है। इस टूनार्मेंट में नंदनी कुमारी मिजोरम के खिलाफ 21 नवंबर को मैच खेलेंगी। नंदनी के प्रदर्शन को लेकर पूरे क्षेत्र में उत्साह का माहौल है। नंदनी के प्रशंसक व लोग बीसीसीआई एप के माध्यम से उनके मैच की स्कोरिंग लाइव देख सकते हैं। उनका यह सफर बरही और झारखंड के लिए गर्व का विषय है। नंदनी की इस उपलब्धि ने बरही और झारखंड के खेल प्रेमियों को गौरवान्वित किया है। उनकी इस सफलता को लेकर क्षेत्र में जश्न का माहौल है, और सभी उनकी जीत की कामना कर रहे हैं। नंदनी को इस सफलता पर डीएस डॉ प्रकाश ज्ञानी, बीएसए संरक्षक अब्दुल मनान वारसी, व्यवसायिक संघ अध्यक्ष कपिल केशरी, सचिव बलराम केशरी, धर्मपाल केशरी, शिवकुमार ठाकुर, अनिल रजक समेत अन्य क्रिकेट प्रेमी शामिल हैं।

## विधानसभा चुनाव के द्वितीय चरण को लेकर डीईओ ने किया डिस्पैच सेंटर का निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**हजारीबाग :** विधानसभा चुनाव के द्वितीय चरण अंतर्गत 24 मांडू विधानसभा क्षेत्र के लिए संत कोलंबस कॉलेज में बनाए गए डिस्पैच सेंटर का जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त नैंसी सहाय ने निरीक्षण किया। हजारीबाग जिलांतर्गत 24 मांडू विधानसभा क्षेत्र के लिए संत कोलंबस कॉलेज से 19 नवंबर को मतदानकर्मी सामग्री के साथ रवाना होंगे। उपायुक्त ने सभी पदाधिकारियों को समय पर सभी व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा, ताकि डिस्पैच के दिन किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न न हो। उन्होंने मतदान कर्मियों के लिए व्यवस्थित और स्पष्ट साइनेज की व्यवस्था का जायजा लिया।

उपायुक्त ने डिस्पैच सेंटर स्थल की सम्पूर्ण साफ सफाई, पेयजल हेतु टैंकर,साउंड सिस्टम, झाड़ियों की कटाई आदि को दुरुस्त करने का निर्देश दिया। तैयारियों की अंतिम व्यवस्थाओं से संतुष्ट होने के लिए सभी संबंधित निवार्ची पदाधिकारीयों को देर रात पुनः निरीक्षण करने का निर्देश दिया। इस दौरान 24 मांडू के निवार्ची पदाधिकारी संतोष कुमार सिंह, सामग्री कोषांग के नोडल पंकज तिवारी व अन्य मौजूद थे।

## परिवार की संख्या के अनुरूप सभी को करना होगा पौधरोपण: डॉ कौशल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**मेराल (गढ़वा):** गढ़वा जिले के मेराल में आनंद प्रसाद जायसवाल धर्मपत्नी उमा देवी की पुत्री सिंपल जायसवाल की शादी डंडई के कपिल प्रसाद जायसवाल धर्मपत्नी उषा देवी के पुत्र राजू प्रसाद जायसवाल की शादी में शामिल विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष व राखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद ट्री मैन डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने वर -वधु व बरातियों को आशीर्वाद स्वरूप हिमाचल के कपूर व आम के पौधे देकर उनके सफल वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि यदि परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़े तो उन्हें स्वस्थ रहने के लिए शिव के समान वृक्ष का होना जरूरी है। उन्होंने दंपति को सुखद जीवन की कामना करते हुए कहा कि बारातियों को दहेज में कुछ मिले या न मिले लेकिन उन्हें पौधा मिलना अति जरूरी है। उन्होंने बर -बधू के नाम पर पर्यावरण धर्म के प्रार्थना के साथ पौधारोपण कर उपस्थित लोगों को पर्यावरण धर्म के आठ मूल ज्ञान मंत्रों की शपथ भी दिलाया। उन्होंने कोरोना काल का जिक्र करते हुए कहा है कि धरती और ब्रह्मांड के 84 लाख योनि जीवन की जीने के लिए सबसे जरूरी ऑक्सिजन होता है। ऑक्सीजन किसी फैक्ट्री का उत्पाद नहीं है। इसके लिए पौधा लगाना होता है। पर्यावरण धर्म गुरु कौशल ने कहा कि आप हर संपत्ति को अर्जित कर सकते हैं परंतु शुद्ध हवा नहीं। बीमारी से बचने के लिए हर व्यक्ति को चाहिए कि अपना धर्म के साथ-साथ पर्यावरण धर्म के आठ मूल ज्ञान मंत्रों को अपने जीवन में उतारने का अथक प्रयास करना चाहिए।

## अन्नपूर्णा देवी ने गिरिडीह में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में किया रोड शो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**गिरिडीह :** केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने झारखंड में दूसरे चरण के विधानसभा चुनाव प्रचार के अंतिम दिन सोमवार को गिरिडीह के भाजपा प्रत्याशी निर्भय शाहाबादी के समर्थन में रोड शो किया। इस दौरान नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि यह चुनाव राज्य के लोगों को सुरक्षित करने वाला है। राज्य में बांग्लादेशी घुसपैठिए पांव पसार चुके हैं। ऐसे में इन्हें बाहर करने के लिए भाजपा का सता में लाने की जरूरत है। प्रदेश भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष रवींद्र राय ने हेमंत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस अब राज्य में कही दिख नहीं रही। जो कुछ थोड़ा दिखाई पड़ रहा है वो भी इस चुनाव के दिखना बंद हो जाएगा। राय ने कहा कि हेमंत और कल्पना सोरेन एंड पार्टी जेएमएम ने शिबू सोरेन के सिद्धांतों को ताक पर रख दिया है। इस दौरान भाजपा प्रत्याशी शाहाबादी के समर्थन में मतदान की अपील की गई। रोड शो में महिला मोर्चा की शालिनी वैशखियार, विनीता कुमारी, तनुजा सहाय, संदीप डंगाईच, मिथुन चंद्रवंशी, विवेक गुप्ता विशाल गुप्ता आदि पार्टी के नेता मौजूद रहे।

# कांग्रेस प्रत्याशी जय प्रकाश भाई पटेल और ममता देवी के पक्ष में मुन्ना सिंह ने चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**हजारीबाग :** कांग्रेस पार्टी के सदर विधानसभा सीट से महागठबंधन के प्रत्याशी मुन्ना सिंह ने सोमवार को मांडू विधानसभा क्षेत्र से महागठबंधन के प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल और रामगढ़ विधानसभा की महागठबंधन प्रत्याशी ममता देवी के पक्ष में धूआंधार जनसंपर्क अभियान चलाया। इस अवसर पर महागठबंधन के वरिष्ठ नेताओं ने जनता से अपील की कि वे महागठबंधन के समर्थन में मतदान कर झारखंड के विकास को नई दिशा दें। जनसंपर्क के दौरान मुन्ना सिंह ने झारखंड सरकार द्वारा लागू की गई जनकल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ये योजनाएं राज्य के हर वर्ग के लिए लाभकारी साबित हो रही हैं। उन्होंने बताया कि झारखंड सरकार ने गरीबों और जरूरतमंदों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए हैं। जिनमें मैया सम्मान योजना, बिजली बिल माफी योजना, सर्वजन पेंशन योजना, 15 लाख तक का मुफ्त इलाज इत्यादि शामिल हैं। उन्होंने जनता से आग्रह किया कि वे झारखंड के समावेशी विकास के लिए महागठबंधन को अपना वोट दें। उन्होंने आगे कहा कि महागठबंधन ने हमेशा जनता की आवाज को प्राथमिकता दी है और सरकार की नीतियां इसी का प्रमाण हैं। इस दौरान मौके पर मुख्य रूप से झामुमो नेता सरफराज अहमद, गौतम कुशवाहा, दिलीप यादव , जितेंद्र कुमार, दिनेश यादव, अयान रजा खान, अभिषेक राज , देव चौहान इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

## केरेडारी एवं चट्टीबारियातू परियोजना की कोयला ढुलाई से प्रदूषित हो रही खरीफ फसल

**केरेडारी :** केरेडारी प्रखंड के चट्टी बारियातु एंव केरेडारी कोल परियोजना से टंडवा पावर प्लांट बचरा कटकमसांडी तक कोयले की ट्रांसपोर्टिंग चालू है। इसके कारण जोरदाग से लोयसुकुवार के बीच सड़क के किनारे रहने वाले लोग व पेटो जोरदाग बुकरु आदि अन्य गांव प्रदूषण का शिकार हो रहे है। गरीब किसान धूल खाकर जीने को विवश है। सड़क के किनारे किसानों के लगे धान की फसल प्रदूषण कोयला का परत बैठ गया है।जिसके कारण गरीब किसान काफी परेशान है। इस क्षेत्र में कृषि के अलावा रोजगार का और कोई साधन नहीं है। जिसके कारण स्थानीय लोग खरीफ फसल धान एवं रबी फसल सरसों, चना, गेहूं उगाकर जीवन यापन करते हैं। लेकिन अब यह किसान फसल भी नहीं उगा सक रहे हैं। जब फसल नहीं होगी तो क्षेत्र में भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। इस बाबत भदईखाप जोरदाग गांव के किसानों ने बताया कि प्रदूषण के कारण अब हमलोगों के खेतों में फसल उगना सम्भव नहीं है। अगर कंपनियां हमलोगों की समस्या का निदान नहीं करती है तो हमलोग विवश होकर कोयला कम्पनियों के विरुद्ध आंदोलन करेंगे। वही ट्रांसपोर्टिंग होने से पहले एनटीपीसी का अधिकारी द्वारा किसानों को आश्वासन दिया गया था कि जहां तक क्षतिपूर्ति होगी वहां तक भरपाई किया जाएगा, पर ऐसा एनटीपीसी का अधिकारी द्वारा नहीं किया जा रहा है।

## भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद ने कमल खिलाने की बगोदर वासियों से की अपील

**हजारीबाग :** हजारीबाग मे मतदान संपन्न होने के बाद लगातर बगोदर, मांडू व रामगढ़ के कई इलाकों में जनसंपर्क कर एनडीए व एनडीए गठबंधन के प्रत्याशी के लिए वोट मांगा। बगोदर विधानसभा क्षेत्र के बरांय, नउवाडीह, इस्लामपूर, बगोदर, सरिया, नगर केशवारी, सहित दर्जनों गाँव में रोड शो के माध्यम से बगोदर के भाजपा प्रत्याशी नागेंन्द्र महतों के पक्ष मे मतदान मांगा। एश्ट के क्रम संख्या 1 पर कमल निशान पर बटन दबाकर नागेन्द्र महतो को विजयी बनाएं। प्रदीप प्रसाद ने कहा कि लाल झंडा को उखडा फेकनें का बगोदर के जनता ने मन बना लिया है। श्री प्रसाद ने कहा कि इस बार बगोदर विधानसभा में बदलाव का बयार है।

## पूर्ववर्ती छात्रा तनु कुमारी ने प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की नेट परीक्षा

**बरही :** बरही प्रखण्ड की उत्क्रमित उच्च विद्यालय खोड़ाहर की पूर्ववर्ती छात्रा तनु कुमारी ने प्रथम प्रयास में देश की प्रतिष्ठित परीक्षा यूजीसी नेट में सफलता हासिल की है। तनु कुमारी ने मैट्रिक परीक्षा उत्क्रमित उच्च विद्यालय खोड़ाहर, प्लस टू की परीक्षा प्लस टू उच्च विद्यालय बरही, स्नातक परीक्षा राम नारायण यादव मेमोरियल डिग्री कालेज बरही व हिंदी में स्नातक विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग से किया। तनु को इस सफलता के लिए उत्क्रमित उच्च विद्यालय खोड़ाहर में सम्मानित किया गया। हिंदी के शिक्षक सह विद्यालय के प्रभारी प्रधानध्यापक डॉ सुनील यादव ने कहा कि तनु आरम्भिक दौर में ही पढ़ाई के प्रति सचेत रही है। उसने अपनी सफलता से यह साबित किया है कि आप गांव में रहकर मेहनत से पढ़ाई कर बड़ी सफलता अर्जित कर सकते हैं। तनु के पिता उमेश सिंह माता रेखा देवी सभी अभिभावकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं जो अपनी बच्चियों को उच्च शिक्षा नही दे पाते। तनु ने अपने सम्बोधन में अपनी पढ़ाई की रणनीति पर चर्चा किया। साथ ही प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक जिन गुरुजनों का सहयोग रहा, सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।कार्यक्रम में तनु के पिता उमेश सिंह, विद्यालय के अध्यक्ष हरिताभ कुमार, वरीय शिक्षक देवेंद्र कुमार, पूनम मुर्मू, सुधा रश्मि, रश्मि टोप्पो, फैयाज आलम, विजय कुमारदास, विक्रम प्रजापति, दिलेश्वर प्रसाद, रश्मि द्विवेदी, किरण देवी, संजू देवी, धीरेन्द्र कुमार उपस्थित रहे।

## छतरपुर में विहंगम योग के मेगा रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

**पलामू :** छतरपुर विहंगम योग संस्थान द्वारा सद्गुरु पद उत्तराधिकारी सुपूज्य संत प्रवर विज्ञान देव जी महाराज के पावन जन्मोत्सव के अवसर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 16 नवम्बर दिन शनिवार को विश्वव्यापी रक्तदान की कड़ी में विहंगम योग संतसमाज ने छतरपुर के जपला रोड स्थित वीणा लॉज में डॉक्टर सत्यनारायण प्रसाद के सत्यम क्लिनिक संस्थान में 20 यूनिट रक्तदान कर मानवता के प्रति उत्कृष्ट कार्य किया गया। विहंगम योग संतसमाज की ओर से दी गयी जानकारी में कहा गया है कि यह पवित्र और उत्कृष्ट कार्य है। विहंगम उत्तराधिकारी सुपूज्य संत प्रवर श्री विज्ञान देव जी महाराज की जन्म जयंती के अवसर पर यह कार्य आयोजित हुआ। इस अवसर पर संत समाज संस्थान के पलामू जिला के सह- संयोजक महेंद्र यादव, झा०प्रदेश के युवा प्रभारी अजय कुमार यादव, मनोहर यादव, पवन कुमार गुप्ता,श्यामलाल कुमार,अरुण कुमार यादव रमेश सिंह, मुन्ना यादव,राजेश सिंह,हरि ओम प्रकाश गुप्ता,सुजीत कुमार,प्रभु प्रसाद,सुधीर प्रजापति, सुधीर कुमार यादव,शिवनारायण जायसवाल,अमरेंद्र कुमार,मंटू राज,उपेंद्र राम,रिंकू देवी, सहित संस्थान के अन्य गुरु भाई बहनों ने रक्तदान कर अहम योगदान दिया।

# घुसपैठियों को पनाह देकर झारखंड के लोगों का रोजगार छीन रही हेमन्त सरकार : संजय सेठ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने सोमवार को खिजरी विधानसभा के ओरमांझी के हरिजन टोला, बसंत विहार, आनंदी, तुजु, हजाम, सौदाग में जनसंपर्क अभियान चलाया। उन्होंने लोगों से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार रामकुमार पाहन को कमल निशान पर वोट देकर खिजरी विधानसभा के विकास के लिए मत देने की अपील की। उन्होंने कहा कि आगामी 20 तारीख को अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। इस मौके पर केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति करती है तथा देश को बांटना चाहती है। हेमंत सरकार ने युवाओं के साथ धोखा किया है। कांग्रेस प्रभारी घुसपैठियों को 450 रुपये में सिलेंडर देने की बात कर रहे हैं। हेमंत सोरेन को बताना चाहिए कि कांग्रेस सही है या हेमंत। उन्होंने कहा कि घुसपैठियों को पनाह देकर अपनी असलियत छुपाना चाह रहे हैं। हेमंत सरकार घुसपैठियों को पनाह देकर यहां के लोगों के रोजगार को छीन रही है। बांग्लादेशी मजदूर झारखंड में आकर बस रहे हैं और यहां के मजदूरों का हक मारा जा रहा है। अब समय आ गया है झारखंड में रोटी,बेटी और माटी को बचाने का। उन्होंने कहा कि हर तरफ परिवर्तन की लहर है। पिछले पांच साल में झामुमो और कांग्रेस की सरकार ने जो भ्रष्टाचार किए हैं, बेरोजगारों पर जो अत्याचार किए हैं, महिला उत्पीड़न और प्रताड़ना पर जो चुप्पी साधी है। इन सबका जवाब इस चुनाव में देने के लिए जनता तैयार है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने झारखंड को हमेशा से विशेष स्नेह दिया है। पांच साल हेमंत सोरेन की सरकार के बावजूद प्रधानमंत्री ने झोलियां भर–भर के झारखंड के विकास के लिए योजनाएं दी, परंतु दुर्भाग्य है कि इस भ्रष्ट सरकार ने जानबूझकर मोदी सरकार की योजनाओं को राज्य में सफल नहीं होने दिया। मोदी सरकार की योजनाएं राज्य में सफल हो, उसके लिए डबल इंजन की सरकार जरूरी है ताकि झारखंड के विकास को और बेहतर गति मिल सके। महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित हो, भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति हो, युवाओं को रोजगार मिले, भाजपा इसके लिए दृढ़ संकल्पित है और भाजपा के साथ पूरे राज्य की जनता खड़ी है। उन्होंने कहा कि झारखंड के परिवर्तन के लिए 20 तारीख को खिजरी विधानसभा में अपने मतदान का प्रयोग कर रामकुमार पाहन को विजय बनाएं। इस अवसर पर ओरमांझी मंडल अध्यक्ष दिलीप मेहता, नामकुम के मंडल अध्यक्ष अशोक मुंडा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

## एक नजर

### रांची में थमा दूसरे चरण के चुनाव प्रचार का शोर

**रांची :** झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान 20 नवंबर को होने वाला है। इसे लेकर आज शाम पांच बजे से चुनाव प्रचार थम गया। झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में 12 जिलों के 38 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होना है। इसकी मतगणना 23 नवंबर होगी। आज जिले के तीनों विधानसभा सीटों गोड्डा, पोड़ैयाहाट व महागामा विस के चुनाव प्रचार–प्रसार का शोर थम गया। सोमवार शाम पांच बजे तक ही तीनों विस के प्रत्याशी अपने पक्ष में चुनाव प्रचार प्रसार के लिए आयोग से अनुमति थी। हालांकि इसके बाद भी प्रत्याशी जनता से संपर्क करने के लिए डोर–टू–डोर या फिर बगैर भोंपू का प्रचार–प्रसार कर सकेंगे।

### निलंबित इंजीनियर इन चीफ वीरेंद्र राम को सुप्रीम कोर्ट से मिली बेल

**रांची :** करीब 21 महीनों से जेल में बंद ग्रामीण विकास विभाग के निलंबित चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने वीरेंद्र राम की जमानत याचिका स्वीकार करते हुए उसे बेल दे दी है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अभय एस ओका की बेंच में वीरेंद्र राम की बेल पर सुनवाई हुई। बता दें कि ईडी ने पिछले वर्ष 22 फरवरी को आय से अधिक संपत्ति मामले में इंजीनियर वीरेंद्र राम को गिरफ्तार किया था। इससे एक दिन पहले 21 फरवरी को ईडी ने पूर्व चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम के 24 ठिकानों पर छापेमारी थी। छापेमारी के दौरान ईडी ने लगभग डेढ़ करोड़ के जेवरात सहित देश के कई शहरों में करोड़ों के निवेश से जुड़े दस्तावेज बरामद किये थे।

### 20 नवंबर को रांची में रहेगा ट्रैफिक में बदलाव

**रांची :** रांची में 20 नवंबर को पंडरा स्ट्रांग रूम की ओर सभी प्रकार के वाहनों का प्रवेश बंद कर दिया जायेगा। यह जानकारी ट्रैफिक एसपी ने सोमवार को दी। उन्होंने बताया कि पिस्का मोड़ और तिलता चौक की ओर से आने वाले वाहनों का प्रवेश पंडरा की ओर शाम पांच बजे के बाद बंद कर दिया जायेगा। वाहनों का प्रवेश रात के दस बजे तक बंद रहेगा। इस दौरान पिस्कामोड़ से काठीटांड़ रातू जाने वाले वाहन पिस्का मोड़ से कटहल मोड़ होते हुए न्यू मार्केट चौक, कांके रोड, रिंग रोड होते हुए अपने गंतव्य तक जा सकेंगे। तिलता चौक रातू से पिस्का मोड़ आने वाले वाहन भी रिंग रोड से बांयें व दांये मुड़ कर अपने गंतव्य तक जा सकेंगे। 20 नवंबर को शाम पांच बजे से रात नौ बजे तक आपातकालीन सेवा वाले वाहन और एंबुलेंस तिलता चौक से पिस्का मोड़ की ओर प्रवेश न कर रिंग रोड के बांयें और दाहिने मुड़ कर अपने गंतव्य तक जा सकेंगे। इसके अलावा आवश्यकतानुसार,अन्य मार्गो को थोड़ी देर के लिए बंद या डायवर्ट किया जा सकता है।

### हिंदू अस्मिता के साथ अब और खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं : बाबूलाल

**रांची :** भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सोमवार को हेमंत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा है कि झारखंड में सवाल पूछना मना है। अगर झारखंड सरकार से सवाल पूछते हैं तो अपनी हड्डी तोड़वाने के लिए तैयार रहें। यहां सवाल पूछने पर पुलिस छह लाठी मारती है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार की शह पर हो रही गौ हत्या और हमारे पारंपरिक मूल्यों को नष्ट करने की साजिशें अब और नहीं सहन की जा सकती। ऐसे कृत्य सिर्फ समाज में अशांति फैलाने के उद्देश्य से किए जा रहे हैं। सभ्य समाज में इस तरह के घृणित कृत्यों की कोई जगह नहीं हो सकती।

# कांग्रेस की हमेशा से एक ही नीति फूट डालो और राज करो : डॉ गौरव वल्लभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** भाजपा के राष्ट्रीय नेता एंव प्रखर वक्ता डॉ. गौरव वल्लभ एंव केंद्रीय राज्य रक्षा मंत्री संजय सेठ ने भाजपा मीडिया सेंटर, रांची में प्रेस वार्ता की। इस दौरान प्रदेश भाजपा मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, प्रदेश प्रवक्ता अजय शाह, राफिया नाज, प्रदेश मीडिया सह प्रभारी अशोक बड़ाइक और तारिक इमरान मौजूद रहे। डॉ. वल्लभ ने राहुल गांधी को आड़े हाथों लिया, उन्होंने कहा कि राहुल गांधी सबसे पहले देश की जनता को ये बताएं की उनकी जाति और धर्म क्या है? उन्होंने कहा कि, देश को जातियों में बांटने वाले राहुल गांधी ने आज झारखंड की धरती पर एक भी ऐसा शब्द नहीं बोला जिससे झारखंड राज्य विकसित राज्य बनें। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि राहुल गांधी ने 4 दशकों से बाबा साहब अंबेडकर को भारत रत्न से क्यों नहीं नवाजा? क्यों आखिर कांग्रेस ने 1947 से लेकर 1989 तक बाबा साहब की अनदेखी की, इसका जवाब दें कांग्रेस? उनके छाया चित्र को संसद में लगे भी नहीं दिया गया था। जिसे बाद में गैर कांग्रेसी सरकार ने लगवाया। कांग्रेस ने हमेशा दलित समाज के हर वर्ग का अपना किया है। उन्होंने कहा कि, जब संथाल समाज की आदिवासी बेटी राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रही थी, तब क्यों उनका विरोध किया गया? ये कांग्रेस और उनके सहयोगी दलों की आदिवासी विरोधी मानसिकता को दर्शाता है। उनके खिलाफ असंसदीय भाषा का प्रयोग किया गया। कांग्रेस की दलितों और आदिवासियों के प्रति जो मानसिकता है वो अब उजागर हो चुकी है। कांग्रेस ने सीताराम केसरी जी का शव अपने मुख्यालय में नहीं आने दिया, क्योंकि वे पिछड़े वर्ग से थे। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि, हम मुस्लिमों को आरक्षण देंगे। डॉ. वल्लभ ने राहुल गांधी को चेतावनी देते हुए कहा कि, हम दलित–आदिवासी चार प्रतिशत कम करके आरक्षण मुस्लिमों को नहीं देने देंगे। डॉ. वल्लभ ने कहा, राहुल गांधी अमेरिका में जाकर आरक्षण के विरोध की बात करते हैं। राहुल गांधी ने कभी ये नहीं पूछा की जो हेमंत सोरेन ने युवा से प्रतिवर्ष पांच लाख नौकरियों का वादा किया था।

# झारखंड की जनता भ्रष्ट सरकार के खिलाफ करेगी मतदान : सुदेश महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** ऑल झारखण्ड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू) के अध्यक्ष एवं सिल्ली विधानसभा से एनडीए उम्मीदवार सुदेश महतो ने कहा कि भ्रष्ट सरकार के राज में अराजकता का बोलबाला है। जनता बदलाव के लिए तैयार है। पांच सालों से जनता सरकार की कुव्यवस्था और कुप्रबंधन की मार झेल रही है। हमने अपने बुजुर्गों को अपने हक के पेंशन के लिए रोते देखा है। लोग अपने छोटे से छोटे काम के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगा रहे हैं। भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी ने जनता को गहरी चोट पहुंचाई है। इस व्यवस्था को बदलने और स्वराज से सुशासन को स्थापित करने के लिए भी वचनबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि गांवों के विकास के बिना राज्य का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। गांव के विकास के निर्णय गांव के लोग ही लेंगे। इसके लिए हम ग्राम पंचायतों को पर्याप्त वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियां देकर मजबूत करेंगे। यह चुनाव झारखंड की अस्मिता और भविष्य के लिए अहम है। महतो ने विधानसभा स्तरीय बाइक रैली के दौरान बोल रहे थे। इस रैली की शुरुआत रामपुर से हुई और विभिन्न गांवों से होते हुए मुरी में समाप्त हुई, इसमें हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। जनता ने मौजूदा सरकार को राज्य की बेहतरी और विकास के लिए अपना मत दिया था लेकिन इस सरकार ने झारखंड को विनाश की ओर धकेल दिया है।

# पुरानी रांची में जतरा लगाने पर रोक, आदिवासी समाज में आक्रोश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** हर साल पुरानी रांची में आदिवासी समुदाय सरना स्थल मैदान में डुमबु जतरा का आयोजन करता आया है। लेकिन इस बार विशेष समुदाय द्वारा इस जतरा को रोकने का प्रयास किया गया। इससे आदिवासी समाज में आक्रोश फैल गया है। यह तनाव आदिवासी समुदाय के पारंपरिक जतरा को रोकने के प्रयास के बाद उत्पन्न हुआ है। जतरा को रोकने की खबर मिलते ही आसपास के सैकड़ों आदिवासी जतरा स्थल पर पहुंच गए। आदिवासियों ने कहा कि हर साल आदिवासी धर्म संस्कृति और परंपरा का निर्वाह इस जतरा स्थल पर होते आया है और यहां पर सैकड़ों खोड़हा जतरा का गवाह भी बना है। लेकिन इस साल विशेष समुदाय ने जतरा को रोकने का प्रयास किया। इसके बाद दोनों समुदाय के बीच तनाव की स्थित बनने लगी। दोनों समुदाय के बीच तनाव को कम करने के लिए पुलिस भी मौके पर पहुंची है। पुलिस ने दोनों समुदायों को समझाने का प्रयास किया है और शांति बनाए रखने की अपील की है।

# मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के० रवि कुमार ने कहा है कि दूसरे चरण के मतदान के लिए घोषित साइलेंट पीरियड में एग्जिट पोल, प्रत्याशियों के प्रचार से जुड़ा टीवी चैनल्स पर विज्ञापन आदि पर मनाही है। साइलेंट पीरियड में केंद्रीय निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुपालन की सभी प्रत्याशियों, राजनीतिक दलों और उनके कार्यकर्ताओं, पोलिंग एजेंट से अपेक्षा है। वह सोमवार को सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ निर्वाचन सदन में बैठक कर रहे थे। कुमार ने कहा कि 20 नवंबर की संध्या पांच बजे से पूर्व सभी प्रत्याशी मतगणना केंद्र के लिए काउंटिंग एजेंट का ब्योरा संबंधित आरओ को उपलब्ध करा दें। साथ ही सभी प्रत्याशी और राजनीतिक दल अपने काउंटिंग एजेंट को निर्वाचन आयोग जरिये मतगणना केंद्रों के लिए जारी दिशा-निर्देशों से अवगत करा दें। कुमार ने कहा कि मतगणना केंद्रों पर काउंटिंग एजेंट के जरिये किसी तरह के इलेक्ट्रानिक डिवाइस जैसे मोबाईल, कैलकुलेटर, डिजिटल वॉच आदि अंदर ले जाने की मनाही है। काउंटिंग एजेंट को अपने साथ केवल एक पेन एवं एक नोटपैड मतगणना हॉल के अंदर ले जाने की अनुमति है। एक बार मतदान केंद्र की बैरिकेटिंग के बाहर आने के उपरांत उन्हें दोबारा अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रत्याशी अपने काउंटिंग एजेंट के जलपान की व्यवस्था जिला निर्वाचन पदाधिकारी से अनुमति के अनुसार मतगणना हॉल के बाहर कर सकते हैं।

# नालंदा विश्वविद्यालय ने ज्ञान की ज्योति से पूरे विश्व को आलोकित किया : राज्यपाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने नालंदा विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक और गौरवमयी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय ज्ञान की ज्योति से प्राचीन भारत में पूरे विश्व को आलोकित करता था। यहां से प्रसारित ज्ञान की किरणें आज भी हमारे समाज और संस्कृति को प्रेरित करती हैं। वह उक्त बातें नालंदा विश्वविद्यालय,राजगीर में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की ओर से आयोजित 'नालन्दा ज्ञानकुम्भ' के समापन समारोह में सोमवार को सम्बोधित करते हुए कही। इस अवसर पर उन्होंने 'विकसित भारत 2047' के संदर्भ में 'भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय भाषाओं की भूमिका' पर अपने विचार व्यक्त किए। राज्यपाल गंगवार ने भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने सदियों से न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को प्रोत्साहित किया है। वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र और योग जैसी शास्त्रीय धरोहरें आज भी हमारे आत्मिक और बौद्धिक विकास में सहायक हैं। इस ज्ञान परंपरा ने भारत की शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक मूल्यों को संजीवनी दी है, जो समाज के हर स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। राज्यपाल ने भारतीय भाषाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक पहचान की प्रतीक हैं। संस्कृत, हिंदी, तमिल, कन्नड़ जैसी भारतीय भाषाओं में हमारे प्राचीन ग्रंथ और साहित्य समाहित हैं, जो हमारी सोच और परंपराओं को जीवित रखते हैं। मातृभाषा में शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास को बढ़ाती है और उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा मातृभाषा में शिक्षा को प्राथमिकता देना छात्रों को उनकी जड़ों से जोड़ने और आत्मनिर्भरता के साथ आधुनिक शिक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण कदम है। राज्यपाल ने साइबर सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में साइबर अपराध एक गंभीर चुनौती बन चुका है। यह व्यक्तियों की उनकी जमा पूंजी को जोखिम में डालता है। इस चुनौती से निपटने के लिए साइबर सुरक्षा के उपायों को गहन विचार करना चाहिए।

## संक्षिप्त खबरें

### उप प्रशासक ने की बैठक, दिए कई आवश्यक निर्देश

**रांची :** प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) से संबंधित कार्यों को गति देने और प्रगति की समीक्षा करने के लिए उप प्रशासक गौतम प्रसाद साहू ने सोमवार को पीएमएवाई शाखा के पदाधिकारियों और कर्मियों के साथ बैठक की। बैठक में उप प्रशासक के जरिये पीएमएवाई शाखा से संबंधित विभिन्न कार्यों की बिन्दुवार समीक्षा की गई। साथ ही कई आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए। बैठक में बताया गया कि लगभग 514 ऐसे लाभुक चिन्हित किए गए हैं जो प्रथम किस्त लेने के बाद भी निर्माण कार्य नहीं कर रहे हैं। इसके साथ ही उक्त लाभुकों को पूर्व में भी तीन बार नोटिस निर्गत की जा चुकी है। लेकिन आवास में अपेक्षित प्रगति नहीं दिखाई दी है। इसके आलोक में उप प्रशासक ने उन सभी लाभुकों पर सर्टिफिकेट फेस करने का निर्देश दिया। इसके अलावा बैठक में सामुदायिक संगठनकर्ताओं और पीएमसी के प्रतिनिधियों को जियो टैगिंग के कार्य के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए, जिसके साथ–साथ उनके जरिये लाभुकों को आवास निर्माण के लिए जागरुक भी किया जायेगा। मौके पर सहायक प्रशासक चंद्रदीप कुमार, नगर प्रबंधक, सामुदायिक संगठनकर्ता, पीएमसी के प्रतिनिधि और पीएमएवाई शाखा के अन्य कर्मी उपस्थित थे।

### बाबूलाल के लिए पिंकू लाल ने मांगे वोट

**रांची :** शाहदेव युवा संगठन के केन्द्रीय अध्यक्ष लाल धर्म राजनाथ शाहदेव पिंकू लाल और भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता कुणाल नाथ शाहदेव ने राजधनवार के भाजपा प्रत्याशी बाबूलाल मरांडी के पक्ष में धुंआधार प्रचार किया एवं वोट मांगे। शाहदेव ने कहा कि झारखंड के विकास के लिए बाबूलाल का प्रचंड बहुमत से चुनाव जीतना जरूरी है।

### सदर अनुमंडल क्षेत्र में निषेधाज्ञा जारी

**रांची :** विधानसभा चुनाव को 20 नवंबर को प्रातः 07 बजे से अपराह्न 05 बजे तक रॉंची सदर अनुमंडल के दो विधानसभा क्षेत्र सिल्ली एवं खिजरी में मतदान होगा, जिसे लेकर अनुमंडल क्षेत्र में निषेधाज्ञा जारी की गई है। यह निषेधाज्ञा 18 नवंबर के सायं पांच बजे से 20 नवंबर के पूर्वाह्न 10:00 बजे तक लागू रहेगा। विधि–व्यवस्था संधारण को लेकर सदर के अनुमण्डल दंडाधिकारी ने बताया कि इस दौरानप पांच या पांच से अधिक व्यक्तियों को उक्त क्षेत्र के मतदान केन्द्र भवनों के 200 मीटर की परिधि में जमा होना या चलना मना रहेगा। सभी प्रकार के चुनाव संबंधी राजनैतिक सभा, जुलूस व रैली आदि एवं प्रचार–प्रसार प्रतिबंधित रहेगा। 05 व्यक्ति तक के दल में घर–घर जाकर चुनावी प्रचार–प्रसार पर रोक नहीं है। मतदान समाप्ति के 48 घंटा पूर्व से मतदान कार्य के शांतिपूर्ण समाप्ति तक किसी भी प्रकार के शराब की बिक्री या सेवन पूर्ण रूपेण प्रतिबंधित करते हुए ड्राई डे घेषित रहेगा। जारी निषेधाज्ञा अवधि में ध्वनि विस्तारक यंत्र का व्यवहार पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। मतदान के 48 घंटा पूर्व से मतदान केन्द्र के 200 मीटर की परिधि में किसी भी राजनैतिक पार्टी का झण्डा, बैनर, पोस्टर, पम्पलेट इत्यादि लगा नहीं रहेगा। सदर अनुमंडल अंतर्गत दो विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों 61–सिल्ली एवं 62–खिजरी (अ०ज०जा०) के वैसे पार्टी वर्कर्स, कार्यकर्ता या प्रचार–प्रसार करने वाले व्यक्ति जिनका नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं है तथा बाहर से आये हैं। निषेधाज्ञा जारी होते ही सदर अनुमंडल अंतर्गत दोनों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों को छोड़ देंगे। उन्होंने बताया कि मतदान केन्द्र में कोई भी मीडियाकर्मी प्रवेश कर विडियोग्राफी व फोटोग्राफी न करे, ताकि मतदान की गोपनीयता भंग न हो। बिना अनुमति किसी प्रकार का सार्वजनिक बैठक, धरना, प्रदर्शन, सभा का आयोजन, ध्वनि विस्तारक यंत्र आदि का व्यवहार नहीं कर सकते हैं। मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारा आदि को छोड़कर। किसी प्रकार का हरवे हथियार जैसे लाठी–डंडा, तीर–धनुष, गड़ासा, भाला आदि लेकर रोड पर निकलना या चलना (सरकारी कार्य में लगे पदाधिकारियों व कर्मचारियों को छोड़कर)। किसी प्रकार अग्नेयास्त्र, अस्त्र–शस्त्र, विस्फोटक पदार्थ आदि लेकर चलना या निकलना (आरक्षी बल एवं प्राधिकृत व्यक्तियों को छोड़कर)। जारी निषेधाज्ञा की अवधि में मीडियाकर्मी किसी भी प्रकार का एग्जिट पोल एवं रिजल्ट प्रकाशित नहीं कर सकते। जारी निषेधाज्ञा की अवधि में प्रत्याशी, समर्थक, राजनैतिक दल का प्रेस–कॉन्फ्रेंस व इंटरव्यू प्रतिबंधित रहेगा।

### रांची के सदर अस्पताल में शुरू हुआ कंबल बैंक, जरूरतमंदों को ठंड से मिलेगी राहत

**रांची :** रोटरी क्लब रांची के सहयोग से सदर अस्पताल में एक नया कंबल बैंक शुरू किया गया है, जिसका उद्देश्य सर्दियों में गरीब और असहाय लोगों को ठंड से राहत प्रदान करना है। इस पहल का उद्घाटन रोटरी क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बिपिन चाचन, उनकी पत्नी शिल्पी चाचन, रोटरी क्लब रांची के प्रेसिडेंट गौरव बागरॉय, समाजसेवी ज्योति शर्मा और सदर अस्पताल के डीएस डॉ. बिमलेश सिंह एवं डॉ. अखिलेश झा ने किया। 200 कंबल रोटरी क्लब रांची और 100 कंबल ज्योति शर्मा ने दिया। इस कंबल बैंक के तहत सदर अस्पताल में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों और आसपास के गरीबों को मुफ्त में कंबल प्रदान किए जाएंगे। रोटरी क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बिपिन चाचन ने इस पहल को समाज की जिम्मेदारी को निभाने वाला कदम बताया और कहा कि इस ठंड में असहाय लोग अक्सर ठंड से जूझते हैं। हम उनकी मदद करना चाहते हैं। सदर अस्पताल के डीएस डॉ. बिमलेश सिंह ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह मरीजों और उनके परिवारों के लिए एक बड़ी राहत होगी। समाजसेवी ज्योति शर्मा ने भी इस पहल को समाज में संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देने वाला बताया। कंबल बैंक अब सदर अस्पताल परिसर में कार्यरत रहेगा और सर्दी के मौसम में जरूरतमंदों को राहत प्रदान करेगा। रोटरी क्लब रांची के प्रेसिडेंट गौरव बागरॉय ने बताया की ये पहल से बहुत मरीज के परिजन को ठंड से लाभ मिलेगा। कार्यक्रम में रोटरी क्लब की ख्याति मुंजाल, रवींद्र चड्ढा, अमित अग्रवाल , आदित्य मल्होत्रा गिरीश अग्रवाल सहित सदर अस्पताल के कई लोग भी मौजूद थे।

**एक नजर**

## मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय रामरुद्र में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का हुआ आयोजन

**बोकारो** : रामरुद्र मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय चास, बोकारो में आपका वोट आपकी शक्ति' पर आधारित अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के अभिभावकों के साथ- साथ सभी छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकगणों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय के प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार के ओजस्वी भाषण के साथ हुई। मतदान के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के नागरिक होने के नाते यह हमारा प्रथम कर्तव्य है कि हम निश्चित रूप से अपने मतदान का प्रयोग करें। विद्यालय के प्रबंधक महोदय श्री महेंद्र प्रसाद सिंह ने भी अपने भाषण में विशेष रूप से महिला मतदाताओं की प्रशंसा करते हुए वोट देने के लिए उनकी कर्तव्यपरायणता के लिए आभार प्रकट करते हुए कहा कि उनकी सहभागिता से मतदान का प्रतिशत निश्चित ही बढ़ता है क्योंकि वे अपने साथ - साथ घर व मुहल्ले के अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करती है।' यह सफल लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। आज के इस कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण मतदान जागरुकता के लिए विद्यार्थियों द्वारा कविता पाठ रहा। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने कविता - पाठ में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विद्यालय की छात्रा निशा महतो द्वारा प्रस्तुत कविता- हम सभी मतदान करेंगे, खुशी कुमारी की कविता - करो तुम मतदान, नशरीन नाज द्वारा प्रस्तुत कविता - तू वोट कर तू वोट कर. सभी में उत्साह का संचार कर दिया। इसके अलावे सायना तबस्सुम, शुभिका मिश्रा, गोरख मुखर्जी, शान- बनर्जी आस्ताना खातून, आस्था चक्रवर्ती, गौरव पाठक, शनि शमी आदि के द्वारा प्रस्तुत कविता भी प्रशंसनीय रहे।

## भाजपा प्रत्याशी बिरंची नारायण के रोड शो में पहुंचे केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान

**बोकारो** : चुनाव प्रचार के आखिरी दिन जनआशिर्वाद अभियान के तहत आज बोकारो विधानसभा के भाजपा कार्यकताओं ने बोकारो विधानसभा के सेक्टर 5 पुस्तकालय मैदान से रोड शो निकाल कर जनता से समर्थन की अपील की। इस रोड शो में मुख्य रूप से एनडीए प्रत्याशी बिरंची नारायण उपस्थित रहे। रोड शो सेक्टर 5,6,8,9 बसंती मोड़, सेक्टर 4 ,3,2,1,12 होते हुए एयरपोर्ट पहुँचा ।

बोकारो एयरपोर्ट पर केंद्रीय कृषि मंत्री सह झारखंड के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान का भव्य स्वागत व अभिनंदन करते हुए रोड शो चेक पोस्ट होते हुए योधडीह मोड़ पहुँचा। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एनडीए प्रत्याशी बिरंची नारायण के पक्ष में 20 नवम्बर को मतदान करने का आग्रह किया। उन्होंने ने कहा कि हेमंत सरकार पर वादा खिलाफी, झूठे वादे, लुट, भय, अत्याचार से अविश्वास से आम जनता में रोष है। जिस वादे के साथ 2019 में सरकार बनी पांच साल पूरे हो गए मगर कोई भी जनता से किया गया वादा पूरा न कर सके। दिन प्रतिदिन प्रखंड हो या जिला या प्रदेश भ्रष्टाचार चरम सीमा पर। संतरी से मंत्री तक जेल जा चुके हैं। कुछ मंत्री अभी जेल में तो कोई आईएस अधिकारी जेल में। झारखंड की खनिजों की लूट मची जिसमे उनका परिवार के लोग भी शामिल हैं। बोकारो विधानसभा के जनता ने अपना मन बना चुके है कि राज्य में फिर से भाजपा की सरकार आए और जनहित कार्यों का काम पुनः शुरू हो ताकि राज्य का सर्वाधिक विकास हो और जरूरत मंदो को उनका हक अधिकार मिल सके।

# बीएसएल में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो** : आगामी 20 नवम्बर को बोकारो में विधानसभा चुनाव के दिन बीएसएल कर्मियों को अपने मताधिकार का प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए बीएसएल द्वारा विगत दिनों प्लांट में लगातार जन-जागरूकता अभियान चलाया गया। बीएसएल के निदेशक प्रभारी श्री बी के तिवारी ने भी सभी कर्मियों और उनके परिवार के अन्य मतदाताओं को लोक तंत्र के इस महापर्व में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने की अपील की है, साथ ही बोकारो में इस बार वोटिंग प्रतिशत में बढ़ोत्तरी का एक नया कीर्तिमान बनाने का आह्वान किया है। विगत लगभग एक माह के दौरान बीएसएल में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान कर्मियों को मतदाता प्रतिज्ञा दिलाई गई और वोटिंग करने की अपील की गई। इसके अलावा जिला प्रशासन के सहयोग से संयंत्र के शॉप्स, सी ई डी, एस आई जी एस, ई सी इस, कॉन्ट्रैक्ट सेल, आर एंड आर, ट्रैफिक, ओजी एंड सीबीआरएस, आरएमएचपी, कोक ओवन, सिन्टर प्लांट, ब्लास्ट फर्नेस, एसएमएस -1 एंड 2, हॉट सर्टिप मिल, सीआरएम, आरजीबीएस, एचआरसीएफ सहित अन्य विभागों में मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बीएसएल ने टाउनशिप और प्लांट परिसर में पोस्टर और बैनर के माध्यम से भी मतदाता जागरूकता अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। प्लांट के विभिन्न प्रवेश द्वार पर लगातार माइकिंग द्वारा कर्मियों से अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील की जा रही है। बीएसएल कर्मियों सहित सभी मतदाताओं से पुनः अपील है कि 20 नवम्बर को अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

## बोकारो आरपीएफ ने खोया हुआ हैंड पर्स सकुशल यात्री को सौंपा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो** : आरपीएफ को सूचना मिली कि टाटा वंदे भारत एक्सप्रेस में काले रंग का एक हैंड पर्स यात्रा कर रहे श्रीनिवास नामक यात्री का सामान कोच संख्या सी 3 सीट संख्या 5 पे छूट गया है सूचना प्राप्त होते ही ड्यूटी पर तैनात एसआई मीना कुमारी और एलसी शिवानी तुरंत मौके पर पहुंचे छूते हुए काले रंग का हैंड पर्स बरामद कर आरपीएफ पोस्ट में जमा कर दिया गया। मालूम हो कि श्रीनिवास शर्मा आदित्यपुर जिला सरायकेला के निवासी है। 16/11/24 को टाटा वंदे भारत ट्रेन संख्या 20893 से टाटा से पटना सफर कर रहे थे इसी क्रम में उनका काले रंग का हेड पर्स जिसका मूल्य ?2500 बताया गया है वह कोच संख्या सी 3 सीट संख्या 5 में छूट गया था। उन्होंने तुरंत इसकी सूचना फोन के माध्यम से आरपीएफ को दी। सूचना मिलते ही बोकारो आफ द्वारा सामान की बारामती कर यात्री को इसकी सूचना कर दी तत्पश्चात यात्री श्रीनिवासन दूसरे दिन आरपीएफ सहायक बूथ पहुंचे। आरपीएफ द्वारा बरामद की गई सामान का सत्यापन और पहचान के बाद सकुशल यात्री को सौंप दिया गया इसके बाद यात्री ने बोकारो आरपीएफ को धन्यवाद दिया।

## मतदान हर नागरिक का कर्तव्य है मतदान जरूर करें : श्रीयम त्रिपाठी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

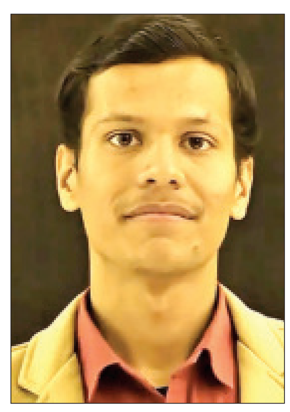

**धनबाद** : बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबाद के पूर्व छात्र नेता श्रीयम त्रिपाठी ने कहा कि झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 अंतर्गत होने वाली विधानसभा चुनाव में 20 नवंबर को धनबाद विधानसभा चुनाव का तिथि चुनाव आयोग के द्वारा निर्धारित किया गया है। इस चुनाव के महापर्व में धनबाद विधानसभा के हर एक मतदाता मतदान जरूर करें। मतदान का अधिकार भारत के संविधान के तहत मिले सभी मौलिक अधिकारों में से एक सबसे महत्वपूर्ण है। मतदान में मतदाता के प्रतिशत को बढ़ावा देने के लिए सभी पार्टी, संगठन, चुनाव आयोग तथा सहयोगी संस्था ने भी पूरा जोर शोर लगा दिया है। पूरे धनबाद वासियों को यह संकल्प लेना चाहिए कि उनके द्वारा हर हाल में शत प्रतिशत मतदान होगा। विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए झारखंड के युवा पीढ़ी से यह आग्रह करते हुए पूर्व छात्र नेता श्रीयम त्रिपाठी ने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। सभी वर्ग, समुदाय एवं प्रत्येक वयस्क नागरिकों को मतदान करना चाहिए।मतदान आपका अधिकार है, आप अपना एक मत समाज, राष्ट्र और देश की भलाई के लिए आवश्यक होता है। इससे हमारा लोकतंत्र मजबूत होता है। आपका एक सही मत से चुने हुए प्रतिनिधि आपके शहर या ग्रामीण क्षेत्रों को उन्नति प्रगतिशील, विकासशील एवं शिक्षा की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। इसके साथ ही हर मतदाता को यह ध्यान रखना चाहिए की 5 वर्षों में एक बार चुनाव होता है तो वोट डालने से पहले अपने देश, राज्य और समाज को उन्नति विकासशील बनाने वाले प्रतिनिधि का सही चुनाव करें। जिनके जीतने के बाद शिक्षा का स्तर बढ़ सके और हमारे युवा पीढ़ी को मदद मिले। हमारा संविधान हर उस शख्स को मत देने का अधिकार देता है जिसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक है। मतदान करना हमारा कर्तव्य है, इसके माध्यम से एक सही प्रतिनिधि हमारे बीच आते हैं जो हर छोटी बड़ी समस्या को लेकर सड़क से सदन तक लड़ते हैं। मतदान के साथ हर वह जिम्मेदार व्यक्ति का यह कर्तव्य बनता है कि वह प्रशासन का सहयोग करें।

## इंडिया महागठबंधन की ईकाई ने समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी सूरज महतो का किया समर्थन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**तेतुलमारी (धनबाद)**: बाघमारा विधानसभा क्षेत्र के विभन्नि जगहों से पहुंचे सैंकड़ों महिला-पुरूष एवं युवाओं ने इंडिया महागठबंधन की ईकाई समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी सूरज महतो को समर्थन दिया। रविवार, 17 नवंबर को प्रधान कार्यालय कांको पहुंचे उक्त लोगों ने श्री महतो को अपना समर्थन देते हुए कहा कि चुनावी प्रचार अपने अंतिम दौर पर है। हमने सभी प्रत्याशियों को समझने का प्रयास किया। हम लोगों ने पाया कि एक ने दस साल राज किया। लेकिन बाघमारा का कल्याण न हो सका। दूसरे के भाई ने अपने को गरीबों को बेटा बताते हुए पंद्राह साल बाघमारा पर राज किया। इन पंद्राह सालों में उसने क्षेत्र को कंगाल बना दिया। खुद तो अरबपति बन गए लेकिन यहां की जनता दिन प्रति दिन गरीब होते गए। अब खुद सांसद बन अपने बड़े भाई को बाघमारा की कुर्सी पर बैठाना चाह रहे हैं, ताकि उसकी लूट की दुकानदारी चलती रहे। सपा प्रत्याशी श्री महतो को समर्थन करने आए एक तीसरे प्रत्याशी का जिक्र भी किया और कहा कि वह तो अत्यंत ही खतरनाक है। उसके तो हांथ ही लोगों के खून से रंगे हुए हैं। इतने लोगों के कातिल को अपना सिरमौर कैसे बना सकते हैं। इस लिए हमलोगों ने अंतोगत्वा सूरज महतो को ही हर मामले में ठीक और फिट पाया। समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी महतो को भारी मतों से विजयी बनाकर हमलोग उन्हें विधानसभा भेजने का काम करेंगे। वहीं महतो ने समर्थन देने आए लोगों से वादा किया कि आप लोगों की उम्मीदों, आकांक्षाओं और अभिलाषा को किसी भी कीमत पर टूटने नहीं देंगे।

## एनडीए चुनाव हारा तो झारखंड निश्चित पश्चिम बंगाल बन जायेगा : हिमंत सरमा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारा** : विधानसभा चुनाव का दूसरे चरण के अंतिम दिन सोमवार को असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने चंदनकियारी के हुतुपातर में एक जनसभा को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने कांग्रेस नेताओं इरफान अंसारी और आलमगीर आलम पर तीखा हमला बोला । सरमा ने हिंदू समाज की एकता की ताकत को रेखांकित करते हुए कहा कि जब हिंदू एकजुट होते हैं, तो राम मंदिर जैसे ऐतिहासिक कार्य होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदू की ताकत के सामने बाबर भी हार गया था, तो अंसारी और आलम क्या कर पाएंगे। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि झारखंड का निर्माण घुसपैठियों के लिए नहीं, बल्कि राज्य के विकास के लिए हुआ था, जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कल्पना की थी। उन्होंने इस चुनाव को झारखंड की रोटी, माटी और बेटी को बचाने का चुनाव बताया । सरमा ने कहा कि झारखण्ड में अगर एनडीए चुनाव हार गया, तो यह पश्चिम बंगाल बन जायेगा, लेकिन जीतने से वाजपेयी के विकास के सपने को साकार किया जा सकेगा। उन्होंने चंदनकियारी से भाजपा नेता अमर कुमार बाउरी की सराहना की और कहा कि उनकी नेतृत्व क्षमता से क्षेत्र का विकास तय है।

# धनबाद में आज से ट्रैफिक रूट में बदलाव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**धनबाद** : झारखंड विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मंगलवार को धनबाद में ट्रैफिक रूट में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। यह बदलाव 20 नवंबर को होने वाले चुनाव के लिए ईवीएम डिस्पैच सेंटर की सुरक्षा व्यवस्था के तहत लागू किया गया है बता दें कि ये बदलाव 19 नवंबर सुबह आठ बजे से लेकर रात आठ बजे तक प्रभावी रहेंगे। इस दौरान वाहन चालकों को परेशानियों से बचने के लिए वैकल्पिक रास्तों का ध्यान रखना होगा।

**चंद्रशेखर आजाद चौक से बिनोद बिहारी महतो चौक तक नो एंट्री**

चंद्रशेखर आजाद चौक से बिनोद बिहारी महतो चौक तक किसी भी वाहन का प्रवेश निषेध रहेगा. इन क्षेत्रों में वाहन चंद्रशेखर आजाद चौक-सिटी सेंटर-मेमको मोड़-कुमीर्डीह चौक होते हुए अपने गंतव्य की ओर जा सकेंगे। विनोद बिहारी महतो चौक से पॉलिटेक्निक मोड़ की दिशा में रूट परिवर्तन

बिनोद बिहारी महतो चौक से पॉलिटेक्निक मोड़ की तरफ आने वाले सभी वाहनों का रूट बिनोद बिहारी महतो चौक- कुमीर्डीह चौक- मेमको मोड़- सिटी सेंटर होते हुए अपने गंतव्य की ओर जाएगा।

**गंतव्य के निकट होने पर विशेष अनुमति**

जिन लोगों के घर या प्रतिष्ठान चंद्रशेखर आजाद चौक से बिनोद बिहारी महतो चौक के बीच स्थित हैं, उन्हें उचित पहचान और जांच के बाद ही प्रवेश की अनुमति होगी. इसी प्रकार, बिनोद बिहारी महतो चौक से जिला स्कूल मोड़ तक के बीच के लोगों को भी विशेष अनुमति के बाद ही प्रवेश मिलेगा। पांडरपाला और मेमको मोड़ पर नो एंट्री पांडरपाला से राजकीय पॉलिटेक्निक की ओर जाने वाले रास्ते में नो एंट्री रहेगी। मेमको मोड़ से निरंकारी चौक की दिशा में भी नो एंट्री लागू रहेगी। यहां के निवासी उचित पहचान के बाद ही अपने घर या प्रतिष्ठान तक जा सकेंगे। यात्री बसों के लिए वैकल्पिक मार्ग शहरी क्षेत्रों में बसों का परिचालन अस्थायी बस स्टैंड बिनोद बिहारी चौक और शक्ति चौक से किया जाएगा। धनबाद-बोकारो रांची मार्ग से चलने वाली बसों का रूट करकेंद मोड़-राजू यादव स्मारक-सिजुआ नया मोड़- पांडेयडीह-तेतुलमारी थाना- शहीद शक्तिनाथ चौक-बिनोद बिहारी चौक से होकर होगा। सिंदरी-झरिया मार्ग से आने वाली बसें. इंदिरा चौक झरिया- कतरास मोड़- केंद्रुआ-करकेंद मोड़- रांची-बोकारो-धनबाद मार्ग-बिनोद बिहारी चौक से होकर चलेंगी. गोविंदपुर से आने वाली बसें धनबाद मोड़ (गोविंदपुर)- गोल बिल्डिंग-मेमको मोड़- कुमीर्डीह चौक-बिनोद बिहारी महतो चौक से होकर जाएंगी. यात्री और वाहन चालक से अनुरोध है कि 19 नवंबर को इन बदलावों के मद्देनजर अपने यात्रा कार्यक्रम में आवश्यक बदलाव करें और वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें। इससे उन्हें किसी भी प्रकार की असुविधा से बचने में मदद मिलेगी।

**संक्षिप्त खबरें**

## जिला जज ने किया सिविल कोर्ट में फीडिंग रूम का उद्घाटन

**धनबाद** : सिविल कोर्ट के महिला कर्मचारी को होने वाले असुविधाओं को ध्यान में रखते हुए धनबाद के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश वीरेंद्र कुमार तिवारी ने सोमवार को सिविल कोर्ट धनबाद में महिला कर्मचारियों के लिए फीडिंग रूम का उद्घाटन किया। फीडिंग रूम में लायंस क्लब के सहयोग से बच्चों को खेलने के लिए खिलौने व अन्य आवश्यक सामान के भी इंतजाम किए गए हैं। इस मौके पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश वीरेंद्र कुमार तिवारी ने कहा कि महिला कर्मचारी जिनके छोटे बच्चे हैं उनकी सुविधा के लिए यह व्यवस्था की गई है। जल्द ही सिविल कोर्ट धनबाद में चिकित्सा की अन्य व्यवस्था भी की जाएगी। इस बावत जानकारी देते हुए अवर न्यायाधीश सह सचिव डालसा राकेश रौशन ने बताया कि सीडब्लूसी अध्यक्ष उत्तम मुखर्जी के पहल पर फिडिंग रूम मे लायंस क्लब ऑफ कतरास ने बच्चों से संबंधित सामग्रियों को उपलब्ध कराया है। लायंस क्लब के डा मधुमाला, चंदन कुमार आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि लांयस क्लब के डा उमशंकर सिंह, डा. बी एन चौधरी ने आगे भी सहयोग देने का आश्वासन दिया हैकोर्ट परिसर में हेल्थ चेक अप कैम्प के आयोजन में भी क्लब मदद करेगा।

## शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 70 शिक्षक हुए सम्मानित

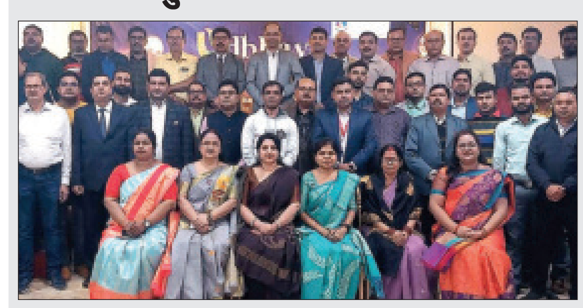

**बोकारो** : झारखंड चैप्टर मेंटर संगोष्ठी का आयोजन कैंप 2 स्थित जायका हैपनिम्स में किया गया। इस कार्यक्रम में प्रेरक प्रशिक्षक के रुप में 'सायबल चटर्जी शामिल हुए। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा नीति पर था। सायबल चटर्जी ने नीति की प्रमुख विशेषताओं और शिक्षा प्रणाली के लिए इसके निहितार्थों पर विस्तार से चर्चा की, शिक्षकों को नीति के उद्देश्यों के साथ अपने शिक्षण विधियों को संरेखित करने के लिए अभिनव दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। इंटरैक्टिव सत्र ने शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में एनईपी सिद्धांतों के एकीकरण का पता लगाने और समग्र छात्र विकास को बढ़ावा देने का अवसर दिया। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए अनुकरणीय शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मानित शिक्षकों में नवीन कुमार, हरे कृष्ण, रागिनी झा, नीरज कुमार, मिनी कुमारी, अनूप कुमार, ज्योति सिंह, संगीता केशरी विश्वनाथ गोस्वामी, देब दुलाल मित्रा और अजय कुमार शामिल थे। उनके समर्पण और प्रयासों को उनके साधियों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शारदा विश्वविद्यालय के सुमित सिंह व आतिफ सिद्दीकी ने किया।

## डीएवी कोयलानगर में दो दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला का हुआ आयोजन

**धनबाद** : कोयला नगर टाउनशिप स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल में डीएवी सी.ए.ई के अंतर्गत नवीन शिक्षण विधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दो दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें झारखंड प्रक्षेत्र-सी के अंतर्गत डीएवी कोयला नगर, कुसुंडा अलकुशा, मुनीडीह, सिंदरी, लोदना तथा मुग़्मा के 415 प्री-प्राइमरी से लेकर उच्च माध्यमिक तक के सभी विषयों के शिक्षक- शिक्षिकाएं सम्मिलित हुए। कार्यशाला की शुरूआत डीएवी झारखंड प्रक्षेत्र-सी के सहायक क्षेत्रीय पदाधिकारी सह विद्यालय के प्राचार्य एन.एन.श्रीवास्तव ने गायत्री मन्त्र के साथ दीप प्रज्वलित कर किया। प्राचार्य ने उपस्थित सभी शिक्षक शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से आप सभी नवीन शिक्षण-शैली के गुढ़ रहस्यों से रूबरू होकर नई तकनीक के साथ विद्यार्थियों का आत्मविश्वास तथा विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करें जिससे कि हमारे विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम आशानुकूल हो। आगे उन्होंने प्रशिक्षकों को शिक्षण की रोचक व खेल आधारित पद्धतियों पर चर्चा करने की बात कही। वहीं, दूसरी ओर शैक्षणिक गतिविधि को सरल बनाने के उद्देश्य से शिक्षकों को विषयवार पाठ्यक्रमानुसार प्रश्न शैली को ध्यान में रखते हुए प्रश्न-निर्माण करने को भी कहा, जिससे कि हमारे बच्चे सतत अभ्यास से कठिन प्रश्नों को सहज तरीके से समझ सके।

## झारखंड प्रजापति महासंघ ने भाजपा को समर्थन देने की घोषणा की

**बोकारो** : जैनामोड़ स्थित सुभाष महतो के आवासीय कार्यालय में सोमवार को झारखंड प्रजापति महासंघ की बैठक हुई। बैठक में समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों शामिल हुए। बैठक मे प्रदेश अध्यक्ष भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय सदस्य देवनारायण प्रजापति, महासंघ के पूर्व अध्यक्ष सह माटी कला बोर्ड के निवर्तमान अध्यक्ष चन्द्र प्रजापति, महासंघ के महामंत्री माटी कला बोर्ड के वर्तमान सदस्य सह भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश महामंत्री ईश्वर चंद्र प्रजापति, महासंघ के जिला अध्यक्ष शेखर प्रजापति, महासंघ के पूर्व जिला अध्यक्ष सह भाजपा जिला महामंत्री सुभाष महतो, भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष विनोद महतो, जदयू जिला अध्यक्ष प्रदीप महतो की उपस्थिति में विधानसभा चुनाव को लेकर चर्चा हुई। सदस्यों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया। कहा कि आज की परस्थिति में भाजपा'पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है, जो कुम्हार / प्रजापति सामाज के हितों की बात करती है और अमल भी करती है। भाजपा ने कुम्हार समाज से योगेश्वर महतो को दो बार विधायक बनाया। रघुवर सरकार ने माटी कला बोर्ड का गठन कर कुम्हार समाज के लोगों के लिए स्वरोजगार की ओर कदम बढ़ाने का कार्य किया। कहा कि आज तक कांग्रेस, झामुमो या अन्य क्षेत्रीय दल कभी भी प्रजापति समाज की ओर ध्यान नहीं दिया। ऐसे में झारखंड प्रजापति महासंघ ने भाजपा को अपना समर्थन देने की बात कही।

**एक नजर**

## रामगढ़ में कड़ी सुरक्षा में होगा मतदान, 3.56 लाख वोटर डालेंगे वोट

**रामगढ़** : रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में चुनाव की तैयारी पूरी कर ली गई है। 406 मतदान केंद्रों पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए है। 3 .56 लाख वोटर अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। यह जानकारी सोमवार की शाम प्रेस कांफ्रेंस के दौरान डीसी चंदन कुमार ने दी। डीसी ने बताया कि शाम 5 :00 बजे के बाद चुनाव प्रचार बंद हो गया है। सुरक्षा व्यवस्था काफी कड़ी कर दी गई है। 19 नवंबर को 406 मतदान केंद्रों पर पोलिंग पार्टी को सुरक्षा कर्मचारियों के साथ रवाना किया जाएगा। सभी मतदान केंद्रों पर बीएलओ के द्वारा पोलिंग पार्टी के खाने पीने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा पोलिंग पार्टी को जिस गाड़ी से रवाना किया जाएगा, उसमें जीपीएस लगाया गया है। पोलिंग पार्टी की ट्रैकिंग स्ट्रांग रूम से लेकर बूथ तक जीपीएस के माध्यम से की जाएगी। डीसी ने बताया कि कोई भी राजनैतिक दल अगर इस दौरान चुनाव प्रचार करते हुए नजर आएगा तो प्रत्याशी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज होगी।

एसपी अजय कुमार ने बताया कि रामगढ़ विधानसभा की 406 बूथ पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। सीआरपीएफ, झारखंड पुलिस और अन्य पुलिस बलों के द्वारा अभी से ही सुरक्षा की कमान संभाली गई है। सभी सुरक्षा में लगे जवानों को राजनैतिक दलों और उनके कार्यों को लेकर ब्रीफ कर दिया गया है।

## जमीन हड़ने के आरोपी के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

**गिरिडीह** : जमशेदपुर पुलिस ने फर्जी दस्तावेज प्रस्तुत कर जमीन हड़ने के एक मामले में गिरिडीह के न्यू बरगंडा निवासी रामदेव सिंह के घर पर पहुंचकर इश्तेहार चिपकाया। उसके खिलाफ जमशेदपुर के मानगो निवासी अनूप कुमार ने मानगो थाने में वर्ष वर्ष 2023 में धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया था। इस मामले में जमशेदपुर कोर्ट ने रामदेव सिंह के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। मानगो पुलिस उसकी खोज में कई बार न्यू बरंगडा स्थित उसके आवास पर पहुंची, लेकिन वह हर बार फरार मिला। मानगो थाना के सब इंस्पेक्टर प्रवीण साह ने बताया कि पुलिस ने आरोपी घर पहुंचकर ढोल बजाकर इश्तेहार चिपकाया। मानगो थाना में अनूप कुमार की ओर से दर्ज कराए गए धोखाधड़ी के मामले में कहा गया है कि गिरिडीह शहर के झंडा मैदान के बगल में उसकी 7 .5 कट्ठा जमीन व मकान है। रामदेव सिंह ने फर्जी कागजात बनाकर उक्त जमीन व घर को हड़प लिया है।

# चुनावी जनसभा में मुख्यमंत्री ने भाजपा नेताओं पर जमकर किया हमला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**सिल्ली** : सिल्ली विधानसभा अंतर्गत राहें प्रखंड में चुनावी जनसभा को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने संबोधित किया इस दौरान उन्होंने कहा कि यह लोकतंत्र का सबसे बडा महापर्व है सभी जाति धर्म के लोग हिंदू मुस्लिम आदिवासी सभी लोग एक साथ मनाते हैं यह जाति धर्म से ऊपर का महापर्व है आप लोग इस चुनाव में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले हमारी सरकार के योजना चल रही है 20 साल बीजेपी और आजसू ने इस राज्य में गरीब को और गरीब करता चला गया आमिर को और अमीर करता चला गया आज गरीब को देने के लिए इसके पास एक टका नहीं है लेकिन बड़े-बड़े व्यापारियों का अरबो खरबों रुपया माफ करने का इनके पास अरबो खरबों रुपया है हम गरीबों की आवाज के लिए नाक रगड़ते रह गए गरीबों का आवास का पैसा नहीं दिया हम बूढ़ा बुजुर्ग का पैसा बढ़ाने के लिए नाक रगड़ते रह गए पैसा नहीं दिया हमारा कोयला का बकाया 136000 करोड़ रूपया नाक रगड़ते रह गए नहीं दिया जब हम और हुज्जत करने लगे तो हमें जेल में ही डाल दिया डराया धमकाया गरीबों का यह पैसा अधिकार कुछ नहीं देते हैं हमारी सरकार गिराने के लिए विधायक को चुराने के लिए सांसदों को चुराने के लिए यह पॉकेट मार लोग एक साल से लगा हुआ है मंडरा रहा है पूरा राज्य में`लेकिन हम झारखंड का बेटा है शिबू सोरेन का बेटा है भगवान बिरसा मुंडा सिंधु कानून का वंशज है हम लोग झुकना नहीं सीखा है हम लोग लड़के लिया है झारखंड लड़के लेंगे अधिकार वाले लोग है`अब हम गरीबों के लिए काम करते हैं झारखंडियों के लिए काम करते हैं नौजवानों के लिए काम करते हैं यह लोग कोर्ट में पीलआर करके अड़ंगा लगते हैं `यह रांची से नहीं गांव से चलने वाली सरकार है गांव में जाकर सभी पदाधिकारी काम करते हैं हमने पहला कानून बनाया इस राज्य में जो भी महिला विधवा होगी उसी दिन से पेंशन देने का काम करेंगे आज इस राज्य में कोई भी बूढ़ा बुजुर्ग नहीं है सभी को पेंशन देने का काम किया मुख्यमंत्री मैय्या सामान योजना लाया और उनके खाते में एक हजार देने का काम किया और दिसंबर से 2500 देने का कानून बना दिया बीजेपी पर निशाना चाहते हुए कहा उधर 1000 चिल कौवा और इधर एक दो लोग तीर धनुष लिए खड़ा है बस आप ही लोग हमारी ताकत है यह जो विपक्ष के लोग हैं वोट के समय खाली वोट दो और नोट लो हम लोग नोट नहीं दे सकते हैं हम लोग मजदूरी मेहनत कर सकते हैं आपके खेत में हल जोत सकते हैं `पर नोट नहीं दे सकते हैं आप हमें वोट के जरिए अपना आशीर्वाद दें और मेरे छोटे भाई अमित महतो को क्रम संख्या 2 पर तीर धनुष छाप पे भारी से भारी मतों से वोट देकर विजय बनाएं और हमें मजबूत करें अमित महतो ने अपने संबोधन में कहा कि हम लोगों की मां-बहन का सम्मान किसने दिया बिजली बिल किसने माफ किया कृषि लोन किसने माफ किया सभी सम्मान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने दिया है सिल्ली मैं हम नहीं जनता वोट करेगी वह जानता ही जीतेगी अपना कम संख्या दो पर तीर धनुष छाप पर वोट देने की अपील की इस मौके पर सिल्ली पूर्वी जिला परिषद सदस्य लक्ष्मी कुमारी राहें जिला परिषद सदस्य बादल महतो रोहित दास चौधरी राधिका महतो सतीश महतो और भी बहुत सारे सक्रिय कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में सुरक्षित चुनाव की तैयारी पूरी : डीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रामगढ़** : रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के होने वाले मतदान को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चंदन कुमार की अध्यक्षता में समाहरणालय सभाकक्ष में प्रेस वार्ता हुई। प्रेस वार्ता के दौरान सर्वप्रथम जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने सभी मीडिया प्रतिनिधियों को जानकारी देते हुए बताया कि दूसरा चरण का मतदान रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में होना है। रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 181145 पुरुष, 175848 महिला इस प्रकार कुल 356993 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मतदान के दौरान विधि व्यवस्था एवं मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए पुलिस पदाधिकारी एवं माइक्रो आब्जर्वर की भी प्रतिनियुक्ति की जा चुकी है। 23- रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत कुल 406 पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। कहा कि इसके लिए 406 पोलिंग पार्टी एवं 20% आरक्षित पोलिंग पर्सनल्स की नियुक्ति की गई है। पदाधिकारी ने बताया कि मंगलवार सुबह से ही डिस्पैच सेंटर से ईवीएम एवं पोलिंग पार्टी का डिस्पैच शुरू कर दिया जाएगा. सभी ईवीएम की निगरानी के लिए गाड़ियों में लाइव जीपीएस लगाई गई है, ताकि सभी ईवीएम ले जा रहे गाड़ियों को लाइव ट्रैकिंग किया जा सके। डिस्पैच के उपरांत सभी मतदान पदाधिकारी अपने-अपने पोलिंग बूथ पर ही पहुंचेंगे और बूथ पर ही उनके रुकने की व्यवस्था की गई है। किसी भी प्रकार का कलस्टर नहीं बनाया गया है।

## पति ने गला दबाकर की पत्नी व पुत्र की हत्या

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**सरायकेला** : जिले के चौका थाना अंतर्गत कुरली गांव में बीते रविवार की रात एक सनकी व्यक्ति ने अपनी पत्नी एवं दो वर्षीय बेटे की गला दबाकर हत्या कर दी। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी पति मौके से फरार हो गया।

सोमवार को घटना की सूचना मिलते ही चांडिल एसडीपीओ अरविंद कुमार एवं चौका थाना प्रभारी बजरंग महतो दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और दोनों शवों को कब्जे में लेकर आगे की छानबीन में जुट गए है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कुरली गांव निवासी अशोक महतो की शादी वर्ष 2021 में चांडिल के रावताड़ा में मधुमिता महतो के साथ धूमधाम से हुई थी। अशोक महतो शेयर बाजार में पैसा लगाता था जिसको लेकर हमेशा पत्नी के साथ विवाद होते रहता था। बीती रात पत्नी मधुमिता अपने ससुर को खाना देने के बाद अपना और अपने पति का खाना लेकर घर के ऊपर वाले कमरे में गई। इसी दौरान किसी बात को लेकर दोनों के बीच नोंकझोंक हुई। इसके बाद अशोक महतो ने गुस्से में आकर पत्नी और बेटे की गला दबाकर हत्या कर दी और मौके से फरार हो गया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। घटना के संबंध में जानकारी देते हुए चौका थाना प्रभारी बजरंग महतो ने बताया कि घर में केवल फरार आरोपी रोहित महतो के वृद्ध पिता मौजूद थे। उन्होंने पुलिस को बताया कि वह रात में भोजन के बाद अपने कमरे में सो रहे थे और सुबह इस घटना की जानकारी उन्हें मिली। इस घटना से गांव में गम और आक्रोश का माहौल है।

ग्रामीणों ने प्रशासन से आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। यह घटना न केवल परिवार के लिए बल्कि पूरे गांव के लिए एक बड़ा सदमा है, और लोग इस प्रकार की हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने का संकल्प ले रहे हैं। पुलिस मामले की गंभीरता को समझते हुए त्वरित कार्रवाई करने का आश्वासन देते हुए आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की बात कही है।

## राजमहल, बोरियो और बरहेट में 40 उम्मीदवार हैं मैदान में

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज** : विधानसभा चुनाव-2024 के परिपेक्ष्य जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती, पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह के संयुक्त अध्यक्षता में विधानसभा चुनाव की जानकारी प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से दी। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि 01- राजमहल विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हेतु 14 अभ्यर्थी, 02- बोरियो विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हेतु 15 अभ्यर्थी, 03 -बरहेट 09 अभ्यर्थी अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र से चुनावी मैदान में हैं। उन्होंने बताया गया कि 01- राजमहल विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हेतु 355763 मतदाता मतदान करेंगे, जिसमें पुरुषों की संख्या 181493, महिलाओं की संख्या 174296, है। 02-बोरियों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हेतु 284593 मतदाता मतदान करेंगे जिसमें पुरुषों की संख्या 141149, महिलाओं की संख्या 143440, थर्ड जेंडर की संख्या 04 है। 03- बरहेट विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हेतु 225885 मतदाता मतदान करेंगे। जिसमें पुरुषों की संख्या 110077, महिलाओं की संख्या 115807, थर्ड जेंडर की संख्या 01 है। इस प्रकार तीनों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र हेतु कुल 866240 मतदाता मतदान करेंगे। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि 01 राजमहल विधानसभा अंतर्गत 383 मतदान बूथ है। 02 बोरियों विधानसभा अंतर्गत 1348 मतदान बूथ है। 03 बरहेट विधानसभा अंतर्गत 277 मतदान बूथ है। उन्होंने बताया कि 01- राजमहल विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 5892 पीडब्ल्यूडी मतदाता हैं, 02- बोरियो विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में 4964 पीडब्ल्यूडी मतदाता हैं, 03- बरहेट विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 3840 पीडब्ल्यूडी मतदाता हैं।

## खूंटी और तोरपा विधानसभा सीटों पर भाजपा-झामुमो के बीच कांटे की टक्कर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**खूंटी** : जनजातियों के लिए सुरक्षित 60 खूंटी और 59 तोरपा विधानसभा क्षेत्रों में प्रथम चरण में 13 नवंबर को शांतिपूर्ण मतदान संपन्न होने के बाद विभिन्न क्षेत्रों में मतदाताओं के रुझान के आधार पर लोग अब इस बात की चर्चा जोरों पर है कि खूंटी जिले के दो विधानसभा क्षेत्रों में आखिर जीत का सेहरा किसके सिर सजेगा।

पिछले पांच विधानसभा चुनाव में लगतार जीत हासिल करने वाले खूंटी के विधायक और भाजपा प्रत्याशी नीलकंठ सिंह मुंडा जीत का छक्का लगा पायेंगे या झामुमो इस सीट पर नया इतिहास लिखेगा। तोरपा विधानसभा सीट से भी वर्तमान विधायक और भाजपा प्रत्याशी कोचे मुंडा अपनी जीत को बरकरार रख पायेंगे या उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी। खूंटी विधानसभा सीट से वैसे तो दलीय और निर्दलीय 11 उम्मीदवार चुनावी जंग में भाग्य आजाम रहे हैं जबकि तोरपा सीट से प्रत्याशियों की संख्या 12 है लेकिन दोनों ही सीटों पर मुख्य मुकाबला भाजपा और झामुमो के बीच ही है। दोनों दलों के बीच कांटे के संघर्ष की बात राजनीतिक के जानकार कह रहे हैं। खूंटी सीट पर जहां भाजपा के नीलकंठ सिंह मुंडा को झामुमो के रामसूर्या मुडा कड़ी चुनौती दे रहे हैं, वहीं तोरपा सीट पर भाजपा के कोचे मुंडा का मुख्य मुकाबला झामुमो के सुदीप गुडिया के बीच है। राजनीति पर पैनी नजर रखने वाले लोगों का मानना है कि जिस प्रकार से झामुमो को ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा शहरी क्षेत्र में भी मतदाताओं का समर्थन मिला है और झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के प्रत्याशी द्वारा भाजपा के कोर वोटरों में सेंधमारी की गई है, उससे मुकाबला कड़ा हो गया है।

**संक्षिप्त खबरें**

## सिविल सर्जन ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट एवं बोरियो का किया निरीक्षण

**साहिबगंज**: सोमवार को सिविल सर्जन साहिबगंज डॉक्टर प्रवीण कुमार संथालिया के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट एवं बोरियों का सी .आर .एम टीम भ्रमण से पूर्व की तैयारीयों का औचक निरक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में ओपीडी में डॉक्टर की उपस्थिति, ओपीडी पंजी, फलेरिया क्लिनिक, डॉट्स क्लिनिक, ए एफ एच सी सेंटर, आईपीडी, प्रसव कक्ष, साफ–सफाई आदि को देखे। सिविल सर्जन साहिबगंज के द्वारा उपस्थित मेडिकल ऑफिसर, पारा मेडिकल कर्मीयों को मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने, सभी सूचकांक को सुधारने, डाटा का ससमय प्रविष्टि आदि का निर्देश दिया गया। मौके पर डी एस, मेडिकल ऑफिसर, क्लर्क, प्रखंड टीम एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

## जिला क्रिकेट अंडर-16 टूर्नामेंट में जवाहर नवोदय विद्यालय ने 9 विकेट से जीता मैच

**साहिबगंज**: जिला क्रिकेट संघ के तत्वाधान में सिदो–कान्हू स्टेडियम में चल रहे अंडर–16 क्रिकेट लीग टूनार्मेंट के तहत सोमवार को माही स्पोर्ट्स रेड बनाम जवाहर नवोदय विद्यालय के बीच मैच खेला गया। टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए माही स्पोर्ट्स रेड ने 23 .4 ओवर में 98 रन बना कर ऑल आउट हो गई। अयान वसीम ने 22, कुमार गौरव ने 24 रनों की पारी खेली। जवाहर नवोदय विद्यालय के गेंदबाज अमन कुमार अमन ने 5, वसीम अख्तर व सोनू उरांव ने 2–2 विकेट लिए। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी जवाहर नवोदय विद्यालय की टीम ने 5 .4 ओवर में 1 विकेट के नुकसान पर 100 रन बनाकर 9 विकेट से मैच जीत लिया। सोनू कुमार साह ने नाबाद 66 व वसीम अख्तर ने 10 रनों की पारी खेली। माही स्पोर्ट्स के गेंदबाज रितिक कुमार ने एक विकेट लिया। जवाहर नवोदय विद्यालय के गेंदबाज अमन कुमार अमन को मैन ऑफ दी मैच घोषित किया गया। मुख्यातिथि जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष प्रेमनाथ तिवारी ने अमन कुमार अमन को मैन ऑफ दी मैच की ट्रॉफी से पुरस्कृत किया। मैच में अंपायरिंग अशफाक आलम व राकेश कुमार रोशन व स्कोरिंग केएस सौरभ ने किया। मौके पर जिला क्रिकेट संघ सचिव अंकुर सिन्हा, अमित तिवारी, मो जुनैद व आदित्य सहित अन्य मौजूद थे।

## रामगढ़ में गैरकानूनी ढंग से बालू खनन के तीन आरोपी गिरफ्तार

**रामगढ**: पुलिस ने अवैध बालू खनन के तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। एसपी अजय कुमार ने सोमवार को बताया कि पुलिस को बालू के अवैध खनन और तस्करी को लेकर गुप्त सूचना मिली थी। इस सूचना के आधार पर बासल थाना अंतर्गत लेम स्कूल के पास दो ट्रैक्टर के चालक को पुलिस ने पकड़ा है। साथ ही एक अन्य बालू तस्कर को गिरफ्तार किया गया। इनमें विश्वजीत कुमार सिंह उर्फ सोनू सिंह नीरज कुमार सिंह और मोहित कुमार शामिल हैं। एसपी ने बताया कि तीनों पतरातू थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। जांच के दौरान पता चला कि बालू लदा ट्रैक्टर के संबंध में इन लोगों के पास कोई भी दस्तावेज मौजूद नहीं था। पूछताछ के दौरान विश्वजीत कुमार सिंह ने कहा कि दोनों ट्रैक्टर के मालिक वे खुद हैं। नीरज कुमार एवं मोहित कुमार दोनों ट्रैक्टर के चालक हैं। दोनों ट्रैक्टर पर 200 सीएफटी बालू लदा हुआ था। इस मामले में तीनों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। साथ ही दोनों ट्रैक्टर को जब्त कर थाने में लगा दिया गया है।

# स्नेहपुर कुष्ठ कॉलोनी के 57 मतदाता पहली बार करेंगे वोट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**जामताड़ा** : जामताड़ा जिले में विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में मतदान होना है। मिहिजाम नगर परिषद क्षेत्र की हांसीपहाड़ी स्थित स्नेहपुर कुष्ठ कॉलोनी के 57 कुष्ठ मतदाता पहली बार मतदान करेंगे। उनके लिए कॉलोनी में विशेष बूथ बनाया गया है। जिला प्रशासन एक भी मतदाता छूटे नहीं इसी मंत्र के साथ लोकतंत्र के महापर्व में सभी मतदाताओं को वोट के प्रति जागरूक व उन्हें सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है। जामताड़ा डीसी कुमुद सहाय ने क्षेत्र भ्रमण के क्रम में स्नेहपुर कुष्ठ कॉलोनी के कुष्ठ पीड़ितों से बातचीत की। उनसे मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने के बारे में जानकारी ली। कई लोगों के पास मतदाता पहचानपत्र तक नहीं था। साथ ही वहां के निवासियों ने बताया कि मतदान केंद्र काफी दूर होने के कारण वे लोग मतदान नहीं कर पाते हैं। इसे गंभीरता से लेते हुए डीसी ने सबसे पहले कुष्ठ कॉलोनी के सभी लोगों का नाम मतदाता सूची में दर्ज करवाने की पहल की. उनका मतदाता पहचानपत्र बनवाया। स्नेहपुर कुष्ठ आश्रम के सभी 57 मतदाताओं के लिए आश्रम के नजदीक ही पहली बार सहायक मतदान केंद्र बनाया गया, ताकि वे अपने मताधिकार का सुगमतापूर्वक प्रयोग कर सकें। डीसी ने स्नेहपुर सामुदायिक भवन में सहायक मतदान केंद्र 362 बनाने की सहमति के लिए झारखंड के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से अनुरोध किया। भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली ने इसकी अनुमति दे दी है। इस बूथ पर आश्रम में रहने वाले कुल 57 कुष्ठ मतदाता पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगेबूथ पर रैंप, व्हील चेयर सहित सभी जरूरी सुविधाएंमतदान केंद्र संख्या 362 पर कुष्ठ मतदाताओं की सुविधा का ध्यान रखते हुए रैंप, व्हील चेयर, पेयजल, बिजली सहित सभी जरूरी सुविधाएं बहाल की गई हैं। वहां सुरक्षा बल व वॉलेंटियर भी तैनात किए जाएंगे, जो उन्हें मतदान कराने में सहयोग करेंगे।

**जिला निर्वाचन पदाधिकारी–सह–उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग**
**(पोस्टल बैलेट–सह–मतपत्र कोषांग हजारीबाग)**

–:प्रेस–विज्ञप्ति:–

एतद् द्वारा विधान सभा निर्वाचन–2024 के निमित्त सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल एवं 24–माण्डु के सभी अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि वैसे सरकारी कर्मी जो द्वितीय चरण में दिनांक 20.11.2024 में होने वाले विधान सभा क्षेत्रों के मतदाता है तथा निर्वाचन कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अपने मतदान केन्द्र में उपस्थित होकर मतदान करने में सक्षम नहीं है तथा पूर्व से कार्यरत Facilitation Centre में किसी कारणवश मतदान का कार्य नहीं कर पाये है, उन छूटे हुए मतदाताओं के लिए Dispatch Centre जो दिनांक 19.11.2024 को किया जाना है, में Facilitation Centre निम्नरूपेण कार्य करेगा:–

| चयनित स्थल का नाम | मतदान किये जाने की तिथि एवं समय | सम्बद्ध विधानसभा क्षेत्र एवं संख्या |
|---|---|---|
| 1.संत कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग Geology Department | 19-11-24 08:00 AM TO 3:00 PM | संथाल परगना प्रमंडल के मतदाता |
| 2.संत कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग Geology Department | 19-11-24 08:00 AM TO 3:00 PM | 61-SILLI, 62-KHIJRI |
| 3.संत कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग Geology Department | 19-11-24 08:00 AM TO 3:00 PM | 23-RAMGARH. 24-MANDU |
| 4.संत कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग Geology Department | 19-11-24 08:00 AM TO 3:00 PM | 28-DHANWAR,29-BAGODAR,.30-JAMUA,31-GANDEY,32-GIRIDIH,33-DUMRI,34-GOMIA,35-BERMO,36-BOKARO,37-CHANDANKIYARI,38-SINDARI,39-NIRSA,40-DHANBAD,41-JHARIA,42-TUNDI,43-BAGMARA |
| 5.संत कोलम्बस कॉलेज, हजारीबाग Geology Department | 19-11-24 08:00 AM TO 3:00 PM | 24–नान्डु एवं द्वितीय चरण के अन्तर जिला के पुलिस मतदाता जो निर्वाचन कार्य हेतु इस जिला में प्रतिनियुक्त है। |

जिला निर्वाचन पदाधिकारी–सह–उपायुक्त, हजारीबाग

PR 340167 (Election)24-25*D

# धूर्त पाक की नापाक धरती पर कत्तई न जाए भारतीय क्रिकेट टीम

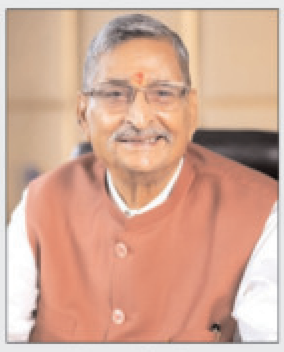

डॉ. आर.के. सिन्हा

भारत ने साफ कर दिया है कि उसकी क्रिकेट टीम आगामी साल पाकिस्तान में होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में भाग नहीं लेगी। यह भारत के स्वाभिमान के लिये और बहुसंख्यक भारतवासियों के लिये सुखद फैसला है। इस तरह से भारत ने सारी दुनिया को यह स्पष्ट संदेश दे दिया कि जब तक पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद जारी रहेगा, तब तक भारत अपने पड़ोसी मुल्क के साथ अन्य क्षेत्रों में सामान्य व्यवहार का दृष्टिकोण नहीं रख सकता।

भारत ने साफ कर दिया है कि उसकी क्रिकेट टीम आगामी साल पाकिस्तान में होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में भाग नहीं लेगी। इस तरह से उसने दुनिया को एक सख्त और स्पष्ट संदेश दे दिया है कि जब तक पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद जारी रहेगा, तब तक भारत अपने पड़ोसी मुल्क के साथ अन्य क्षेत्रों में भी सामान्य व्यवहार का दृष्टिकोण नहीं रख सकता। भारतीय क्रिकेट टीम का पाकिस्तान में क्रिकेट न खेलना एक जटिल मुद्दा है, जिसके राजनीतिक और सुरक्षात्मक दोनों पहलू हैं। आपको इस तरह के कई पिलपिले तर्क देने वाले मिल जाएँगे कि खेल को राजनीति से अलग रखना चाहिए। क्रिकेट के माध्यम से दोनों पड़ोसियों के बीच संबंध बेहतर हो सकते हैं। खेल प्रशंसकों को एकजुट करता है और सद्भावना का संदेश देता है। तो क्या हम इस काल्पनिक सद्भावना के लिये अपने लोकप्रिय खिलाड़ियों की जान खतरे में डाल दें? पाकिस्तान में आतंकवाद की घटनाएं थमने का नाम ही नहीं ले रही हैं। हाल के दौर में वहां पर दर्जनों चीनी नागरिकों और सेना के जवानों का कत्ल हो चुका है।

पाकिस्तान में कई आतंकी संगठन सरकार के खिलाफ बागी तेवर अपनाते हुए आतंकी घटनाओं को अंजाम देने में खुलेआम लगे हुए हैं। क्या इन परिस्थितियों में हमें अपनी टीम को सीमा के उस पार भेजना चाहिए? कहना न होगा कि इस तरह का कोई भी कदम बहुत महंगा पड़ सकता है। भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से राजनीतिक तनाव चल रहा है, जिसके कारण दोनों देशों के बीच संबंध सामान्य नहीं हो सके, न तो होने की कोई संभावना ही दिख रही है। इसलिए, सुरक्षा चिंताएं एक महत्वपूर्ण कारण हैं, राष्ट्रहित में लिये गए इस निर्णय का! पाकिस्तान में सुरक्षा की स्थिति कभी भी स्थिर नहीं रहती। इसलिए भारतीय खिलाड़ियों की सुरक्षा को लेकर चिंता करना लाजिमी है। यह याद रखना होगा कि कुछ साल पहले पाकिस्तान में श्रीलंका की क्रिकेट टीम पर भीषण हमला लाहौर शहर में हुआ था। श्रीलंका की क्रिकेट टीम पर यह हमला 3 मार्च 2009 को हुआ था, जब लाहौर में गद्दाफी स्टेडियम के पास एक बड़े काफिले का हिस्सा श्रीलंकाई क्रिकेटरों को ले जा रही एक बस पर 12 बंदूकधारियों ने गोलीबारी की थी। क्रिकेटर पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के खिलाफ दूसरे टेस्ट के तीसरे दिन खेलने के लिए जा रहे थे। उस घटना को सारी दुनिया ने अपने टीवी सेटों और मोबाइल सेटों पर देखा था।

भारत यूं ही पाकिस्तान पर आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप नहीं लगाता। पाकिस्तान ने भारत पर बार-बार प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आतंकवादी हमले किये है। पाकिस्तान ने ही 1948, 1965, 1971 और कारगिल के युद्ध शुरू किए। यह अलग बात है कि उसे हर बार कसकर मार पड़ी। पर वह तो एक नंबर का धूर्त है। उसे मार खाने में ही आनंद आता है। हालांकि यह भी सच है कि पाकिस्तान से उत्पन्न आतंकवाद ने भारत पर गहरा प्रभाव डाला है। दशकों से, विभिन्न आतंकवादी समूहों ने भारत में कई आतंकवादी हमलों को अंजाम दिया है, जिससे बड़ी संख्या में निर्दोष लोगों की मौत हुई है और सैकड़ों को चोटें लगी हैं और बुनियादी ढांचे को व्यापक नुकसान पहुंचा है। इन हमलों के परिणामस्वरूप भारत को व्यापक आर्थिक नुकसान हुआ है। मुंबई पर हुए 2008 के आतंकवादी हमलों में हुए नुकसान का आंकलन करना मुश्किल है, क्योंकि; इसमें मानवीय और आर्थिक दोनों तरह के नुकसान शामिल हैं। मुंबई हमलों में 164 से ज्यादा लोग मारे गए, जिसमें कई विदेशी नागरिक भी शामिल थे। सैकड़ों लोग घायल हुए, कई को गहरी चोटें आईं। उस भयावह हमलों के बाद मुंबई पहले की तरह कभी नहीं हुई। हमलों का उन लोगों पर गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा जो जीवित बचे, उनके परिवारों और समूचे शहर पर। अगर आर्थिक नुकसान की बात करें तो हमलों से संपत्ति को व्यापक नुकसान हुआ, जिसमें होटल, रेलवे स्टेशन और अन्य सार्वजनिक स्थान शामिल हैं। मरम्मत और पुनर्निर्माण की लागत का सटीक आकलन तो नहीं किया जा सकता। पर्यटन उद्योग पर भारी प्रभाव पड़ा, जिससे व्यापार में गिरावट आई और सैकड़ों की नौकरियां चली गईं। यह आर्थिक नुकसान दीर्घकालिक था। सारी दुनिया जानती है कि हमला पाकिस्तान के आतंकी संगठनों से किया था।

आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 का आयोजन पाकिस्तान में होना है। भारत ने लाहौर में अपने सभी मैचों को दुबई में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया है, क्योंकि भारतीय सरकार अपनी टीम को पाकिस्तान में खेलना नहीं चाहती। भारत पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद से लड़ने और साथ ही सामान्य व्यवहार को अपनाने की दोहरी नीति नहीं अपनाना चाहता। यह पाकिस्तान को जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद के लिए अपने छद्म समर्थन को वैध बनाने की अनुमति देगा। पाकिस्तान इसलिए भारतीय टीम की भागेदारी चाहता है कि अगर उसने भाग नहीं लिया तो सारा आयोजन चौपट हो जाएगा। प्रायोजक नहीं आएंगे। जरा सोचिए कि जब पाकिस्तान चीनी नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर पाता तो भारतीय टीम की क्या करेगा। चीन के सामने तो सारी पाकिस्तान सरकार कटोरा लेकर खड़ी रहती है।

पाकिस्तान में बीते अक्टूबर महीने में कराची हवाई अड्डे के पास आत्मघाती हमले में दो चीनी नागरिक मारे गए और कम से कम 10 लोग घायल हुए हैं। विस्फोट सिंध प्रांत में बिजली परियोजना पर काम कर रहे चीनी इंजीनियरों के काफिले पर हुआ था। पृथकतावादी बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए), जिसने हाल के वर्षों में पाकिस्तान में विकास परियोजनाओं में शामिल चीनी नागरिकों पर बार-बार हमले किए हैं, ने कहा है कि उसने हमला किया है। इसने कहा कि उसने कराची हवाई अड्डे से आ रहे ₹चीनी इंजीनियरों और निवेशकों के एक काफिले₹ को ₹निशाना बनाया₹। यह हमला उस वक्त हुआ है जब पाकिस्तान शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने की तैयारी कर रहा था। यह भी याद रखा जाए कि चीनियों पर हमला उस वक्त हुआ था जब वहां इंग्लैंड की क्रिकेट टीम टेस्ट मैच खेल रही है। जाहिर है, आतंकी हमले के कारण पाकिस्तान का यह दावा तार-तार हो गया है कि वहां हालात सामान्य हैं। बहरहाल, भारत को अपने स्टैंड पर कायम रहना चाहिए। भारत को अपनी क्रिकेट टीम किसी भी सूरत में पाकिस्तान नहीं भेजनी चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

## संपादकीय

# लापरवाही की कीमत

उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के सरकारी मेडिकल कॉलेज में लगी आग में दस नवजात शिशुओं की मौत हो गई। जिस वार्ड.में आग लगी उसमें 49 (या 50) बच्चे भर्ती थे। वे इस बुरी तरह जल चुके थे कि कुछ शवों की पहचान भी नहीं हो पाई। कहा गया कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी। नवजात ऑक्सीजन सपोर्ट पर थे, इसलिए आग तेजी से फैलती गई। इसी वर्ष मई में दिल्ली के विवेक विहार में बेबी केयर अस्पताल में लगी आग में सात नवजात बिल्कुल इसी तरह जल कर मर गए थे। वहां भी आग का कारण शॉर्ट सर्किट बताया गया था। महाराष्ट्र के भंडारा जिले के अस्पताल में 2021 में नवबॉर्न केयर यूनिट में लगी आग में भी दस नवजात जल कर मारे गए थे। विशेषज्ञ मानते हैं कि नवनिहालों के लिए बने आईसीयू बहुधा जोखिम में हैं, परंतु सरकार और व्यवस्था इसके प्रति घोर लापरवाही बरतती है। बहुत कमजोर या समय से पहले जन्मने वाले, सांस लेने में तकलीफ होने पर, किसी जन्मजात बीमारी या संक्रमण के चलते नवजात को प्रसूति अस्पतालों में बने नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट यानी एनआईसीयू में रखा जाता है जहां प्रयोग होने वाले सारे यंत्र बिजली के माध्यम से चलते हैं जिनकी देखभाल का जिम्मा विशेषज्ञों और पैरा मेडिकल स्टाफ का होता है। यह यूनिट बेहद संवेदनशील मानी जाती है। अस्पतालों जैसी संवेदनशील जगहों में आग लगने के मुख्य कारण बिजली के तारों में शॉर्ट सर्किट होने के अलावा वायरिंग पुरानी होना, ओवरहीटिंग/ओवरलोडिंग, उचित या वक्त पर देखभाल करने में जानी बूझी लापरवाही होते हैं। अपने यहां यूं भी अस्पतालों और नर्सिंग होम्स में मरीजों की देखभाल के तय मानकों की अनदेखी की जाती है। बताते हैं कि देश में बच्चों के ढेरों ऐसे आईसीयू हैं, जो नेशनल एक्रेडेशन बोर्ड. फॉर हॉस्पिटल्स एंड हेल्थ केयर जैसी एजेंसियों से मान्यताप्राप्त नहीं हैं। जितने बिस्तरों की इजाजत ली जाती है, उससे कई गुना ज्यादा बच्चों को भर्ती कर लिया जाता है। चिकित्सा पेशेवरों को अपनी सुरक्षा के साथही मरीजों की सुरक्षा पर भी ध्यान देना चाहिए। घटना की उच्चस्तरीय जांच के आश्वासन के साथ पीड़ित परिवार को मुआवजे का ऐलान किया गया है मगर इतने से उजड़ी गोद तो हरी नहीं हो सकती। दोषी एजेंसियों, फायर सेफ्टी और अस्पताल प्रबंधन को बख्शा नहीं जा सकता। ऐसी भीषण घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने होंगे। बच्चे हमारे साझा हैं, उनकी जान की कीमत आंकना हम सबके लिए नामुमकिन है।

## चिंतन-मनन

# मूल्य भावना का

भगवान बुद्ध जेतवन में ठहरे हुए थे। हर सुबह वह भिक्षावृत्ति को निकलते तो उन्हें मार्ग में एक किसान अपने खेत में काम करता मिलता। अपने कार्य के प्रति उसकी निष्ठा देख बुद्ध के मन में उसके लिए करुणा उमड़ी। वह प्रतिदिन वहां रुककर उस किसान को कुछ उपदेश देने लगे। जब उस किसान की फसल तैयार हुई तो उसने संकल्प किया कि वह अपनी फसल का एक हिस्सा भगवान बुद्ध को और भिक्षु संघ को भेंट करेगा। दुर्योगवश उसी रात मूसलाधार वर्षा हुई और उसकी सारी फसल चौपट हो गई। अगले दिन जब भगवान बुद्ध वहां से गुजरे तो उन्होंने किसान को वहां रोता हुआ पाया। पूछने पर किसान उनको सारी घटना सुना कर बोला, 'प्रभु! मुझे दुख अपने नुक्सान का नहीं, वरन इस बात का है कि मैं आपकी सेवा का यह अवसर चूक गया'

बुद्ध मुस्कराए और बोले, 'भंते! मूल्य वस्तुओं का नहीं, भावनाओं का होता है। तुम्हारे हृदय में उमड़ी भावनाएं तो मुझ तक कल ही पहुंच गई थीं। इनके कारण तुम उससे ज्यादा पुण्य के भागी बन गए हो, जितना तुम उस फसल को समर्पित करके बनते। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है' किसान की आंखें यह सुनकर नम हो उठीं।

# अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष दिवसः पुरुषों के अस्तित्व एवं सुरक्षा की मांग क्यों उठने लगी?

ललित गर्ग

दुनिया में अब महिला दिवस की भांति पुरुष दिवस प्रभावी रूप में बनाये जाने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। अब पुरुष भी अपने शोषण एवं उत्पीडित होने की बात उठा रहे हैं। महिलाओं की ही भांति अब पुरुषों पर भी उपेक्षा, उत्पीड़न एवं अन्याय की घटनाएं पनपने की बात की जा रही है। महिला दिवस की तर्ज पर ही पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस भी मनाया जाने लगा है। पहला अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 1999 में 19 नवंबर को डॉ. जेरोम टीलकसिंह ने त्रिनिदाद और टोबैगो में मनाया था। पुरुष दिवस दुनिया के 30 से अधिक देशों में मनाया जा रहा है। इस वर्ष की थीम ह्यसकारात्मक पुरुष रोल मॉडलह्न है। यह ऐसा एक वैश्विक उत्सव है जो पुरुषों के सकारात्मक योगदान और उपलब्धियों का जश्न मनाता है, साथ ही पुरुषों के स्वास्थ्य, कल्याण और लैंगिक समानता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दिन पुरुषों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाली चर्चाओं और कार्यों को बढ़ावा देने, सकारात्मक रोल मॉडल को प्रोत्साहित करने और अधिक समावेशी समाज की वकालत करने का अवसर प्रदान करता है।

कुछ वर्ष पूर्व भारत में सक्रिय अखिल भारतीय पुरुष एशोसिएशन ने भारत सरकार से एक खास मांग की कि महिला विकास मंत्रालय की भांति पुरुष विकास मंत्रालय का भी गठन किया जाये। इसी तरह यूपी में भारतीय जनता पार्टी के कुछ सांसदों ने यह मांग उठाई थी कि राष्ट्रीय महिला आयोग की तर्ज पर राष्ट्रीय पुरुष आयोग जैसी भी एक संवैधानिक संस्था बननी चाहिए। इन सांसदों ने इस बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र भी लिखा था। पत्र लिखने वाले एक सांसद हरिनारायण राजभर ने उस वक्त यह दावा किया था कि पत्नी प्रताड़ित कई पुरुष जेलों में बंद हैं, लेकिन कानून के एकतरफा रुख और समाज में हंसी के डर से वे खुद के ऊपर होने वाले घरेलू अत्याचारों के खिलाफ आवाज नहीं उठा रहे हैं। प्रश्न है कि आखिर पुरुष इस तरह की अपेक्षाएं क्यों महसूस कर रहे हैं? लगता है पुरुष अब अपने ऊपर आघातों एवं उपेक्षाओं से निजात चाहता है। तरह-तरह के कानूनों ने उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाया है। जबकि आज बदलते वक्त के साथ पुरुष अब अधिक जिम्मेदार और संवेदनशील हो चुका है। कई युवा पुरुष समाज-निर्माण की बड़ी जिम्मेदारियों को उठा रहे हैं और अपनी काबिलीयत व जुनून से यह साबित भी कर रहे हैं।

आज का पुरुष सिर्फ खुद को नहीं बल्कि महिलाओं के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ता है। वह यह सुनिश्चित कर रहा है कि उन्हें भी आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें व उन्हें किसी भी भेदभाव का सामना न करना पड़े। यह परिवर्तन आज सभी इंडस्ट्री जैसे मीडिया, हॉस्पिटैलिटी, बैंकिंग, उद्योग, व्यापार आदि में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है, जहां महिलाएं शीर्ष पदों पर काम कर रही हैं। सिर्फ यही नहीं पुरुषों को अब महिलाओं के नेतृत्व में कार्य करने में भी झिझक नहीं महसूस होती। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इस दिवस को मान्यता देते हुए इसकी आवश्यकता को बल दिया और पुरजोर सराहना एवं सहायता दी है। एक तरफ जहां महिलाएं सशक्त हो रही हैं, वहीं पुरुषों की भी छवि समाज में बदलती जा रही है। कुछ वर्ष पूर्व की बात करें तो पुरुषों को लेकर समाज में ढेरों रुढ़िवादी विचार थे, महिलाओं के शोषण एवं उसे दोयम दर्जा दिये जाने का आरोप उस पर लगता रहा है। जिनमें अब तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। पुरुष एक ऐसा शब्द जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी जहां जीवन को परिपूर्णता देती है तो वहीं पुरुष ही इसका आधार है। नारी जन्मदात्री है तो पुरुष जीवन-निमार्ता है।

भारतीय समाज में ह्यमर्द को दर्द नहीं होताह्न या फिर जब कोई पुरुष रोता है तो ह्यमर्द बनो और रोना बंद करोह्न जैसी बातें बोली जाती हैं। पिछले कई सालों से पुरुषों की समाज में संघर्षशील व कठोर छवि को प्रस्तुत किया गया है। लेकिन मुख्य सवाल है कि आखिर मर्द या पुरुष हैं कौन? जो घोड़े दौड़ाता है, शिकार करता है, या फिर जो अच्छे सूट में, चमचमाती कार में ऑफिस जाता है और घर पर भी अपनी तारीफ ही सुनना चाहता है। एक रौबदार छवि, आक्रांता, शोषक, असंवेदनशीलता एवं अत्याचारी वाली उसकी छवि क्या वास्तविक छवि है? असल में पिछले कुछ वर्षों में मर्द की परिभाषा में एक उदारवादी एवं संवेदनशील बदलाव देखने को मिला है। अब पुरुष या मर्द वो नहीं जो हमें अब तक पूर्वाग्रही रूढ़िवादी मानसिकता बताती हैं, बल्कि उससे कहीं ज्यादा वो है ऐसा आधारस्तंभ है जो जिम्मेदारी उठाता है, जो सिर्फ चमकदार जूते एवं कपड़े ही नहीं पहनता बल्कि समाज व देश को भी चमकदार बनाने के लिए आगे आता है, परिवार की जिम्मेदारियों को ढोता है। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस एक वार्षिक कार्यक्रम है जो पुरुषों और लड़कों की चुनौतियों और अनुभवों को पहचानने और उनका समाधान करने के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य, सकारात्मक पुरुषत्व और लैंगिक समानता के बारे में बातचीत को प्रोत्साहित करता है। पुरुषों के मुद्दों को संबोधित करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया जाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि लैंगिक समानता एक सामूहिक प्रयास है, जिससे पुरुष और महिला दोनों को लाभ होता है, तथा पुरुषों की भलाई पर ध्यान देना इस यात्रा का एक अनिवार्य हिस्सा है। समाज रूपी गाड़ी को सही से चलाने के लिए यह बेहद जरूरी है कि महिलाएं उसका विरोधी होने के बजाय सहयोगी बनें। उन्हें किसी भी भेदभाव का सामना न करना पड़े। मानवीय रिश्तों में दुनिया में सबसे बड़ा स्थान मां के रूप में नारी को दिया जाता है, लेकिन एक बच्चे को बड़ा और सभ्य बनाने में उसके पिता के रूप में पुरुष का योगदान कम करके नहीं आंका जा सकता। महिला ममता का सागर है पर पुरुष उसका किनारा है। महिला से ही बनता घर है पर पुरुष घर का सहारा है। महिला से स्वर्ग है महिला से बैकुंठ, महिला से ही चारों धाम है पर इन सब का द्वार तो पुरुष ही है। उन्हीं पुरुषों के सम्मान में पुरुष दिवस मनाया जाता है।

दुनिया के दूसरे देशों की तरह भारत भी घरेलू हिंसा की समस्या से जूझ रहा है। महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा को रोकने के लिए कठोर कानून भी बने हैं, लेकिन पुरुष भी घरेलू हिंसा का शिकार होते हैं। भारत में अभी तक ऐसा कोई सरकारी अध्ययन या सर्वेक्षण नहीं हुआ है जिससे इस बात का पता लग सके कि घरेलू हिंसा में शिकार पुरुषों की तादाद कितनी है लेकिन कुछ गैर सरकारी संस्थान इस दिशा में जरूर काम कर रहे हैं। ह्यसेव इंडियन फैमिली फाउंडेशनह्न और ह्यमाई नेशनह्न नाम की गैर सरकारी संस्थाओं के एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि भारत में नब्बे फीसद से ज्यादा पति तीन साल की रिलेशनशिप में कम से कम एक बार घरेलू हिंसा का सामना कर चुके होते हैं। इस रिपोर्ट में यह भी तथ्य सामने आया है कि पुरुषों ने जब इस तरह की शिकायतें पुलिस में या फिर किसी अन्य प्लेटफॉर्म पर करनी चाही तो लोगों ने इस पर विश्वास नहीं किया और शिकायत करने वाले पुरुषों को हंसी का पात्र बना दिया गया। लेकिन यह एक सच्चाई है कि अब महिलाओं की भांति पुरुष भी हिंसा, उत्पीडन एवं उपेक्षा के शिकार है। वे भी अपने अस्तित्व की सुरक्षा एवं सम्मान के लिये आवाज उठाना चाहते हैं। बड़ा सच है कि जीवन में जब भी निर्माण की आवाज उठेगी, पौरुष की मशाल जगेगी, सत्य की आंख खुलेगी तब हम, हमारा वो सब कुछ जिससे हम जुड़े होंगे, वो सब पुरुष का कीमती तौहफा होगा, इस अहसास को जीवंत करके ही हमें पुरुष-दिवस को मनाने की सार्थकता पा सकेंगे।

# सहकारी मंच : बढ़ रही भारत की अहमियत

नितिन प्रधान

गरीब कल्याण और समाज के निचले तबके के लिए समृद्धि का रास्ता खोलने में सहकारिता की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण है। डेयरी, खाद और बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में सहकारिता की सफलता के बाद अब बारी अन्य क्षेत्रों की है। सहकारिता के महत्त्व को समझते हुए सरकार ने इसके लिए अलग से मंत्रालय का गठन भी किया है।

बीते तीन वर्ष में सहकारिता क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं। संभवतः यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) को वैश्विक सहकारी सम्मेलन कराने के लिए इस वर्ष भारत आना पड़ा। सहकारिता के बढ़ते महत्त्व को संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी स्वीकारा है, और 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की है। नई दिल्ली में 25 नवम्बर से होने वाला वैश्विक सहकारी सम्मेलन-2024 दुनिया भर के सहकारिता क्षेत्र में भारत की स्थिति को और मजबूत करेगा। आईसीए की स्थापना (1895) के 130 वर्षों के इतिहास में पहली बार यह आयोजन भारत में होने जा रहा है। भारत आईसीए का संस्थापक सदस्य है। आईसीए सहकारी समितियों का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष वैश्विक संस्था है, जिसकी संख्या दुनिया भर में 30 लाख से ज्यादा है। विश्व में 107 देशों के 310 से अधिक संगठन अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन के सदस्य हैं।

इस सम्मेलन की मेजबानी की बागडोर विश्व की अग्रणी सहकारी संस्था इफको समेत देश की 17 प्रमुख सहकारी संस्थाओं के हाथों में है। महत्त्वपूर्ण यह भी है कि यह सम्मेलन सहकार से समृद्धि के भारत के संकल्प को पूरी दुनिया में ले जाएगा। आईसीए ने भी इस सम्मेलन का थीम 'सहकारिताएं-सबकी समृद्धि का द्वार' तय किया है। इस सम्मेलन में भारतीय गांवों की थीम पर बने 'हाट' में भारतीय सहकारी उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन किया जा रहा है। बहुत संभव है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस सम्मेलन के दौरान 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाए जाने की औपचारिक घोषणा और इस विषय पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी करें।

मोदी सरकार ने सहकारिता क्षेत्र में पिछले तीन वर्ष में दर्जनों महत्त्वपूर्ण बदलाव कर इसे नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। सहकारी आंदोलन को गति प्रदान करने के लिए नये मंत्रालय का भी गठन किया गया। सहकारी क्षेत्र के संस्थानों के पुनर्गठन और निष्क्रिय हो चुकीं प्राथमिक सोसाइटियों को पुनर्जीवित किया गया है। मॉडल बायलॉज से प्राथमिक कृषि ऋण सोसाइटी (पैक्स) को ताकत दी गई और उनके कामकाज के दायरे को बढ़ाया गया। सहकारिता पर लागू टैक्स को तर्क संगत बनाया गया।

दुनिया में लगभग 30 लाख सहकारी समितियां हैं, जिनमें से करीब 8 लाख सहकारी समितियां यानी एक चौथाई से अधिक समितियां भारत में हैं। संयुक्त राष्ट्र के लगभग सभी सदस्य देशों के एक अरब से अधिक लोग इन समितियों के सदस्य हैं, जिनमें से 29 करोड़ से ज्यादा सदस्य भारत के हैं। सहकारिता क्षेत्र ने दुनिया भर में 21 करोड़ से ज्यादा लोगों को रोजगार दिया है। सहकारी समितियों की संख्या और उनके विस्तार की संभावनाओं के मामले में भारत का इतिहास गौरवशाली रहा है। भारतीय सहकारी प्रणाली में सबसे बड़ा परिवर्तन पैक्स के मॉडल बायलॉज का कार्यान्वयन है। सहकारिता क्षेत्र में तीन नई राष्ट्रीय बहुराज्यीय सहकारी समितियोंः राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड (एनसीओएल), राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (एनसीईएल) और भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (बीबीएसएसएल) के गठन ने भारत को वैश्विक सहकारिता आंदोलन में अग्रणी बना दिया है। इन पहल ने दूसरे देशों का ध्यान खींचा है।

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के दौरान जहां संयुक्त राष्ट्र के निर्धारित लक्ष्य को सहकारिता के माध्यम से पूरा करने की रूपरेखा तैयार की जाएगी, वहीं सहकारिता के वैश्विक सम्मेलन में इन सभी लक्ष्यों पर व्यापक चर्चा भी कराई जाएगी। लोगों के जीवन स्तर में सुधार के साथ ही वैश्विक चिंताओं को दूर करने को लेकर तैयार बिंदुओं पर भी गंभीर विचार-विमर्श किया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र ने 17 सतत विकास लक्ष्य चिन्हित किए हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए सहकारी समितियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। इनमें पारिस्थितिकी संतुलन, स्थिर आजीविका, गरीबी उन्मूलन, सामुदायिक विकास एवं सहयोग, मिट्टी की सेहत एवं जीवन, महिला सशक्तिकरण सहित प्राकृतिक संसाधनों पर सभी का समान अधिकार आदि विषयों को शामिल किया गया है। सहकारिता वर्ष मनाए जाने का प्रमुख उद्देश्य इन्हीं लक्ष्यों को पूरा करना है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 2030 तक की समयावधि निर्धारित की गई है। इसमें सहकारी क्षेत्र की भूमिका पहले ही निर्धारित कर दी गई है, जिससे सम्मेलन का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

# कुंभकर्ण टेक्नोक्रेट था, रावण ने अफवाह उड़ाई : राज्यपाल

## प्रयागराज में महाकुंभ के पहले गंगा&यमुना की स्वच्छता बनाए रखने को दिन-रात चल रहा काम

लखनऊ में कहा- वो 6 महीने सोता नहीं, बल्कि गुप्त यंत्र बनाता था

लखनऊ। 'कुंभकर्ण टेक्नोक्रेट (तकनीक का विशेषज्ञ) था। वह 6 महीने सोता नहीं, बल्कि गुप्त तरीके से रिसर्च करके यंत्र बनाता था। रावण ने लोगों से यह बात छिपाने के लिए अफवाह उड़ाई थी कि कुंभकर्ण 6 महीने सोता है। रावण ने किस विमान से सीता का अपहरण किया था? क्या आपने कभी सोचा। यह 5 हजार साल पुराना ज्ञान है, जिससे हमें दूर रखा गया। आज यह नॉलेज हमारे पास नहीं है, लेकिन किताबों में लिखा है। यह बातें राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने सोमवार को लखनऊ के ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के 9वें दीक्षांत समारोह में कहीं। उन्होंने 149 छात्रों को मेडल दिए। इसके अलावा 1421 छात्रों को डिग्री दी। दो महीने पहले मैं रामपुर की रजा लाइब्रेरी गई थी। मैंने वहां दो हजार साल पुरानी किताबें देखी, जिसमें रंगीन चित्र बने थे। उसमें केमिकल का इस्तेमाल नहीं हुआ था। ये सभी चित्र वनस्पतियों से बनाए गए थे। पीएम मोदी की लीडरशिप में यूक्रेन में फंसे हुए विद्यार्थियों लाया गया। रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ तो तमाम देश किसी एक के पक्ष में आ गए।

भारत ने ऐसा नहीं किया। हमने हमेशा शांति की बात की। युद्ध के दौरान घायलों को दवा, खाना और कपड़े भेजने में भारत आगे रहा। पीएम मोदी को कई देशों ने सर्वश्रेष्ठ अवॉर्ड देकर सम्मानित किया है। कल ही उन्हें 19वें देश ने सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार दिया। ये पुरस्कार पाना आसान नहीं होता। 5 करोड़ की जनसंख्या वाले राष्ट्र को यह मिलना आसान है, लेकिन 140 करोड़ की जनसंख्या वाले के लिए बेहद कठिन है। उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी ने कहा- जब हम किसी भाषा को पढ़ना और बोलना बंद कर देते हैं, तो वो विलुप्त हो जाती है। ऐसे में उसकी मौत हो जाती है। मेरा यही कहना है कि आप सभी लोग ईमानदारी से काम करें।

उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने कहा- कोई ऐसी शिक्षा नहीं हो सकती कि जो 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' के नारे लगवाए। रेल की पटरियों पर बड़े अवरोध डाल दे। ऐसा कोई शिक्षण संस्थान नहीं है। शिक्षा इंसान बनाती है। इंसानियत को अपनाना सिखाती है। हैवान नहीं बनाती। राष्ट्र के दायित्व के निर्वहन का बोध सीखाती है। कुलपति प्रो. एनबी सिंह ने कहा- इस सत्र में 73 शोधपत्र प्रकाशित हुए। इसके अलावा 2 राष्ट्रीय और 2 इंटरनेशनल लेवल के पेटेंट हासिल किए गए। गांव को गोद लेने के बाद विश्वविद्यालय में ज्ञान पाठशाला का भी आयोजन किया जा रहा है। 5 क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई की शुरूआत करने के साथ भाषा विज्ञान का कोर्स भी शुरू किया जाएगा। लीगल ऐड सेंटर भी स्थापित किया जाएगा। प्रो. शिशिर सिन्हा ने कहा- भारत में सबसे ज्यादा यूथ पॉपुलेशन है। सबसे तेज बढ़ती इकोनॉमी भी है। स्टार्टअप और इनोवेशन के साथ आपको सीखना चाहिए। मेरा मानना है कि जब मैंने सीखना छोड़ दिया, मेरी जिंदगी में ठहराव हो गया। भारत लंबे समय से वैल्यू बेस एजुकेशन का गढ़ रहा है।

## हिन्दू सनातन एकता संगठन महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष बनीं प्रतिमा मिश्रा

संवाददाता

**कुशीनगर।** हिन्दू सनातन एकता संगठन महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष रेखा के निर्देशन में प्रदेश अध्यक्षा मोहिनी जी ने श्रीमती प्रतिमा मिश्रा को जनपद कुशीनगर का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है। कुटुंब एप से श्रीमती मिश्रा ने अपना परिचयपत्र भी प्राप्त कर लिया है। कसया तहसील क्षेत्र अंतर्गत झुग्वा निवासिनी श्रीमती मिश्रा पत्नी सूर्य प्रकाश मिश्रा हिन्दू, धर्म, संस्कृति, परंपरा के निर्वहन, जागरूकता को लेकर हमेशा सजग रहती हैं। उनके सांगठनिक क्षमता को देखते हुए संगठन ने महिला विंग के जिलाध्यक्ष कुशीनगर की जिम्मेदारी सौंपी है। संगठन ने आशा व्यक्त किया है कि आप पूरी ईमानदारी व निष्ठा से संगठन के कार्यों को आगे

बढ़ाएगी। उनके मनोनयन पर संगठन के राष्ट्रीय सचिव सीडी सिंह, राष्ट्रीय सचिव दीपेश, राष्ट्रीय कार्यकारिणी कुसुमलता, प्रदेश प्रभारी मनोज, जिलामंत्री संजय कुमार, जिला मंत्री बिनोद सहित मोर्चा पदधिकारियो ने खुशी व्यक्त की है।

## भारतीय जनता पार्टी के संगठन चुनाव की प्रक्रिया शुरू

संवाददाता

**कुशीनगर।** भारतीय जनता पार्टी का संगठन चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है। पार्टी द्वारा इसे संगठन पर्व नाम दिया गया है। संगठन पर्व के अन्तर्गत सबसे पहले सक्रिय सदस्यों की सूची जारी होगी और नवम्बर महीने में सभी बूथों का गठन किया जाएगा। सोमवार को रविन्द्र नगर भाजपा कार्यालय में सक्रिय सदस्यता के जिला सत्यापन अधिकारी देवरिया जिले के पूर्व जिलाध्यक्ष अन्तयार्मी सिंह, जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय, सह सत्यापन अधिकारी पूर्व जिलाध्यक्ष जयप्रकाश शाही तथा जिला मंत्री विवेकानंद शुक्ल द्वारा सभी 34 मण्डलों से आए सक्रिय सदस्यता फार्म का सत्यापन किया गया। जिला सत्यापन अधिकारी अन्तयार्मी सिंह ने कहा कि भारतीय

जनता पार्टी एकमात्र ऐसी राजनीति पार्टी है जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास करते हुए पार्टी के संविधान के अनुरूप बूथ, मण्डल, जिला, प्रदेश और राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव कराती है। कहा कि जो कार्यकर्ता कम से कम 50 प्राथमिक सदस्य बनाया हो और स्वेच्छा से पार्टी द्वारा निर्धारित सक्रिय सदस्यता शुल्क जमा किया हो वह पार्टी का सक्रिय सदस्य बन सकता है। भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा कि कुशीनगर जनपद में अबतक 2300 सक्रिय सदस्यता हेतु आवेदन जिला कार्यालय में प्राप्त हो चुका है जिसमें से 1290 आवेदन का सत्यापन कर दिया गया है और पहली सूची जिला कार्यालय पर चस्पा कर दिया गया है। शेष आवेदन पत्रों का सत्यापन कार्य चल रहा है। उन्होंने बताया कि जो भी कार्यकर्ता सक्रिय सदस्य बनना चाहता है वह अपने मण्डल अध्यक्ष के माध्यम से अपना आवेदन पत्र अतिशीघ्र जिला कार्यालय में जमा करा दें। सक्रिय सदस्यता की अगली सूची शीघ्र ही जारी किया जाएगा। इस अवसर पर जिला महामंत्री सुदर्शन पाल, जिला मीडिया प्रभारी विश्वरंजन कुमार आनन्द, आई टी विभाग जिला संयोजक नमो नारायण मौर्य आदि उपस्थित थे।

## विज्ञान प्रदर्शनी में दिखी बच्चों की प्रतिभा

संवाददाता

**कसया, कुशीनगर।** तहसील क्षेत्र के टेकुआटार स्थिति न्यू टैलेंट कोचिंग सेंटर के बच्चों द्वारा विज्ञान मेला एवं प्रदर्शनी में मॉडलों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिपंस प्रतिनिधि सतवंत यादव, ग्रामप्रधान राधेश्याम यादव ने फीता काट कर किया। जिपंस प्रतिनिधि श्री यादव ने कहा कि विज्ञान प्रदर्शनी से बच्चों की प्रतिभा में निखार आता है। ग्राम प्रधान राधेश्याम यादव ने कहा कि विज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक है। युवा विज्ञान के क्षेत्र में खुद को साबित कर रहे हैं। विज्ञान से बच्चों के लिए यह आयोजन सहायक साबित होगा। अंजुम इंटर कालेज के प्रबंधक शमसाद खान ने कहा कि विज्ञान के बिना विकास संभव नहीं है। अतिथियों ने बच्चों की ओर से बनाए गए द सोल्जर, डीएनए मॉडल, श्वसन तंत्र, ज्वालामुखी, सीवरेज वाटर, ट्रीटमेंट प्लांट एवं हार्ट मॉडल, वायु प्रदूषण, मानव उत्सर्जन तंत्र आदि का अवलोकन कर प्रयासों की सराहना

की। आयोजक मुलायम यादव व संस्था के डायरेक्टर छत्रसाल मदेशिया ने सभी का स्वागत किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अरविंद यादव, अनामिका द्वितीय स्थान कल्पना भगत, निभा राव और तृतीय स्थान मानसी और लकी ने प्राप्त किया। मरियम, अंकिता, अरबिना, साधना , रोशनी, अंजली, प्रीति, सपना, सिमरन,नूरसहिना, जुली, सूरज,साजिद, शिवम,निशा, नेहा, सबाना, नव्या, निधि,निशा, रंजन,गुन्जन, अरमान, साहिल, सुहेल, नैना, मनीषा, सोनम, शालु, गरिमा, शिवानी, काजल आदि बच्चों ने सफल रहे। सभी सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। अध्यक्षता शिक्षक शम्भू राव और संचालन धीरज राव ने किया। इस अवसर पर संदीप दुबे, आदित्य पांडेय,अंशु मिश्रा, पन्ने लाल यादव, रवि यादव, ओमप्रकाश यादव, रामलखन यादव, रामायण , विश्राम यादव, आदित्य त्रिपाठी, रमेश जायसवाल, यूथ आइकान प्रवीण गुप्त मौजूद थे।

## लखनऊः नाबालिग लड़की की गला घोंटकर हत्या

लखनऊ । 16 साल की नाबालिग लड़की की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। सोमवार सुबह इंदिरा नहर के किनारे लाश मिली तो सनसनी फैल गई। किशोरी के गले पर काले निशान हैं। डेड बॉडी पर चोट के निशान भी मिले हैं। घटना गोसाईगंज थाना क्षेत्र के भटवारा गांव की है। आज सुबह ग्रामीणों ने शव देखा तो हड़कंप मच गया। तत्काल मामले की सूचना ग्राम प्रधान और पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। आसपास के सीसीटीवी खंगाले जा रहे हैं। वहीं, मृतका के घर पर लोगों की भीड़ लग गई। मृतका की पहचना गोसाईगंज के भटवारा गांव की नाबालिग किशोरी रूमी (16) पुत्री शनीफ के तौर पर हुई है। मृतका चार भाई-बहन है और मां

का नाम नूरजहां है। पिता शनीफ जानवर खरीदने-बेचने के साथ ही मजदूरी करता है। पिता शनीफ के मुताबिक वह रविवार रात बिना बताए घर से निकली थी, किसी को कुछ भी पता नहीं था। सुबह इंदिरा नहर के किनारे उसका शव मिला तो हम हैरान रह गए। बता दें, कि युवती के गले पर गला कसने के निशान पाए गए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है, कि गला घोंटकर हत्या की गई है। हत्या से पहले युवती ने अपने हत्यारों के साथ संघर्ष भी किया था। शव पर संघर्ष के निशान भी मिले हैं, जो यह संकेत देते हैं, कि उसने बचने की पूरी कोशिश की थी। घटना की सूचना मिलते ही गोसाईगंज पुलिस मौके पर पहुंची और इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। इस घटना से गांव के लोग डरे और सहमे हुए हैं। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस पर जल्द से जल्द दोषियों को पकड़ने का दबाव बढ़ गया है। घटना ने एक बार फिर महिलाओं की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस की त्वरित जांच और कार्रवाई पर सबकी निगाह टिकी हुई है।

## 137 जोड़ों ने मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह के तहत लिये फेरे

संवाददाता

**हमीरपुर ।** उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत हमीरपुर के कुछेछा स्थित राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 137 जोड़ों का सामूहिक विवाह सौहार्दपूर्ण माहौल में विधि विधान मंत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें 136 हिंदू जोड़े सहित एक मुस्लिम जोड़ा शामिल हुआ। कार्यक्रम में मौजूद सभी अतिथियों ने नवविवाहित वर-वधू को सुखद जीवन के लिए आशीर्वाद देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत भव्य पंडाल में सामूहिक विवाह कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी घनश्याम मीना सहित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कुछेछा स्थित राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित सामूहिक विवाह

कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने गणेश जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के साथ ही दीप प्रज्वलन कर किया। विवाह कार्यक्रम में आए हुए जोड़ों को प्रमाण पत्र अतिथियों द्वारा वितरित किया गया इस मौके पर नवविवाहित जोड़ो को जिलाधिकारी सहित अन्य अतिथियों ने पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया गया। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत गरीब परिवार की पुत्रियों का विवाह कराया जाता है, जबकि प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री ने केन्द्र,राज्य सरकार तरफ से चलाई जा रही फायदेमंद जनकल्याणकारी योजनाओं का फायदा पात्र लाभार्थियों तक पहुँचे। महिलाओं को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की जा रही है साथ ही उनको रोजगार मुहैया कराया जा रहा है। उन्होने कहा कि प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना से समाज के अन्तिम छोर पर खड़े गरीब व्यक्ति तक लाभ पहुँच रहा है। इसके अलावा इस विवाह समारोह में सभी लोगो का आपसी

सामंजस्य एक-दुसरे के प्रति लगाव को दशार्ता है।

जिसके तहत जनपद के विभिन्न धर्म तथा समुदाय के लोगों ने समारोह में हिस्सा लिया। जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना कार्यक्रम में उपस्थित सभी नवविवाहित वर-वधू को उनके सुखद जीवन के लिए आशीर्वाद देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, निराश्रित/निर्धन परिवारों के विवाह योग्य कन्याओं के लिए मा0 मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना प्रदेश के अंदर निवास करने वाले सभी समुदायों व वर्गों के व्यक्तियों के लिए संचालित है। गरीबी रेखा के नीचे निवास करने वाले परिवार जिनकी वार्षिक आय दो लाख (2,00000) रुपए से कम है वे सभी लाभ लेने के लिए अनुमन्य हैं। उन्होंने बताया कि योजनान्तर्गत प्रत्येक जोड़े पर रू0 51,000 का प्रावधान है। जिसमें संबंधित वधू पक्ष अर्थात कन्या को रू0 35,000 हजार की अनुदान राशि उनके स्वयं के बैंक खाते में अन्तरित की जाती है तथा रू0 10,000 में वधू पक्ष को विवाह हेतु सामग्री जैसे चांदी की पायल, बीछिया, डिनर सेट, कपड़े, कम्बल इत्यादि दिये जाते हैं तथा रू0 6,000 हजार खान-पान, टैंट पण्डाल आदि की व्यवस्था पर व्यय होता है। उन्होंने बताया कि रजिस्ट्रेशन अधिकारी के द्वारा सभी जोड़ों का विवाह पंजीकरण भी किया जाता है।

इस मौके पर कार्यक्रम में सीडीओ चंद्र शेखर शुक्ला,पीडी साधना दीक्षित ,राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ वंदना ,ब्लाक प्रमुख मौदहा ,कुरारा,सुमेरपुर, नगर पंचायत अध्यक्ष कुरारा,भाजपा के अन्य पदाधिकारी, विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी सहित बडी संख्या में मौजूद अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य लोगों ने नवविवाहित दम्पतियों को शुभकामनायें दी।

## संक्षिप्त डायरी

### घने कोहरे में ट्रक से भिड़ी बाइक, एक की मौत, एक गम्भीर

संवाददाता

**कसया, कुशीनगर।** थाना क्षेत्र के नगर पालिका परिषद कुशीनगर के वार्ड नं 3 संत गाडगे नगर (सपहा नौका टोला) में घने कोहरे की वजह से एक बाइक सड़क किनारे खड़ी ट्रक से भिड़ गई जिससे दो घायल हो गए। जिनमें इलाज के दौरान एक की मौत हो गयी जबकि एक की हालत नाजुक बताई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार रविवार की देर रात कसया - तुर्कपट्टी मार्ग पर खरदर पुल के पास घने कोहरे के कारण बाईक संख्या सड़क किनारे खड़ी गन्ना लदी खड़ी ट्रक से भीड़ गयी। जिससे बाइक सवार सुरेश पटेल पुत्र श्रीनाथ पटेल (50 वर्ष) निवासी सबया थाना कसया व सचिन कुमार गौड पुत्र रामबली गौड (25 वर्ष) निवासी गोपालगढ थाना कसया गम्भीर रूप से घायल हो गये। सूचना पर पहुँची पुलिस ने घायलों को ईलाज हेतु सीएचसी कसया भेजवाया तथा परिजनों को सूचित किया गया। ईलाज के दौरान चिकित्सकों ने सुरेश पटेल को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस द्वारा परिजनों की उपस्थिति में मृतक के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा बनवाकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। उधर घायल सचिन की हालत नाजुक देखते हुए जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया।

### जीवन में गुरु का स्थान सर्वोच्चः अतुल कृष्ण भारद्वाज

संवाददाता

**कसया, कुशीनगर।** फाजिलनगर के अमवा श्री दूबे में चल रहे नव दिवसीय श्री श्री 1008 रुद्र महायज्ञ के पहले दिन का शुभारंभ अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ हुआ। इस अवसर पर श्रीधाम वृंदावन से पधारे प्रसिद्ध मानस मर्मज्ञ कथा व्यास अतुल कृष्ण भारद्वाज जी महाराज ने अपनी मधुर वाणी से उपस्थित श्रद्धालुओं को आध्यात्मिकता की गहराइयों में डुबकी लगवाई। प्रथम दिवस की कथा में महाराज जी ने गुरु और नाम की महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जीवन में गुरु का स्थान सर्वोच्च है और गुरु द्वारा दिए गए नाम का सुमिरन जीवन को कृतार्थ कर देता है। उन्होंने कहा, गुरु का दिया हुआ नाम आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का सेतु है। यह नाम ही साधक को भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है। महाराज जी ने भक्ति और भावना के महत्व को भी स्पष्ट करते हुए कहा कि भगवान केवल भक्त की भावना और निष्ठा को देखते हैं। कथा के दौरान उन्होंने कहा, जिसके हृदय में सच्ची भक्ति की भावना हो, वह भगवान के सबसे करीब है। कथास्थल पर भक्तों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही, और भक्तों ने महाराज जी की वाणी को ध्यानपूर्वक सुना। पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा और जय श्री राम के जयकारों से गूंजायमान हो गया। महायज्ञ के आयोजकों ने बताया कि यह आयोजन क्षेत्र में शांति, समृद्धि और धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से किया जा रहा है। कथा प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से शुरू होकर शाम तक चलेगी, और इसमें महाराज जी विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन करेंगें इस दौरान काशी से पधारे यज्ञाचार्य पंडित त्रिभुवन पांडेय,मुख्य यजमान हिरण्यगर्भ द्विवेदी पंकज, ज्ञानेश्वर द्विवेदी दीपक,हृषिकेश द्विवेदी, चित्रसेन द्विवेदी, अशर्फी गुप्ता, जीतन गौड़, उपेंद्र दूबे, ग्राम प्रधान राकेश द्विवेदी समेत गांव वासी व श्रद्धालु उपस्थित रहे।

### गन्ना क्रय केंद्र डुम्मर भार में पूजन अर्चन के साथ शुरू हुई गन्ने की तौल

संवाददाता

**कुशीनगर।** पडरौना तहसील क्षेत्र के डुम्मर भार में पेराई सत्र 2024 2025 में गन्ने की सप्लाई को लेकर गन्ना तौल केंद्र ढाढा चीनी मिल का शुभारंभ विधिवत पूजन अर्चन के साथ मिल के अधिकारियों और किसानों द्वारा पूजन अर्चन कर किया गया। सोमवार की सुबह क्रय केंद्र डुम्मर भार में स्थापित गन्ना तौल कांटे का शुभारंभ होने के पश्चात तौल शुरू किया गया। एरिया मनैजर सचितानंद पाण्डेय ने किसानों को तौल के बारे मे बताते हुए कहा की पर्ची मिलने पर ही गन्ने की कटाई करें और बिना मैसेज प्राप्त हुए कन्ने की कटाई न करें। 36 कु. की मोड़ पे 40 कु. की तौल होंगी। भरी गाड़ी 50 कु. खाली गाड़ी 10 कुंतल, शुद्ध गन्ने का वजन 40 कुंतल की पर्ची बनेगी इस प्रक्रिया का आपको मैसेज प्राप्त होगा। तौल के दिनांक से 72 घंटे तक मान्य रहेगी। उस के बाद उस पर्ची को निरस्त कर दिया जाएगा। इस लिए समय से पहले साफ सुथरा ताजा गन्ना लाए। अधिकारियों व किसानों का स्वागत एरिया सुपरवाइजर सुशील वर्मा सेंटर इंचार्ज आर्यन शर्मा व राजेश ने करते हुए किसानों से सहयोग की अपील की। इस अवसर पर सचितानन्द तिवारी,मनीष सिंह, होशील यादव, मुबारक, अफरोज, कमुरुदिन,राजकुमार, शैलेन्द्र, हदीस, गोबरी व स्थानीय किसान मौजूद रहे।

### गोरखपुर में फर्जी रेप का केस दर्ज कराकर वसूली

**गोरखपुर ।** फर्जी रेप का केस दर्ज कराकर एक बार फिर ब्लैकमेलिंग का मामला सामने आया है। इस बार युवती ने एक होटल के मैनेजर पर फर्जी रेप का केस दर्ज कराया और फिर उससे तीन लाख रुपए की मांग करने लगी। घटना कैंट इलाके के मोहद्दीपुर स्थित एक होटल के मैनेजर के साथ हुई। लेकिन जब पुलिस ने मामले की पड़ताल शुरू की तो कुछ और हकीकत कुछ और निकली। मैनेजर ने भी पुलिस के सामने अपने बेगुनाही के तमाम सबूत पेश किए। ऐसे अब पुलिस ने युवती के खिलाफ ही केस दर्ज कर लिया है। वहीं इस मामले में एक लेडी पुलिसकर्मी पर भी युवती के साथ ब्लैकमेलिंग में शामिल होने का आरोप लगा है। मोहद्दीपुर के एक होटल के मैनेजर ने पुलिस को बताया कि एक युवती ने पहले उन पर दुष्कर्म का आरोप लगाकर मामला दर्ज कराया। इसके बाद, 3 लाख रुपये की मांग की गई। युवती ने पुलिस विभाग के दीवान के साथ मिलकर झूठे आरोप गढ़े और उन्हें डराने की कोशिश की। लेकिन मैनेजर ने साक्ष्य जुटाकर अपनी बात पुलिस के सामने रखी। पुलिस जांच में दोनों पक्षों के बीच सहमति से संबंध होने की बात सामने आई है। लेकिन, मोबाइल रिकॉर्डिंग से यह स्पष्ट हुआ कि युवती और उसके साथी वसूली के लिए यह सब कर रहे थे।

# 22 नवंबर से खुलेगा एनवायरो इंफ्रा इंजीनियर्स का आईपीओ, प्राइस बैंड 140 से 148 रुपए प्रति शेयर

नई दिल्ली।

जल उपचार संयंत्रों, सीवेज उपचार संयंत्रों और सामान्य प्रदूषित जल उपचार संयंत्रों का निर्माण करने वाली कंपनी एनवायरो इंफ्रा इंजीनियर्स लिमिटेड का आईपीओ इस सप्ताह 22 नवंबर को खुलेगा। निवेशक इस आईपीओ में 26 नवंबर तक बोली लगा सकेंगे।

इसका प्राइस बैंड 140 से 148 रुपए प्रति शेयर और इश्यू का आकार 3.87 लाख इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू और 52.68 लाख शेयरों का ऑफर फोर सेल) होगा। इस आईपीओ की कुल वैल्यू 650.43 करोड़ रुपए है। एंकर इनवेस्टर्स 21 नवंबर को बोली लगाएंगे। पब्लिक इश्यू 22 से 26 नवंबर तक है। रिटेल निवेशक कम से कम 101 शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं, और इसके बाद 101 के गुणकों में बोली लगानी होगी।

50 फीसदी योग्य संस्थागत खरीदारों (क्यूआईबी) के लिए 15 फीसदी गैर-संस्थागत निवेशकों (एनआइआइ) के लिए और 35 फीसदी रिटेल निवेशकों के लिए आरक्षित होगा। कंपनी इस निर्गम से प्राप्त राशि का उपयोग कार्यशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करने, मथुरा सीवरेज योजना के तहत 60 एमएलडी एसटीपी के निर्माण और कुछ ऋण चुकाने के लिए करेगी।

इस आईपीओ का ग्रे मार्केट में कोई प्रीमियम कोट नहीं है, यानी यह बिना किसी प्रीमियम पर कारोबार कर रहा है। यह आईपीओ पानी और जल पुनर्चक्रण क्षेत्र में काम करने वाली कंपनी के लिए एक अच्छी पहल है और निवेशकों के लिए एक अवसर हो सकता है, विशेष रूप से जल आपूर्ति और उपचार से संबंधित परियोजनाओं में बढ़ते निवेश के दृष्टिकोण से।

# अमेरिका की जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी भारत में स्थापित कर सकती है कैंपस

## - जेएचयू के प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात की

नई दिल्ली।

अमेरिकी उच्चतम शिक्षा संस्थान जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी (जेएचयू) ने भारत में कैंपस स्थो पित करने की योजना बनाई है। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव की चर्चा के लिए जेएचयू के प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात की। इस मुलाकात में जेएचयू के अध्यक्ष रोनाल्ड जे. डेनियल के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भारत आया। इस मंडल में जेएसयू की आंतरिक इकाई, गुप्ता स्की इंडिया इंस्टीट्यूट के अधिकारी भी शामिल थे। इस मुलाकात का मुख्य उद्देश्य जेएचयू समुदाय को भारत में भागीदारों के साथ जोड़ना और लगातार उन्नति करना है।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस मुलाकात में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण पहलुओं पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि एनईपी 2020 भारतीय शिक्षा क्षेत्र के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

शिक्षा मंत्री ने जेएचयू की सराहना की और बताया कि इस साझेदारी से छात्रों और शिक्षकों के बीच नए क्षेत्रों में अनुसंधान की सहायता होगी। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार जेएसयू के साथ एक भारतीय कैंपस की स्थापना के लिए चर्चा की गई। इस चर्चा में गुप्ता और उनकी टीम ने भारत-अमेरिका शैक्षिक सहयोग के महत्व को उजागर किया। जेएसयू की यह प्रतिनिधिमंडल भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ गहरी साझेदारी को मजबूत करने के लक्ष्य में भारत में विभिन्न संस्थानों का दौरा करेगा। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव के साथ यह मंडल सरकार के अधिकारियों, शिक्षाविदों और कांसुलर प्रतिनिधियों के साथ भी बातचीत करेगा। जेएचयू के भारतीय मूल के कुछ प्रमुख फैकल्टी सदस्यों ने भी इस बहस में भाग लिया।

# एलजीबीआई हवाई अड्डे पर 1.74 लाख यात्रियों की आवाजाही

## - एलजीबीआई हवाई अड्डे पर सामान्य दिनों में 127 उड़ानें चलाई जाती हैं

गुवाहाटी ।

गुवाहाटी स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर छह नवंबर से 10 दिनों में 1.74 लाख यात्रियों की आवाजाही हुई। अदाणी समूह ने दोस्ती भरे बयान में आते हुए जानकारी दी कि इस हवाई अड्डे ने इस सप्ताही समय में 1,202 उड़ानें संचालित की गई और यात्रियों के लिए सुचारू सेवाएं उपलब्ध कराई गई। कंपनी ने अपनी सफलता का जश्न मनाते हुए कहा कि 14 नवंबर को हमारे अड्डे पर साल के सर्वाधिक 20,413 यात्रियों की सेवाएं दी गई और 146 फ्लाइट ऑपरेशंस सफलतापूर्वक संपन्न हुए। एलजीबीआई हवाई अड्डे पर सामान्य दिनों में 127 उड़ानें चलाई जाती हैं जिससे दिन-प्रतिदिन लगभग 17,500 यात्री इस्तेमाल करते है। यात्रियों के बढ़ते संख्या को देखते हुए, अदाणी समूह ने स्पष्ट कहा कि वे सुनिश्चित करेंगे कि यातायात का सुचारू प्रबंधन जारी रहे ताकि यात्री सुरक्षित और सुविधाजनक ढंग से यात्रा कर सकें। मेवाड़ी एलजीबीआई हवाई अड्डे पर यात्रियों की उल्लसित परिवार यहां खूबसूरत ताजमहल को देखने की आवाजाही कर रहे हैं। उन्होंने साझा किया कि इस स्थल पर उन्होंने अपने परिवार के साथ बहुत अच्छे अनुभव किए हैं और उन्हें अपने अगले यात्रा की योजना भी यही रखना है। इस तरह सफलतापूर्वक चल रहे हवाई अड्डे का यात्रियों द्वारा स्वागत है। नवंबर माह ने स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय यात्रियों को एक स्तर पर मिलाकर परिवारिक सुखद अनुभव प्रदान किया है।

# भारत की आर्थिक वृद्धि 6 तिमाहियों के निचले स्तर पर आने की आशंका

## जून तिमाही के दौरान अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत थी

नई दिल्ली ।

भारत की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में सितंबर 2025 के तिमाही में कमी हो सकती है, जैसा कि उच्च संकेतकों से पता चलता है। विनिर्माण क्षेत्र में सुस्ती के कारण यह संभावना है कि अर्थव्यवस्था का निचला पड़ता रह सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने जून तिमाही के दौरान अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत बताई थी, परंतु अपने अक्टूबर के बुलेटिन में इसे 6.8 प्रतिशत कम कर दिया। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने मौद्रिक नीति समीक्षा के बाद 7 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान रखा था। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने 29 नवंबर को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़े जारी करने का ऐलान किया है।

सितंबर तिमाही के दौरान औद्योगिक उत्पादन सूचकांक की वृद्धि दर 2.6 प्रतिशत पर आ गई है, जो जून तिमाही में 5.45 प्रतिशत थी। आर्थिक बाजार के मुख्य अर्थशास्त्री ने इस समय की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए और बताया कि जीडीपी वृद्धि में गिरावट की संभावना है, विशेषकर विनिर्माण क्षेत्र में। उन्होंने राजस्व और मुनाफों में भी सुस्ती के संकेत दिए।वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में सकारात्मक पहलुओं की अपेक्षा है, ग्रामीण मांग और सरकार के व्यय के माध्यम से वृद्धि को समर्थन मिलेगा। एफएमसीजी की बिक्री के बढ़ने के साथ, सरकार के व्यय में भी वृद्धि की संभावना है जो एक सकारात्मक संकेत हो सकता है।रिजर्व बैंक के परिदृश्य में कहा गया है कि आपूर्ति श्रृंखला पर दबाव कम हो रहा है, जिससे अनिश्चितता बढ़ रही है। भारतीय स्टेट बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है कि कुछ उच्च संकेतकों से सामने आ रही तस्वीर विवेचनीय है। जीडीपी वृद्धि और विनिर्माण क्षेत्र की स्थिति पर ध्यान देते हुए, भारतीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण पहलुओं पर नजर रखने की जरूरत है ताकि संभावित उतार-चढ़ावों का सामना किया जा सके।

# अक्टूबर के पहले पखवाड़े में बैंकों से 1.12 लाख करोड़ निकाले गए

## - मार्च से अक्टूबर तक बैंकों का जमा 7.7 फीसदी बढ़कर 220 लाख करोड़ रुपये के करीब

नई दिल्ली ।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नवीन आंकड़ों के मुताबिक अक्टूबर के पहले पखवाड़े में बैंकों से 1.12 लाख करोड़ रुपये निकाले गए हैं। इन पैसों का मुख्य इक्विटी बाजार में निवेश हुआ था। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का सेंसेक्स अक्टूबर में 6 फीसदी तक गिरा, जिससे निवेशकों को हानि हुई। यह गिरावट उन्हें सुरक्षित समझे जाने वाले बैंकों में निवेश करने के लिए प्रेरित करने लगी। सितंबर में बीएसई सेंसेक्स अपना रिकॉर्ड 85,800 के पार पहुंच गया था। उस समय बाजार में निवेश बढ़ रहा था और सूचीबद्ध कंपनियों की पूंजी 478 लाख करोड़ रुपये हो गई थी। आरबीआई के आंकड़े दर्शाते हैं कि अगस्त के अंत में बैंकों का कुल जमा 215.50 लाख करोड़ रुपये था। सितंबर के पहले हफ्ते में यह 45,000 करोड़ रुपये कम होकर 215.05 लाख करोड़ रह गया, लेकिन बाजार में गिरावट के चलते यह फिर बढ़ गया। बैंकों के कुल कर्ज में चार लाख करोड़ की वृद्धि देखी गई है, जबकि जमा में 5 लाख करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। मार्च से अक्टूबर तक बैंकों का जमा 7.7 फीसदी बढ़कर 220 लाख करोड़ रुपये के करीब है।

म्यूचुअल फंड में एसेट अंडर मैनेजमेंट की मूल्य 25.9 फीसदी बढ़ गई है, जबकि शेयर बाजार में निवेशकों के 47 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। बाजार पूंजीकरण 27 सितंबर को 477.90 लाख करोड़ रुपये था, जो अब 430.60 लाख करोड़ रुपये तक गिर चुका है।

# टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स भारत में आईफोन प्लांट में मेजॉरिटी स्टेक खरीदेगी

## - समझौते के तहत टाटा के पास 60 फीसदी हिस्सेदारी होगी

नई दिल्ली ।

टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने भारत में एकमात्र आईफोन प्लांट में मेजॉरिटी स्टेक खरीदने की घोषणा की है। यह कंपनी ताइवान की पेगाट्रॉन के साथ नया जॉइंट वेंचर बनाने की योजना बना रही है। इस समझौते के तहत टाटा के पास 60 फीसदी हिस्सेदारी होगी और वह जॉइंट वेंचर के ऑपरेशन्स की देखभाल करेगी। पेगाट्रॉन टेक्निकल सपोर्ट देने के लिए भागीदार रहेगा। पूरी दुनिया में ऐपल कंपनी की आईफोन की मांग बढ़ रही है और चीन-अमेरिका के बीच टेंशन के चलते ऐपल भारत में अपनी सप्लाई चेन को मजबूत करने हेतु कदम उठा रही है।` विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में अंगीकृत आईफोन उत्पादन में वृद्धि से भारतीय बाजार में उनका रवैया मजबूत होगा। यह समझौता साक्षरता और रोजगार के दृष्टि को भी बढ़ावा देगा और खिलाड़ी कंपनियों के लिए एक नया मानक स्थापित करेगा। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के इस कदम से भारत में डिजिटल उत्पादन क्षेत्र में नये उत्साह और संभावनाएं उमड़ने की संभावना है।

# टमाटर की होलसेल कीमतों में गिरावट शुरू

## - 14 से 20 रुपये किलो तक कम हुए टमाटर के दाम

नई दिल्ली । टमाटर की होलसेल कीमतों में गिरावट शुरू हो गई है, जिससे देशभर में खुदरा मूल्य में भी कई गिरावटें आई हैं। दिल्ली-एनसीआर में टमाटर की कीमत पिछले 10 दिनों में 80 रुपये से 60 रुपये प्रति किलोग्राम तक आ गई है। आधिकारिक बयान के मुताबिक, नवंबर के मध्य बाजार में टमाटर का औसत खुदरा मूल्य 52.35 रुपये प्रति किलोग्राम रहा जो कुछ हफ्ते पहले 67.50 रुपये प्रति किलोग्राम था। गिरावट की जानकारी के बाद देश के बड़े शहरों में भी खुदरा मार्केट में टमाटर की कीमतों में कमी देखने को मिल रही है। इसी अवधि के दौरान, दिल्ली की आजादपुर मंडी में मॉडल थोक मूल्य में लगभग 50 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। मंत्रालय ने बताया कि कई प्रमुख बाजारों से सूचना मिली है कि कीमतों में सुधार की संकेत मिल रहा है। कुल मिलाकर टमाटर की कीमतों में गिरावट के साथ-साथ उत्पादन में भी वृद्धि की संभावना है। वित्त वर्ष 2023-24 में देश का टमाटर उत्पादन चार प्रतिशत बढ़कर 213.20 लाख टन होने का अनुमान है, जो समय परांत में उत्पादकों और उपभोक्ताओं के लाभ के साथ मानसिक आराम भी देगा।

# ई-कॉमर्स मंच मीशो 2.2 करोड़ संदिग्ध लेनदेन के खिलाफ कार्रवाई में अग्रणी

## - एक साल में 12 मामले दर्ज किए

नई दिल्ली । सॉफ्टबैंक के समर्थित ई-कॉमर्स मंच मीशो ने पिछले एक साल में दिखाए गए 2.2 करोड़ संदिग्ध लेनदेन के खिलाफ कार्रवाई की है। कंपनी ने 12 मामले दर्ज किए हैं, जिसमें से 13 लाख बॉट ऑर्डर रोके गए हैं और 77 लाख प्रयासों को रोका गया है ताकि गुनाहगार घोटाले न कर सकें। सोमवार को जारी ट्रस्ट एश्योरेंस रिपोर्ट में कहा गया है कि मीशो ने अग्रणी विश्लेषणात्मक मॉडल, परिष्कृत डेटा विज्ञान और उन्नत कम्प्यूटेशनल लॉजिक विकसित किए हैं। इससे कंपनी ने 2.2 करोड़ से अधिक धोखाधड़ी वाले लेनदेन को रोका है। रिपोर्ट में इस भी बात को जाहिर किया गया है कि मीशो ने आपराधिक तत्वों को हटाने के लिए कठोर कदम उठाए हैं और अकाउंट हैक करने वाली धोखाधड़ी के शिकार होने वाले 40 से अधिक प्राकरणों के खिलाफ नौ मामले दर्ज किए गए हैं। मीशो का कहना है कि उसने अक्टूबर 2023 से लॉटरी धोखाधड़ी की घटनाओं को 75 प्रतिशत कम किया है और इसके लिए कोलकाता, बेंगलुरु और रांची में व्यापक स्तर की जांच की गई है। समर्थन लेनेवाले ई-कॉमर्स मंच की उपयोगी पहल और कवच एक सकारात्मक उड़ान की तरह हैं, जिससे ट्रांसपैरेंसी बढ़ेगी। दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख दिखाने से सिद्ध होता है कि धोखेबाजों के खिलाफ कठोर कार्रवाई में इच्छाशक्ति और इरादा दोगुना होगा।

# अमेरिकी डॉलर और बॉन्ड यील्ड की मजबूती ने बढ़ाई भारत-चीन की चिंता

## - भारत से पूंजी निकासी का खतरा बढ़ा

नई दिल्ली ।

अमेरिकी डॉलर की मजबूती और बढ़ती बॉन्ड यील्ड ने आर्थिक मोर्चे पर भारत व चीन की चिंता बढ़ा दी है। इन दोनों कारकों के चलते विदेशी निवेशक इमर्जिंग मार्केट्स खासकर भारत और चीन से पूंजी निकासी बढ़ा सकते हैं। बार्कलेज के फॉरेक्स और ईएम मैक्रो स्ट्रेटेजी एशिया के प्रमुख मितुल कोटेचा ने कहा कि अभी यह कहना मुश्किल है कि यह पूंजी अमेरिकी बाजारों की ओर जाएगी या नहीं। हालांकि, भारत में पहले ही विदेशी निवेशकों की एक बड़ी संख्या बाहर निकल चुकी है। भारत को लेकर मितुल कोटेचा ने कुछ चिंताओं का जिक्र किया है, जिनमें मुख्य रूप से आर्थिक वृद्धि में सुस्ती और भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास के रिटायर होने के बाद नए गवर्नर को लेकर अनिश्चितता शामिल हैं। इन कारणों से भारत से पूंजी निकासी का खतरा बढ़ सकता है। इसके अलावा डॉलर की मजबूती भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर दबाव डाल रही है, जो विदेशी निवेशकों को प्रभावित कर सकती है। चीन के लिए मितुल ने कहा कि चीन द्वारा घोषित प्रोत्साहन पैकेज को लेकर उम्मीदें थीं, लेकिन वास्तविकता यह है कि यह पैकेज बहुत सीमित था और इसके जरिए केवल छह ट्रिलियन युआन का कर्ज बदला गया। संपत्ति क्षेत्र को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए और उपभोक्ताओं के लिए भी नकद हस्तांतरण जैसी योजनाएं नहीं आईं। इससे चीन के बाजारों में अब तक अपेक्षित सुधार नहीं हो सका है।

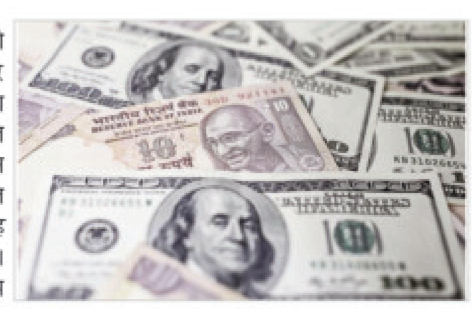

### दुनिया भर से पूंजी खींच रहा अमेरिका

मितुल कोटेचा ने यह भी कहा कि अमेरिका अपनी मजबूत अर्थव्यवस्था और नीति के चलते वैक्यूम क्लीनर की तरह काम कर रहा है, जो दुनिया भर से पूंजी अपनी ओर खींच रहा है। टैक्स में कटौती, ढील देने वाले नियम और अमेरिका का अलगाववादी रुख इन प्रवृत्तियों को और बढ़ा रहे हैं। उम्मीद है कि आगे भी पूंजी अमेरिका की ओर आकर्षित होगी। मजबूत डॉलर और बढ़ती अमेरिकी बॉन्ड यील्ड का प्रभाव सिर्फ भारत और चीन तक सीमित नहीं है, बल्कि अन्य उभरते बाजारों पर भी यह दबाव डाल सकता है। यूरोप भी मजबूत अमेरिकी अर्थव्यवस्था और डॉलर की वजह से नुकसान उठाने की स्थिति में है। अब यह देखना है कि क्या भारत और चीन से निकला हुआ पैसा अमेरिकी बाजारों में जाएगा या नहीं, और इन बदलते हालातों में उभरते बाजारों को कितना नुकसान होगा। फिलहाल, अमेरिका की स्थिति मजबूत है।

# ओडिसी निवेश सौदे के तहत जिप को 40,000 इलेक्ट्रिक वाहनों की करेगी आपूर्ति

नई दिल्ली । भारत के ईवी-एज-ए-सर्विस मंच के शीर्ष विनिर्माता ओडिसी इलेक्ट्रिक ने घोषणा की है कि उन्होंने जिप इलेक्ट्रिक से 40,000 वाहनों का ठेका हासिल किया है। इस निवेश सौदे के तहत, ओडिसी ने बताया है कि उनकी कंपनी अगले तीन वर्षों में 40,000 इलेक्ट्रिक वाहनों की आपूर्ति करेगी। कंपनी के एक अे धिकारी ने इस महत्वपूर्ण निवेश के बारे में बताया` कि ओडिसी इलेक्ट्रिक में यह नया निवेश हमारे राष्ट्रव्यापी विस्तार योजनाओं को महत्वपूर्ण रूप से गति प्रदान करेगा। जिप इलेक्ट्रिक की गहन उद्योग विशेषज्ञता तथा बेड़े के विद्युतीकरण की दृष्टि हमें इलेक्ट्रिक वाहनों के बी2बी सेगमेंट में मजबूत बिजनेस-टू-बिजनेस और उपभोक्ता मांग को रेखांकित करने में मदद करेगी।

# केंद्र सरकार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आयात पर लगाएगी रोक

## - लैपटॉप आयात में होगी कटौती, घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने पर रहेगा जोर

नई दिल्ली । केंद्र सरकार वर्तमान में लैपटॉप और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आयात पर रोक लगाने के तौर-तरीकों पर विचार कर रही है, जिससे देश में उत्पादन को बढ़ावा देने के लक्ष्य को प्रोत्साहित किया जा सके। सरकार की ओर से शुरूआत में आयात को मौजूदा स्तर से 5 फीसदी कम करने की संभावना तलाश की जा रही है ताकि जब आयात सीमा लागू हो, तो देश में उपकरणों की आपूर्ति में कोई व्यवधान न हो। अगस्त 2023 में, चीन पर निर्भरता कम करने के लिए चुनिंदा आईटी हार्डवेयर उत्पादों के आयात के लिए लाइसेंस की योजना की गई थी, लेकिन उद्यमों और अमेरिका जैसे व्यापारिक भागीदारों की चिंताओं के बाद सरकार ने नवंबर 2023 से ऑनलाइन आयात परमिट के लिए नई प्रबंधन प्रणाली की घोषणा की थी। नई व्यवस्था में 7 आईटी हार्डवेयर उत्पादों को शामिल किया गया था, जिसे 31 दिसंबर तक के लिए लागू किया गया था। इस सावधानी की प्रक्रिया के साथ, सरकार के द्वारा नई योजना के तहत विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए आयात को घटाने और घरेलू उत्पादन को मजबूत करने के लिए नए उपायों का परीक्षण किया जा रहा है। सरकारी सूत्रों के अनुसार यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि यह प्रक्रिया पूरे संकेतों के साथ संभव है और राष्ट्रीय सुरक्षा के पहलुओं को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसके साथ ही, कम से कम दो नई विदेशी कंपनियां भारत में विनिर्माण शुरू करने की योजना बना रही हैं, जिससे देश की नीति में स्थिरता और और उत्पादन क्षमता में सुधार हो सके। इस प्रगति में सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं और विनिर्माण के सक्षमता में बढ़ोतरी को सुनिश्चित करने के लिए समयबद्ध धारणाएं लेने का प्रस्ताव किया गया है। यह स्थिति राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रगति के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

# असम में लगेगा 27 हजार करोड़ का प्लांट, 48 मिलियन सेमीकंडक्टर चिप्स का होगा उत्पादन

## इस परियोजना से 15 हजार प्रत्यक्ष और 13 हजार अप्रत्यक्ष नौकरियां होंगी उत्पन्न

नई दिल्ली।

असम के मोरीगांव में टाटा सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट प्राइवेट लिमिटेड (टीएसएटी) द्वारा स्थापित होने जा रहे 27 हजार करोड़ रुपए के सेमीकंडक्टर प्लांट का विकास 2025 के मध्य तक पूरा हो जाएगा।

यह परियोजना भारत के सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम में एक बड़ा बदलाव ला सकती है, खासकर जब इसे भारत की आत्मनिर्भर सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता को बढ़ाने की दिशा में अहम कदम के रूप में देखा जाए।

मोरीगांव प्लांट में रोजाना 48 मिलियन सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन होगा। इसमें एडवांस पैकेजिंग तकनीक जैसे फ्लिप चिप और इंटीग्रेटेड सिस्टम इन पैकेज (आईएसआईपी) का इस्तेमाल किया जाएगा। इस परियोजना से 15 हजार प्रत्यक्ष और 11 हजार से 13 हजार अप्रत्यक्ष नौकरियां उत्पन्न होंगी, जिससे असम और आसपास के क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह परियोजना भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन में प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में अहम कदम साबित होगी। इसके जरिए से भारत घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन करेगा।

भारत सरकार ने सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम के तहत घरेलू सेमीकंडक्टर उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों को लागू किया है। इस कार्यक्रम के तहत, 2021 में 76 हजार करोड़ रुपए के वित्तीय परिव्यय के साथ सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले इकोसिस्टम के निर्माण की दिशा में काम किया जा रहा है। इसमें सेमीकंडक्टर फैब्स, डिस्प्ले फैब्स, सेंसर फैब्स, और डिजाइन लिंक्ड इंसेंटिव जैसी योजनाओं का भी समर्थन किया जा रहा है। भारत में बढ़ती सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता, चिप डिजाइन, टेस्टिंग, और असेंबली के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है, जो न केवल तकनीकी क्षेत्र को बढ़ावा मिलेग बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

सरकार का उद्देश्य भारत को डिजिटल अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करना है।

# गोदरेज एग्रोवेट ने प्रोविवी के साथ की साझेदारी

## - जीएवीएल ने किसानों के लिए एक नया कीटनाशक समाधान पेश किया

नई दिल्ली । कृषि व्यवसाय कंपनी गोदरेज एग्रोवेट (जीएवीएल) ने भारत के किसानों के लिए एक नया कीटनाशक समाधान पेश किया है, जो 'फेरोमोन' (रसायन) पर आधारित है। यह समाधान अमेरिका स्थित प्रोविवी कंपनी के साथ की गई रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से उपलब्ध कराया जाएगा। गोदरेज एग्रोवेट के प्रबंध निदेशक ने बताया कि कृषि में बदलती जलवायु परिस्थितियों के कारण कीटों की समस्या बढ़ गई है, इसलिए नवीन और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों की जरुरत है। उन्होंने यह भी जाहिर किया कि जैवनिम्नीकरणीय कीटनाशक उत्पाद 2029 तक भारतीय किसानों के लिए उपलब्ध होने की उम्मीद है। प्रोविवी कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने भी इस साझेदारी की महत्वता को स्वीकारा और इसे दुनिया के तेजी से बढ़ते कृषि बाजार में एक प्रभावी स्थान देने की उम्मीद जताई। उन्होंने बताया कि इस साझेदारी के वित्तीय विवरण अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है। गोदरेज एग्रोवेट की इस कीटनाशक समाधान की उपलब्धता से भारतीय किसानों को कीटों से निपटने में मदद मिलेगी और उन्हें नवीन तकनीकी सहायता प्राप्त करने में सहायक होगा।

# मां ने 2 महीने के मासूम को पटककर मार डाला

## :पति से हुआ था झगड़ा, चश्मदीद बोला- 2-3 बार पटका, सिर में चोट लगने से मौत

**भोजपुर ।** आपसी लड़ाई में एक महिला ने अपने दो महीने के बेटे को जमीन पर पटक कर मार डाला। पति-पत्नी अपने दो बच्चों के साथ दिल्ली से आरा आ रहे थे। रास्ते में पति-पत्नी की घरेलू विवाद में लड़ाई हुई। रविवार को आरा स्टेशन पहुंचने के बाद फिर झगड़ा हुआ, जिसके बाद महिला ने अपनी गोद में लिए मासूम को जमीन पर पटक दिया। बच्चे को इलाज के लिए सदर अस्पताल के एसएनसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। दंपती बच्चे के शव का पोस्टमॉर्टम कराए बिना घर लेकर चले गए। वही पति-पत्नी की लड़ाई में बीच-बचाव करने पहुंचे स्थानीय वार्ड पार्षद सम्राट सक्सेना ने बताया कि महिला ने एक नहीं 2-3 बार बच्चे को पटका। वहीं पति का कहना है कि उसकी पत्नी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। उसने अपने पति से भी मारपीट की है। आरोपी महिला जूही देवी और उसका पति रविनेश कुमार दोनों आरा के कोइलवर थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। दोनों अपने बच्चे के साथ दिल्ली से आरा अपने फूफा के घर जा रहे थे। जूही का कहना है कि उसने बच्चे को जानबूझकर नहीं पटका। ट्रेन से उतरने के दौरान उसका पैर स्लीप हो गया, जिससे उसका बच्चा स्टेशन पर ही गिर गया। जूही ने कहा, बच्चे की मां जूही ने अपनी सास और ननद ने उसे घर से निकालने का आरोप लगाया है। मामले को लेकर जूही देवी ने बताया, 'उसके ससुराल वाले इलाज के लिए पैसा नहीं देते हैं। बच्चे की तबीयत खराब थी। उसके इलाज के लिए भी पैसा नहीं दिया। जब मैं गर्भवती थी तो दोनों ने मुझे घर से निकाल दिया। बोली जाकर किराए पर रहो।' कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव का रहने वाला रविनेश कुमार दिल्ली में रहकर प्राइवेट नौकरी करता है। वही पर निहाल बिहार में नागलोई थाना के पंजाबी बाग की रहने वाली जूही कुमारी से उसने शादी की थी। जूही को एक बेटी और दो माह का एक बेटा था। रविनेश कुमार अपने पत्नी जूही और बच्चों के साथ गांव आ रहा था। आरा रेलवे स्टेशन पर उतरने के बाद पति और पत्नी के बीच विवाद हो गया। जिसके बाद जूही ने अपने मासूम बच्चे को पटक दिया जिससे उसकी मौत हो गई।

## नालंदा में पति-पत्नी की हत्या कर शव जलाया

**नालंदा ।** घर में पति-पत्नी की हत्या कर शव को जलाया गया है। सिर और हाथ का कुछ हिस्सा जलने से बचा है, बाकी शव जल चुका है। मामला छबीलापुर थाना क्षेत्र के दोगी गांव का है। मृतकों की पहचान दोगी गांव निवासी विजय प्रसाद (54) और उनकी पत्नी कांति देवी (50) के रूप में की गई। घटना के बारे में मृतक के बेटे विपिन कुमार ने बताया कि वह अपने घर से सुबह पैदल दूसरे मकान में पहुंचा, जहां माता-पिता रह रहे थे। दरवाजा खुला हुआ और नाली से खून बह रहा था। जैसे ही घर के अंदर गया तो देखा कि मम्मी-पापा आग की लपट में थे। उसके बाद भाइयों को फोन कर बुलाया। फिलहाल घटनास्थल पर भारी संख्या में ग्रामीण जुटे हुए हैं। ग्रामीण राजेंद्र प्रसाद ने बताया कि सुबह गांव में यह शोर हुआ कि विजय महतो की मौत हो गई। जब विजय महतो के घर पहुंचे तो देखा कि दोनों पति-पत्नी आग में जल रहे हैं।

## बिहार के 15 जिलों में घने कोहरे का अलर्ट

### 72 घंटे में 10 डिग्री तक पहुंच सकता है तापमान, 17 ट्रेनें और 6 फ्लाइट लेट

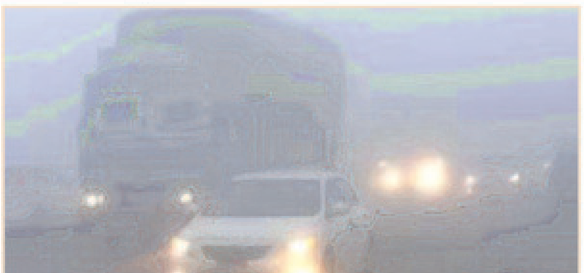
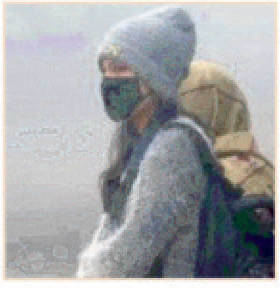

पटना। बिहार में सर्द पछुआ हवा चलने से तापमान में रोजाना एक से दो डिग्री की गिरावट देखी जा रही है। इस वजह से प्रदेश में धीरे-धीरे ठंड बढ़ने लगी है। मोतिहारी और रोहतास का न्यूनतम तापमान गिरकर 13 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, अगले तीन दिनों में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की संभावना है। इस बीच मौसम विभाग ने आज बिहार के 15 जिलों में घने कोहरे का यलो अलर्ट जारी किया है। इनमें पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, पूर्णिया, अररिया, कटिहार, किशनगंज जिले शामिल है। मौसम विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक एसके पटेल ने बताया कि राज्य में पछुआ हवा की गति धीरे-धीरे तेज हो रही है। दिन और रात के तापमान में गिरावट शुरू है। सुबह में घना कोहरा और दिन में धूप निकलेगी। वहीं कोहरे की वजह से 17 ट्रेनें और 6 फ्लाइट लेट हैं। नई दिल्ली से हावड़ा जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस एक घंटा, जबकि दिल्ली से पटना आने वाली वंदे भारत स्पेशल 1 घंटा 28 मिनट लेट चल रही है। साथ ही बागमती एक्सप्रेस, राजगीर-दानापुर इंटरसिटी, मालदा टाउन-उधना, गोरखपुर-सियालदाह सहित 17 ट्रेनें लेट से चल रही हैं। 6 फ्लाइट भी लेट हैं। पटना की हवा सेहत के लिए खतरनाक हो गई है। गांधी मैदान, सचिवालय, वेटनरी मैदान, तारामंडल, दानापुर सहित शहर के अन्य इलाकों में धूल-कण और जहरीली गैस की मात्रा तेजी से बढ़ रही है। इस वजह से रविवार को शाम 7 बजे तक एक्यूआई लेवल 300 से अधिक दर्ज किया गया है। वेटनरी मैदान के पास एक्यूआई लेवल 398, ईको पार्क के पास 349, दानापुर डीआरएम ऑफिस के पास 340 और तारामंडल के पास 343 दर्ज किया गया। सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के मानक मुताबिक, एक्यूआई लेवल 300 से अधिक रहने पर वहां की हवा लोगों के सेहत के लिए बहुत खराब हो जाती है।

## गन्ने के खेत से मिला 12 फीट लंबा अजगर

### बगहा में वन विभाग की टीम ने पकड़ा, एक घंटे तक चला रेस्क्यू ऑपरेशन

**बगहा।** वाल्मीकि नगर हवाई अड्डा क्षेत्र के पास गन्ने के खेत में एक 12 फिट लम्बा विशाल अजगर मिलने से अफरा-तफरी मच गई। खेत में काम कर रहे किसानों ने अजगर को देखा और तुरंत वन विभाग को सूचना दी। दरअसल, कम कर रहा है मजदूरों के सामने अचानक आज बड़ा सा अजगर निकल आया था। वन विभाग के कर्मचारी मुकेश कुमार और उनकी टीम ने मौके पर पहुंचकर अजगर को रेस्क्यू किया। रेस्क्यू ऑपरेशन में टीम को करीब एक घंटे का समय लगा। जंगली जानवर दिखाई देने पर वन विभाग को सुचना देने की अपीलः मुकेश कुमार ने बताया कि यह अजगर पूरी तरह से स्वस्थ है और इसे वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के जंगल में सुरक्षित छोड़ा जाएगा। टीम ने स्थानीय लोगों से अपील की है कि अगर किसी को कोई जंगली जानवर दिखाई दे तो तुरंत वन विभाग को सूचित करें। वन विभाग के अनुसार, मानसून के दौरान जंगली जानवर अक्सर बस्तियों और खेतों की ओर आ जाते हैं, बरसात के दिनों में शायद अजगर खेतों में पहुंच आया था। विभाग ने स्थानीय लोगों को वन्यजीवों से सुरक्षित दूरी बनाए रखने और उन्हें नुकसान न पहुंचाने की सलाह दी है।

अजगर एक विशाल और शांत स्वभाव वाला सर्प है, अजगर दुनिया के सबसे लंबे और भारी सांपों में गिना जाता है। यह एक गैर-विषैला सर्प है, जो अपनी अद्वितीय विशेषताओं और शक्ति के लिए जाना जाता है।

1. अजगर मुख्यतः एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के जंगलों, दलदलों, घास के मैदानों और झीलों के पास पाए जाते हैं।
2. अजगर की लंबाई 10 से 20 फीट तक हो सकती है, और यह 100 किलो तक वजनी हो सकता है।
3. अजगर मांसाहारी होते हैं और मुख्यतः छोटे स्तनधारियों, पक्षियों, हिरणों, और यहां तक कि मगरमच्छों का शिकार कर देते है।
4. अजगर आमतौर पर शांत स्वभाव के होते हैं और इंसानों पर हमला नहीं करते, जब तक कि उन्हें उकसाया न जाए।
5. अजगर अंडे देने वाले सांप हैं। मादा अजगर 20 से 100 अंडे तक दे सकती है।

## बालू लोड ट्रक ने ऑटो में मारी टक्कर, एक की मौत

**पटना ।** तेज रफ्तार ट्रक ने ऑटो में टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि ऑटो सवार एक शख्स की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। आसपास के लोगों की भीड़ लग गई। इधर, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को अस्पताल पहुंचाया और जांच में जुट गई। घटना बिहटा के आईआईटी थानाक्षेत्र के डिहरी गांव के पास की है। थानाध्यक्ष विवेक कुमार ने बताया कि सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हुई है। दो लोग घायल हैं। मृतक के परिजनों को सूचना दे दी गई है। साथ ही फरार ट्रक की तलाश में पुलिस सीसीटीवी खंगाल रही है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक की पहचान मृतक की पहचान दुल्हिनबाजार थानाक्षेत्र के लाला भदसरा गांव निवासी भोला पंडित के रूप में हुई है। वहीं घटना के बाद घटना स्थल से चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। उसकी तलाश मे छापेमारी चल रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि डीहरी-मीठापुरा मार्ग पर पुल के समीप कनपा के तरफ से बालू लदा ट्रक आ रहा था। साथ ही टेंपो में सवार लोग बिक्रम के नगहर गांव की तरफ से आ रहे थे।

## संक्षिप्त डायरी

### राज्यपाल राजेंद्र आर्लेकर ने मृदुला सिन्हा को बताया अपनी 'दूसरी मां', मूर्ति अनावरण कर हुए भावुक

**मुजफ्फरपुर।** गोवा की पूर्व राज्यपाल और मुजफ्फरपुर निवासी दिवंगत मृदुला सिन्हा की प्रतिमा का अनावरण करते हुए बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर भावुक हो गए। उन्होंने दिवंगत मृदुला सिन्हा को अपनी दूसरी मां के समान बताया। उन्होंने कहा कि उनका मार्गदर्शन उन्हें जीवनभर प्रेरणा देता रहेगा। राज्यपाल ने कहा कि जब मैं गोवा में मंत्री पद की शपथ ले रहा था, तब मृदुला जी ने ही मुझे शपथ दिलाई थी। मेरी मां के देहावसान के बाद जब भी मैं मृदुला जी से मिलता, वह और डॉक्टर साहब (उनके पति) हमेशा मेरे परिवार और स्वास्थ्य की चिंता करते थे। उनसे मिलने पर मुझे मां जैसा स्नेह और अपनापन महसूस होता था। आज उनकी प्रतिमा का अनावरण करते हुए गर्व और भावुकता का अनुभव हो रहा है। महामहिम राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सोमवार को मुजफ्फरपुर के भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय स्थित एलएस कॉलेज के पार्क में आयोजित कार्यक्रम में दिवंगत मृदुला सिन्हा की प्रतिमा का अनावरण किया। मृदुला सिन्हा, जो गोवा की राज्यपाल के रूप में सेवा कर चुकी थीं, को मुजफ्फरपुर की बेटी के रूप में याद किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने दिवंगत मृदुला सिन्हा के योगदान को याद किया। उन्हें साहित्य, राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में प्रेरणास्रोत बताया। समारोह में जिले के प्रशासनिक अधिकारी, विश्वविद्यालय के पदाधिकारी और स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। राज्यपाल ने मंच से अपने संबोधन में मृदुला सिन्हा की स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि वह न केवल एक उत्कृष्ट नेता थीं, बल्कि एक संवेदनशील और स्नेहमयी व्यक्तित्व भी थीं। उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर उन्होंने अपनी कई जिम्मेदारियां निभाईं। मूर्ति अनावरण के इस अवसर पर स्थानीय लोगों और विश्वविद्यालय के छात्रों ने दिवंगत मृदुला सिन्हा को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनकी उपलब्धियों को याद किया। समारोह के अंत में राज्यपाल ने मृदुला सिन्हा के परिवार के सदस्यों से भी मुलाकात की।

### पेट दर्द की वजह जानकर चौंक गए डॉक्टर

**पटना।** बिहार के जाने माने मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर की ऐसी लापरवाही सामने आई है, जिस वजह से मरीज या तो किसी गंभीर बिमारी से पीड़ित हो जाता या फिर उसकी जान चली जाती। जी हां लापरवाह डॉक्टर ने ऑपरेशन करने के दौरान मरीज के पेट में टेट्रा (ऑपरेशन के दौरान ब्लड साफ करने वाला कपड़ा ) छोड़ दिया। मामला संज्ञान में आने के बाद अस्पताल अधीक्षक बस जांच की बात कह रही हैं। मामला दरभंगा जिला के डीएमसीएच का है। पीड़ित परिवार जाले थाना क्षेत्र के ब्रह्मपुर पश्चिमी निवासी शिवम ठाकुर की पत्नी अंजला कुमारी से जुड़ा है। घटना में संबंध में परिजनों का कहना है कि अंजला कुमारी का डीएमसीएच के गायनिक विभाग में 8 अक्टूबर को ऑपरेशन से पुत्र का जन्म हुआ था। ऑपरेशन के बाद 14 अक्टूबर को महिला को डिस्चार्ज कर दिया गया। लेकिन महिला के पेट मे लगातार दर्द हो रहा था। उसका ऑपरेशन वाली जगह का घाव भी ठीक नहीं हो रहा था। फिर मरीज ने एक स्थानीय डॉक्टर से इसका इलाज कराने गई। डॉक्टर ने महिला मरीज की जांच की और जब उसने रिपोर्ट की जानकारी उसके परिजन को दी तो सुनकर सभी अवाक रह गये। उन्हें लगा कि डॉक्टर फिल्म कका कोई सीन बताकर उसके साथ मजाक कर रहे हैं लेकिन यह बात रील की नहीं बल्कि रियल थी। डॉक्टर ने फिर स्पष्ट रूप से कहा कि आपने जहां कहीं भी ऑपरेशन कराया है, वहां ऑपरेशन के दौरान डॉक्टर ने टेट्रा (ऑपरेशन के दौरान ब्लड साफ करने वाला कपड़ा ) उसके पेट में ही छोड़ दिया है। यही वजह है कि न तो उसका घाव छूट रहा है और न ही उसके जख्म का दर्द ही ठीक हो रहा है। मरीज के पेट में टेट्रा छूट जाने की जानकारी मिलते ही परिजनों के होश उड़ गये। लापरवाही से नाराज परिजन गुस्से में डीएमसीएच के अधीक्षक के पास पहुंचे और उनसे लापरवाह डॉक्टर की शिकायत की। कहने के लिए डीएमसीएच के अधीक्षक ने तत्काल मामले को गंभीरता पूर्वक संज्ञान में लिया और मरीज को उसके घर से लाकर इलाज करने का निर्देश अपने कर्मियों को दिया। अधीक्षक ने कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता मरीज का इलाज करना है, जिसका वह खुद मोनिटरिंग कर रही है। जिस लापरवाह डॉक्टर की लापरवाही से मरीज की जान जा सकती है उस पर कार्रवाई की बात उन्होंने नहीं की।

## कुएं में डूबने से मासूम भाई-बहन की मौत, परिवार में मातम

**मुंगेर।** जिले के तारापुर थानाक्षेत्र के बिहमा पंचायत के माहपुर गांव में सोमवार को कुएं में डूबने से ममेरे-फुफेरे भाई-बहन की दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों की पहचान माहपुर गांव निवासी मनीष देव के सात वर्षीय बेटे ऋषि राज और असरगंज थानाक्षेत्र के पुरुषोत्तमपुर गांव निवासी राकेश कुमार की पांच वर्षीय बेटे वैष्णवी सिंह के रूप में हुई। परिजनों के मुताबिक, दोनों बच्चे सोमवार को खेलने के लिए घर से बाहर निकले थे। जब काफी देर तक वे वापस नहीं लौटे, तो परिजनों ने उनकी खोजबीन शुरू की। इसी दौरान घर के पास मुख्य सड़क से सटे कुएं में झांकने पर बच्चों के अंदर होने का पता चला। ग्रामीणों की मदद से दोनों को कुएं से बाहर निकाला गया और इलाज के लिए तारापुर अनुमंडलीय अस्पताल ले जाया गया। लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। ऋषि राज दो भाइयों में सबसे छोटा था, जबकि वैष्णवी दो बहनों में बड़ी थी। इस हादसे ने दोनों परिवारों के साथ-साथ पूरे गांव को गहरे शोक में डाल दिया है। हर ओर मातमी सन्नाटा पसरा है और ग्रामीणों की आंखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे। घटना की सूचना मिलते ही तारापुर के जदयू विधायक राजीव कुमार सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी राकेश रंजन कुमार और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंचे। विधायक ने इस घटना को

## सोनपुर पशु मेला, लौंडा नाच, न्यूड डांस से थिएटर तक

### सिर्फ थिएटर से 5 करोड़ से ज्यादा का कारोबार; ये बंद तो मेला बंद

**सोनपुर।** सोनपुर मेला कभी पशुओं के व्यापार के लिए जाना जाता था। हाथी-घोड़े इसकी पहचान हुआ करते थे। इतिहास बताता है कि इस मेले में चंद्रगुप्त मौर्य आए, अकबर आए। स्वतंत्रता सेनानी वीर कुंवर सिंह भी यहां घोड़ा खरीदने आते थे। राजधानी पटना से करीब 25 किमी और हाजीपुर से 3 किमी दूर सोनपुर में गंडक के तट पर लगने वाले सोनपुर पशु मेले में मध्य एशिया के व्यापारी भी आते थे। इस मेले में हाथी-घोड़े की खरीद-बिक्री के साथ-साथ मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते थे। समय के साथ पशुओं की खरीद-बिक्री पर रोक लगी तो हाथी-घोड़े आने बंद हो गए या फिर गिनती के आने लगे। आज करीब 2000 साल पुराने इस मेले का स्वरूप पूरी तरह से बदल चुका है। सांस्कृतिक कार्यक्रम की जगह लौंडा नाच, न्यूड डांस और फिर थिएटर ने ले ली। आज ये जानवरों के लिए कम और थिएटर के लिए ज्यादा फेमस है। थिएटर का खुद का कारोबार 5 करोड़ से ज्यादा का होता है। मेले में पहुंचने वाले कारोबारियों का कहना है कि थिएटर की वजह से ही उनकी दुकान चलती है। थिएटर बंद तो मेला बंद। जानकर बताते हैं कि करीब 1980 के पहले मेले की पूरी इकोनॉमी पशुओं के व्यापार पर टिकी थी। जैसे-जैसे समय बदलता गया, वैसे-वैसे मेले का स्वरूप भी बदलता गया। आज मेला में भीड़ बुलाने के थिएटर एक जरिया बन गया है। जब मेले में हाथी, घोड़े की खरीद-बिक्री होती थी, तब लोग हाथी देखने मेले में आते थे। सरकार की ओर से लागू किए गए पशु क्रूरता अधिनियम के बाद इस मेले पर काफी बुरा असर पड़ा था। इस नियम के तहत पशुओं की खरीद बिक्री पर रोक लगा दी गई। इसमें हाथी, कई प्रकार के घोड़े, जंगली बैल, पक्षी के खरीद बिक्री पर रोक लगा दी गई थी। इधर, मेले में पशुओं की घटती बाजार की जगह थिएटर ने ली। आज मेले में थिएटर का कारोबार करोड़ों का है। आज मेले की लोकप्रियता थिएटर की वजह से है। करीब 1600 ई. के पहले यहां राजा-महाराजा, अपनी सेना में शामिल करने के लिया हाथी और घोड़ा खरीदने आते थे। उस दौरान राजाओं के ठहरने और मनोरंजन की व्यवस्था की जाती थी। तब गीत-संगीत के माध्यम से राजाओं का मनोरंजन होता था। मध्य एशिया के साथ दक्षिणी भारत से भी व्यापारी यहां हाथी और घोड़े खरीदने आते थे। धीरे-धीरे व्यापारियों के लिए भी मनोरंजन की व्यवस्था की जाने लगी। 1700 ई. के बाद गीत-संगीत में डांस भी शामिल होने लगा। तब लौंडा डांस और नाटक होता था। लौंडा डांस और नाटक सभी के लिए था। ठहरने का कोई उचित इंतजाम नही होने के कारण दूर-दूर से मेले में पहुंचे व्यापारी और आम आदमी रात में नाटक देखकर मनोरंजन करते थे। 1920 ई. के बाद अंग्रेज इस मेले में मनोरंजन के लिए लड़कियों को लाने लगे। धीरे-धीरे इस मेले में गीत-संगीत के कार्यक्रम ने थिएटर का रूप ले लिया और थिएटर को बिजनेस के रूप में स्थापित कर दिया गया। लेखक सुरेंद्र मानपुरी बताते हैं, पहले सोनपुर मेले में शास्त्रीय संगीत और शेर-ओ-शायरी की महफिल लगती थी। तब सूफी साहित्य और सूफियाना गीतों के जलवे भी कायम थे। साहित्यकार अपने-अपने नजमों को पेश करते थे। बाद में राजा-महाराजाओं के लिए महफिल सजने लगी। तवायफ यहां आकर मुजरा करती थीं। कभी मनोरंजन के लिए होने वाला यह नाच-गाना धीरे-धीरे मेले की पहचान बनते चला गया। सुरेंद्र मानपुरी ने आगे बताया कि ह्यपहले छोटे-छोटे शामियाने बनाकर दर्शक गैलरी बनाई जाती थी, लेकिन फिर उसकी जगह टेंट ने ले ली। साल 1945 में सोनपुर मेले में गुलाब बाई की एंट्री हुई, जिन्हें नौटंकी (नाटक की एक शैली) की मल्लिका कहा जाता था। दरअसल, स्टेज शो के लिए थिएटर से पहले नौटंकी शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। नौटंकी का बदला हुआ स्वरूप बाद में थिएटर आया। भोजपुरी के शेक्सपीयर कहे जाने वाले भिखारी ठाकुर भी अपने नाटक की प्रस्तुति के लिए आते थे। एक समय ऐसा भी था, जब थिएटर में मर्द ही औरतों का किरदार निभाया करते थे। 70 के दशक में थिएटर में एक दिन में तीन शो हुआ करते थे। यह सभी शो नाटकों से जुड़े हुए थे और पर्शियन शैली में थे।

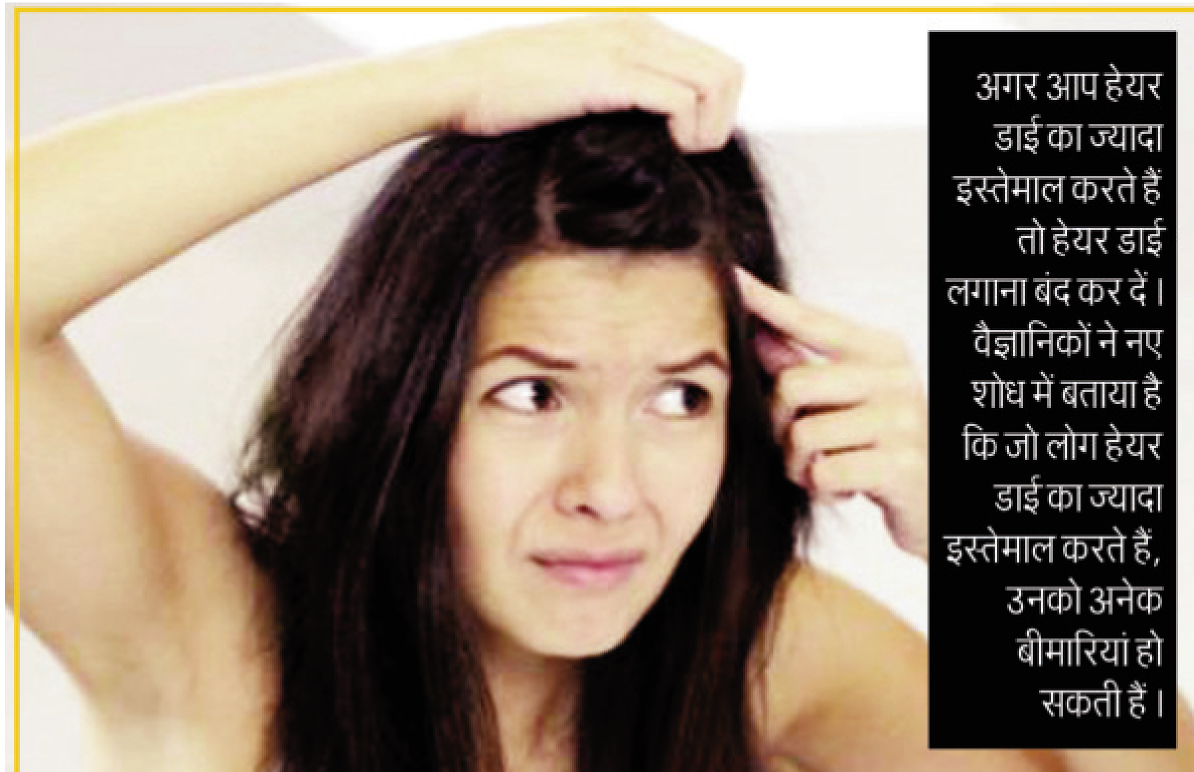

अगर आप हेयर डाई का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं तो हेयर डाई लगाना बंद कर दें। वैज्ञानिकों ने नए शोध में बताया है कि जो लोग हेयर डाई का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं, उनको अनेक बीमारियां हो सकती हैं।

# अनेक बीमारियां मुफ्त में दे जाते हैं हेयर डाई एवं हेयर कलर

**सफेद बालों** को डाई करने एवं अच्छे-भले बालों का रंग उड़ाकर उन्हें कलर करने का प्रचलन इन दिनों बहुत ज्यादा बढ़ गया है। सबके बाल असमय एवं अल्प आयु में सफेद होते जा रहे हैं। काले बाल जवानी के एवं सफेद बाल बुढ़ापे के द्योतक माने जाते हैं, इसलिए इन्हें डाई किया जाने लगा है। कम आयु के किशोर भी बालों के सफेद होने से दु:खी व परेशान हो, इन्हें डाई करने लगे हैं, तो कुछ नए फैशन के प्रचलन से प्रभावित होकर बालों को कलर करने लगे हैं। इस हेयर डाई एवं हेयर कलर में उसे पक्का करने हेतु जो रसायन मिले होते हैं, वे घातक होते हैं। ये बालों को काला या रंगीन जरूर कर देते हैं, किन्तु साथ में अनेक बीमारियां भी मुफ्त में दे जाते हैं, जो किसी भी समय प्रकट हो सकती हैं।

## रसायनों का मिश्रण घातक

इन रसायनों की घातकता से सभी परिचित नहीं होते। जो परिचित होते हैं, वे भी नासमझ बन इसका उपयोग करते रहते हैं या अन्य उपाय भी करते हैं। सच यह है कि हेयर कलर, डाई, ब्रांडेड मेहंदी, टैटू कलर, सभी में उन्हें पक्का करने हेतु घातक रसायन मिले होते हैं, जो नुकसान जरूर पहुंचाते हैं।

## प्रयोग का दुष्प्रभाव

हेयर कलर एवं डाई के उपयोग से आंख, कान, सिर तथा चेहरे पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इन सब जगहों पर त्वचा रोग होने लगते हैं। यहां की त्वचा जलने लगती है एवं इन जगहों पर खुजली होती है। इनमें लालिमा नजर आने लगती है। लाल लाल चकते उभरने लगते हैं। संक्रमण होता है। एलर्जी की शिकायत होती है कि किसी की त्वचा शुष्क व खुरदरी हो जाती है। स्किन कैंसर होने का खतरा रहता है। बाल उसके काले चमकीले होते हैं, पर रूखे व कड़े हो जाते हैं। इनके टूटने व झड़ने की गति बढ़ जाती है। रहे सहे काले बाल भी पूर्णत: सफेद हो जाते हैं। गंजे होने का खतरा बढ़ जाता है। आंखों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। सूजन आ जाती है। इनमें लालिमा नजर आती है। नेत्र रोग तक हो सकता है। मोतियाबिन्द व दृष्टिदोष की शिकायत हो सकती है। आंखों में इसके जाने पर अंधेपन की तकलीफ हो सकती है। यह तत्काल न होकर कभी भी किसी उपयोगकर्ता को हो सकता है।

## बाल सफेद क्यों होते हैं

पहले वृद्ध होने पर बालों के सफेद होने को परिपक्वता व बुढ़ापे की निशानी मानते थे, पर अब पौष्टिक खानपान की कमी हो गई है। खानपान की चीजों में रसायनों का प्रभाव बढ़ गया है। चारों तरफ प्रदूषण बढ़ गया है। सिर मालिश का प्रचलन कम हो गया है। तेज सुगंधित साबुन, सुगंधित तेल व रसायनों का उपयोग बढ़ गया है। सिर के व्यायाम व शीर्षासन भूल गए हैं। नशापान व दुर्व्यसन बढ़ गया है। मानसिक काम, तनाव व मस्तिष्क में वैचारिक प्रदूषण बढ़ गया है। ये सभी मिलकर काले बालों को असमय या अल्पायु में सफेद कर रहे हैं। अचानक प्रकट हुई बड़ी बीमारियां भी इन्हें कमजोर व सफेद करने में भूमिका निभाती हैं।

## कैसे रहें बाल सुरक्षित

हेयर डाई, हेयर कलर, पैकेट बन्द ब्रांडेड मेहंदी ये सभी खतरनाक होते हैं। इन सभी में रसायन मिलाया जाता है। पीपीडी एवं अमोनियायुक्त होने पर ही ये पक्के होते हैं। इनकी मात्रा जितनी भी हो नुकसानदेह है। अतएव प्राकृतिक व सुरक्षित काले बाल पाने की चाहत वाले खानपान साफ-सुथरा व पौष्टिक रखें। रात को बालों की जड़ों की मालिश करें। प्रदूषण से बचें। तेज साबुन व तेज सुगंध वाले तेल न लगाएं। दही, मठा, छाछ का यथासंभव सेवन करें।

प्राकृतिक मेहंदी व आंवला चूर्ण का लेप सिर पर लगाएं। हेयर डाई, हेयर कलर, पैकेट बन्द ब्रांडेड मेहंदी, टैटू इन सभी को पक्का बनाने के लिए मिलाया गया रसायन घातक होता है। यह शुगर, बी.पी. पेशेंट, गर्भवती महिला व बच्चों की परेशानी को बहुत ज्यादा बढ़ा देते हैं, जो खतरनाक हो सकता है।

## हेयर कलर व डाई का प्रचलन क्यों

काले बाल मुखड़े की सुन्दरता बढ़ाते हैं। ये सबको भले लगते हैं एवं इन्हें जवानी का परिचायक माना जाता है, जबकि विविध कारणों से आजकल सबके बाल असमय, अल्पायु में बहुत ज्यादा सफेद होने लगे हैं। नवकिशोरों के बाल भी सफेद दिखने लगे हैं। इन सफेद बालों को बुढ़ापे की निशानी मान सभी दु:खी व हतोत्साहित हो जाते हैं और स्वयं से या अन्य से प्रेरित होकर बालों को डाई करने लगते हैं, जबकि कुछ लोग सौंदर्य बढ़ाने, आकर्षक दिखने, नये फैशन को एडॉप्ट करने, स्टाइल स्टेटमेंट अथवा स्मार्ट व स्टाइलिश लुक के लिए बालों को कलर करने लगे हैं, इसीलिए सर्वत्र हेयर डाई व हेयर कलर करने का प्रचलन बहुत ज्यादा बढ़ गया है।

## क्या होता है इनमें

हेयर डाई व हेयर कलर को पक्का करने के लिए इनमें अनेक रसायन मिले होते हैं। सभी का अपना प्रभाव व दुष्प्रभाव भी होता है। अपने प्रभाव के चलते ये बालों को काला या रंगीन करते हैं, किन्तु साथ में अपना दुष्प्रभाव भी देते जाते हैं। रसायनों के चलते इसका प्रभाव व दुष्प्रभाव दोनों पक्का होता है। इन्हें पक्का करने के लिए इनमें पैराफिनाइलीन डाई एमीन (पीपीपी) मिला होता है। इसकी मात्रा 2.33 से 4 प्रतिशत तक होती है। साथ में अमोनिया मिला होता है। इन्हीं की बदौलत इनका रंग दो माह तक पक्का बना रहता है। इन्हीं का दुष्प्रभाव सबसे ज्यादा होता है। ये ही उपयोगकर्ता को अनेक प्रकार की बीमारियां देते हैं।

# रक्तचाप नियंत्रित करता है मछली का तेल

'द अमेरिकन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ' के अनुसार मछली का तेल और कैल्शियम के स्रोतों का सेवन हाइपरटेंशन के रोगियों के रक्तचाप को कम करने में कोई खास योगदान नहीं देते। साथ ही हर्बल सप्लीमेंटस और बोटेनिकल सप्लीमेंट्स के भी लाभ के बारे में सही-सही कहना मुमकिन नहीं है, क्योंकि ये प्रोडक्ट्स मार्केट में आने से पहले कड़े परीक्षणों से नहीं गुजरते।

उच्च रक्तचाप से सुरक्षा पाने के लिए प्रकाशित एक रिपोर्ट में जीवनशैली से संबंधित सुधारों पर विशेष बल दिया गया। शारीरिक श्रम, सही भोजन, सोडियम और अल्कोहल के सेवन पर नियंत्रण मोटापे पर नियंत्रण द्वारा व्यक्ति उच्च रक्तचाप पर काबू पा सकता है। पोटेशियम युक्त खाद्य पदार्थों जैसे केला, सेब, बीस, गाजर का सेवन और फलों, सब्जियों व कम वसायुक्त डेयरी प्रोडक्स जिनमें संतृप्त वसा की मात्रा कम हो, का सेवन उच्च रक्तचाप से सुरक्षा के लिए अच्छा है। उच्च रक्तचाप के मरीजों के लिए प्रतिदिन 2400 एमजी (1 चम्मच नमक) से भी कम सोडियम की मात्रा के सेवन और पोटेशियम की 3500 एम.जी. से अधिक मात्रा के सेवन हेतु कहा गया।

## मामूली न समझें बच्चों के गले के दर्द को

अगर किसी बच्चे के गले में दर्द हो तो इसे मामूली न समझें। यह गंभीर किस्म के बुखार रयमैटिक फीवर का भी लक्षण हो सकता है। यह बुखार गले के साथ-साथ ह्रदय को भी बुरी तरह प्रभावित करता है। गले में दर्द या सूजन रोगाणुओं के एक विशेष समूह स्ट्रप्टोकोकल के संक्रमण के कारण होती है। वे बच्चे जो कुपोषण के शिकार हों या बच्चे जिन्हें पहले भी कभी रयुमैटिक फीवर हुआ हो, उनके इस रोग से संक्रमित होने की अधिक संभावना रहती है। चूंकि यह बीमारी छुआछूत से भी लग सकती है, इसलिए इस बुखार से संक्रमित बच्चों से दूसरे स्वस्थ बच्चों को अलग रहना चाहिए, अन्यथा उन्हें भी इसका संक्रमण लग सकता है।

## स्वास्थ्यवर्धक है ख्यालों को कागज पर उतारना

जर्मनी में हाल ही में हुए शोधों से पता चला है कि अपने विचारों को लिखने से नकारात्मक सोच को रोका जा सकता है। लेखन हमारी अंदरुनी आरोग्य शक्ति में अभिवृद्धि करता है। इससे मानसिक एवं शारीरिक कष्ट में भी कमी आती है। प्रबल भावनाओं को लेख के रूप में व्यक्त कर दिए जाने से रोगों से लड़ने की क्षमता तेजी से काम करना शुरू कर देती है।

**प्लास्टिक सर्जरी को वह लोग बढ़ावा दे रहे हैं, जो अपने वेश में बदलाव चाहते हैं। इस बदलाव के लिए लोग कोई भी कीमत देने को तैयार रहते हैं। अगर आप सौन्दर्य निखारने के लिए प्लास्टिक सर्जरी करा रहे हैं, तो इसमें बहुत सावधानी की भी जरूरत रहती है। आप भी सोच-समझकर यह कदम उठाएं।**

# प्लास्टिक सर्जरी में रखें सावधानियां

## क्या है प्लास्टिक सर्जरी

प्लास्टिक सर्जरी का मतलब है शरीर के किसी हिस्से को ठीक करना। प्लास्टिक सर्जरी में प्लास्टिक का उपयोग नहीं होता है। सर्जरी के पहले जुड़ा प्लास्टिक ग्रीक शब्द प्लास्टिको से आया है। ग्रीक में प्लास्टिको का अर्थ होता है बनाना या तैयार करना। प्लास्टिक सर्जरी में सर्जन शरीर के किसी हिस्से के उत्तकों को लेकर दूसरे हिस्से में जोड़ता है। भारत में सुश्रुत को पहला सर्जन माना जाता है। आज से करीब 2500 साल पहले सुश्रुत युद्ध या प्राकृतिक विपदाओं में जिनकी नाक खराब हो जाती थी, उन्हें ठीक करने का काम करते थे।

## बिगड़ भी जाते हैं केस

इंटरनेट पर ऐसी कई घटनाओं से संबंधी जानकारियां भरी हुई है, जहां पर सर्जरी से संबंधित कार्य पूरी तरह से गलत हो गए हैं, जिसकी वजह से बहुत ही बदतर परिणाम देखने को मिले हैं। ऐसे परिणाम भयावह हो सकते हैं। पर सारी प्लास्टिक सर्जरी गलत नहीं होती है। ऐसे भी कई उदाहरण हैं, जहां पर प्लास्टिक सर्जरी कई बार लोगों के रंगरूप को सही करने में प्रभावशाली महसूस हुई है, जिसमे कि कई लोगो को अत्यधिक अच्छे परिणाम मिले हैं। असल में ऐसी बहुत सारी बातें हैं, जो आप पर निर्भर करती हैं। जब भी आप कोई भी शल्य चिकित्सा चाहते हैं, आपको यह बात ध्यान में रखना होगी कि प्लास्टिक सर्जरी का गलत होना सिर्फ शल्य चिकित्सक पर ही पूरी तरह से निर्भर नहीं करती है। आप भी इसके लिए बराबरी के जिम्मेदार हो सकते हैं।

### 30 फीसदी बढ़ा बाजार

माना जाता है कि भारत में प्लास्टिक सर्जरी का बाजार सालाना 30 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ रहा है। जैसे-जैसे और लोग अपनी सुंदरता और रूप रंग को और गंभीरता से लेंगे, वैसे-वैसे बाजार बढ़ता रहेगा और कॉस्मेटिक सर्जरी के विशेषज्ञों के दफ्तरों के बाहर अपनी नाक या चेहरा सुधारने लोगों की लाइनें बढ़ती रहेंगी। भारत में प्लास्टिक सर्जरी कराने 10 फीसदी लोग विदेश से आते हैं।

### विकल्प हैं बहुत

इन्सानों को अपने शरीर से हमेशा से ही शिकायतें थी, लेकिन पिछले कुछ सालों में यह परेशानी और बढ़ गई है। पहले लोगों के पास विकल्प नहीं थे, अब कॉस्मेटिक सर्जन के पास जाने का विकल्प है और जब आपके पास इस परेशानी का हल है तो परेशानी भी किसी न किसी तरह निकल आती है।

## मेकअप से संबंध नहीं

हमेशा ध्यान रखें कि प्लास्टिक सर्जरी किसी मेक अप से संबंधित नहीं है। यह आपके साथ जीवन भर रहता है। यह एक सही से की गई शल्य चिकित्सा है, जिसमें आपको थोड़ा दर्द होगा और इसके लिए आपको अपने काम से छुट्टी लेनी पड़ सकती है। आपको अस्पताल में भर्ती होना पड़ सकता है और आपको इसको सही करने के लिए पर्याप्त समय की भी जरूरत पड़ सकती है। अगर शल्य चिकित्सा में

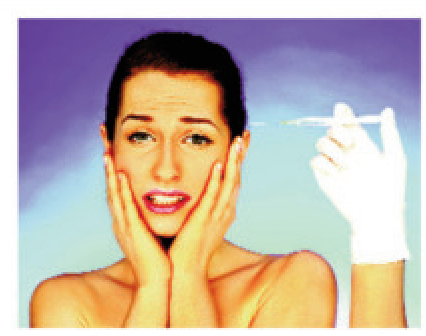

ऐसा वादा किया जाता है कि आपको कोई दर्द नहीं, कोई छुट्टी नहीं और तुरंत समाधान मिल जाएगा तो ये ज्यादातर वह डॉक्टर होते है, जिनकी प्लास्टिक सर्जरी गलत हो जाती है। यह वादे कुछ नहीं, बल्कि विज्ञापन और छलावे होते हैं, जो कि अपना विश्वास बहुत जल्दी खो देते हैं।

## सही जानकारी जरूरी

यह बात बहुत जरूरी है कि आप प्लास्टिक सर्जरी से पहले अपने घर का पूरा काम कर लें, इससे पहले कि आप कोई शल्य चिकित्सक को ढूंढें। अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से किसी अनुभवी शल्य चिकित्सक के बारे में पूछें। उन लोगों के कुछ कार्यों

को देखें। अगर आपको उनके पहले के मरीज मिल जाएं, तो उनसे बात करके और उनके अनुभवों के बारे में पूछ कर आपको शल्य चिकित्सक के बारे में बहुत कुछ पता चल सकता है। आपको डॉक्टर के पेशेवर अनुभव, प्रमाण-पत्र और डॉक्टर का पहले का रिकार्ड भी देखना होगा, जिसमें कि आप यह देख सकते हैं कि उस डॉक्टर ने ऐसे कितने मरीज देखे हैं, जिनकी दशा आपके समान थी। आपको यह भी देखना पड़ सकता है कि क्या कभी ऐसी भी घटना हुई है, जब डॉक्टर द्वारा की गई प्लास्टिक सर्जरी बुरी तरह से गलत हो गई हो। अगर मरीजों से मिलना संभव नहीं है तो आप डॉक्टर से उसके द्वारा की गई शल्य चिकित्सा के पहले और बाद की तस्वीरें देख सकते हैं, ताकि आपको यह पता चल सके कि डॉक्टर लगातार अच्छे परिणाम देने के काबिल है या नहीं। सुंदर और जवान दिखने की चाह के पीछे सैकड़ों लोग लाखों रुपए खर्च करने से पीछे नहीं हटते।

## भारत चौथे स्थान पर

एक सर्वेक्षण में खुलासा हुआ है कि प्लास्टिक सर्जरी कराने के मामले में भारत चौथे स्थान पर है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि सुंदर दिखने की चाह हर किसी के मन में होती है। तभी तो भारत में भी बच्चे को जन्म दे चुकी मां, कॉलेज जाने वाली युवा पीढ़ी, सभी प्लास्टिक सर्जरी की ओर आकर्षित हुए हैं। यह सर्वे पिछले वर्ष इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ एस्थेटिक प्लास्टिक सर्जरी ने कराया था। सर्वे सूची में भारत को चौथा स्थान मिला। मम्मी मेकओवर कराने वाले, चेहरे को फिर से जवां दिखाने की इच्छा रखने वाले, पेट को कम करने के इच्छुक, स्तनों का आकार फिट कराने की इच्छुक महिलाओं की संख्या बहुत ज्यादा है।

# एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी महिला हॉकी के सेमीफाइनल में आज भारत और जापान का होगा मुकाबला

**राजगीर ( (एजेंसी)।** भारतीय महिला हॉकी टीम एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2024 के सेमीफाइनल में मंगलवार को जापान से मुकाबला करेगी। दोनों ही टीमों ने सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया है। भारतीय टीम ने अब तक इस टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करते हुए पांच मैचों में जीत के साथ ही 15 अंकों के शानदार रिकॉर्ड के साथ ग्रुप स्टेज में शीर्ष स्थान हासिल किया है।

भारतीय टीम ने कुल 26 गोल किए हैं और केवल दो गोल खाए हैं। इस बीच, जापान ग्रुप स्टेज में पांच अंकों के साथ चौथे स्थान पर रहा, उसने 6 गोल किए और 9 खाए। उनका आखिरी ग्रुप स्टेज मुकाबला रविवार को भारत की 3-0 की जीत के साथ समाप्त हुआ।

सलीमा ने सेमीफाइनल मुकाबले से पहले टीम को लेकर कहा, जापान एक मजबूत टीम है और ग्रुप चरण में हमने उनके खिलाफ मुश्किल मैच खेला था, लेकिन हमें अपनी तैयारी और अपने साथियों पर पूरा भरोसा है। हम सेमीफाइनल में भी अच्छा प्रदर्शन करने के लिए तैयार हैं।

मेजबान टीम ने टूर्नामेंट में अब तक सभी तरह के शानदार प्रदर्शन किए हैं। टीम के लिए सबसे अधिक गोल दीपिका ने किये हैं। इस खिलाड़ी ने पांच मैचों में 10 गोल किए हैं। वहीं संगीता कुमारी के नाम भी चार गोल हैं। वहीं जापान ने पिछले मुकाबले में भारत को कड़ी चुनौती दी थी। मियु हसेगावा दो गोल के साथ जापान की सबसे ज्यादा गोल करने वाली खिलाड़ी हैं।

भारतीय टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने कहा, पूल मैच और सेमीफाइनल में काफी फर्क है। सभी टीमें अपनी-अपनी योजनाएं लेकर आती हैं और हमें जापान से निश्चित रूप से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा, वे एक मजबूत टीम हैं। लेकिन हमें अपना बेहतरीन प्रदर्शन करना होगा। हमें यह पता लगाना होगा कि हम कहां ज्यादा मौके बना सकते हैं। अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करना और जिस तरह से हम खेलना चाहते हैं, वैसा खेलना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

# सिनर ने फ्रिट्ज को हराकर जीता एटीपी फाइनल्स का खिताब

**ट्यूरिन (एजेंसी)।** इटली के टेनिस स्टार जैनिक सिनर ने सोमवार को अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को हराकर एटीपी फाइनल्स का खिताब अपने नाम किया। सिनर का एटीपी वर्ल्ड टूर फाइनल्स के रूप में घरेलू धरती पर यह पहला खिताब है।

आज यहां खेले गये मुकाबले में जैनिक सिनर ने टेलर फ्रिट्ज को 6-4, 6-4 से हराया। यह एक सत्र का उनका आठवां खिताब है। इस जीत के साथ वे एटीपी रैंकिंग के इतिहास में वर्ल्ड नंबर वन बनने वाले अपने देश के पहले खिलाड़ी बन गए। सिनर को खिताब जीतने पर पुरस्कार स्वरूप 41 करोड़ 35 लाख रुपये प्राप्त हुए है।

मैच के बाद सिनर ने कहा, 'मुझे वास्तव में लगता है कि अभी भी सुधार की कमी है। आज मैंने कई बार बहुत, बहुत अच्छी सर्विस की, जो पूरे टूर्नामेंट में ऐसा नहीं था। अभी भी कुछ शॉट और पॉइंट हैं जिन्हें मैं कभी-कभी बेहतर बना सकता हूं, लेकिन वे छोटी-छोटी बारीकियां हैं।' उन्होंने, 'मैं इससे बहुत खुश हूं क्योंकि यह एक अविश्वसनीय सीज़न को समाप्त करने का एक बहुत अच्छा तरीका है। बहुत सारी जीतें, बहुत सारे खिताब।'

# टीम इंडिया के अभ्यास मैच नहीं खेलने से वॉन हैरान

**लंदन (एजेंसी )।** इंग्लैंड क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने कहा है कि भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया दौरे में अभ्यास मैच नहीं खेलने का जो फैसला किया है वह गलत है। वॉन ने कहा कि भारतीय टीम प्रबंधन ने ये फैसला किसलिए लिया वह समझ से परे है। उन्होंने कह कि इससे पहले भारतीय टीम ने जब भी अभ्यास मैच खेले हैं उसे लाभ मिला है। वॉन ने सवाल उठाया कि क्या भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया का उसके घर में सामना करने के लिए पर्याप्त तैयारी की है। उन्होंने नेट सत्र और मैच सिमुलेशन के पक्ष में वाका में तीन दिवसीय इंट्रा स्क्वाड मैच को रद्द करने के बीसीसीआई के फैसले पर भी हैरानी जताई। वॉन ने कहा, मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया जैसी टीम के खिलाफ सीरीज से पहले केवल एक इंट्रा-स्क्वाड मैच खेलना चाहती है। साथ ही कहा कि इंट्रा-स्क्वाड मैच खेलकर आप अपने को उस प्रतिस्पर्धी मानसिकता में कैसे ला सकते हैं। टीम को अभ्यास मैच से विदेशी हालातों का पता चलता है और वह उसके अनुरुप ढ़लती है। इसके अलावा उसे अपनी कमजोरियों भी पता चलती हैं।

साथ ही इस तरह एक बड़ा जोखिम उठाकर भारत ने एक बड़ा रिस्क लिया है। गौरतब है कि विदेशी दौरों पर अभ्यास मैच न खेलने वालों में भारत अकेला नहीं है। ऑस्ट्रेलिया ने भी पिछले साल भारत और इंग्लैंड के दौरे से पहले कार्यक्रम में अभ्यास मैच नहीं खेले थे। कोई अभ्यास मैच न होने के कारण, भारतीय टीम की अनुकूलन क्षमता की परीक्षा पर्थ स्टेडियम में पहली गेंद से ही होगी। वॉन के अनुसार, यह एक बड़ा कदम होगा और इसका परिणाम सीरीज के लिए माहौल तैयार कर सकता है। उन्होंने कहा कि अगर वे सीरीज में जीत के साथ अच्छी शुरुआत करते हैं तो यह एक काफी साहसिक फैसला भी होगा पर यदि ऐसा नहीं हुआ तो टीम मुश्किल में आ जाएगी।

# श्रीलंका ने न्यूजीलैंड को तीन विकेट से हराया

**पल्लेकेले (एजेंसी )।** श्रीलंका और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज खेली जा रही है। इस सीरीज के पहले मुकाबले को श्रीलंका की टीम ने तीन विकेट से अपने नाम कर लिया है। सीरीज के पहले मैच में मिली जीत के साथ ही उनकी टीम ने 1-0 की लीड भी हासिल कर ली है। श्रीलंका ने इस साल काफी अच्छा प्रदर्शन किया है और वह इस सीरीज में भी अपने अच्छे खेल को जारी रखे हुए हैं। श्रीलंका ने सीरीज के पहले मैच को काफी रोमांचक अंदाज में अपने नाम किया।

श्रीलंका और न्यूजीलैंड के बीच खेले गए पहले वनडे मैच में बारिश का असर देखने को मिला। जिसके कारण मैच को घटा कर 47-47 ओवर का कर दिया गया। इस मैच में श्रीलंका के कप्तान ने टॉस जीता और उन्होंने पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। कीवी टीम इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने के लिए उतरी और वह 45.1 ओवर में 209 रन पर ऑलआउट हो गए।

अब श्रीलंका को 47 ओवर में 210 रनों का टारगेट चेज करना था। उनकी टीम ने एक ओवर पहले यानी कि 46 ओवर में 7 विकेट खोकर 210 रन बनाए और इस मुकाबले को आसानी से अपने नाम कर लिया। श्रीलंका की जीत में कुशल मेंडिस का रोल काफी अहम रहा। उनकी शानदार 74 रनों की पारी के कारण श्रीलंका ने इस मैच को जीता। वह एक छोर से अकेला रन बना रहे थे। उनकी इस पारी के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया।

श्रीलंकाई टीम ने इस साल काफी शानदार क्रिकेट खेला है। सबसे पहले उन्होंने न्यूजीलैंड को अपने घर पर खेली गई टेस्ट सीरीज में 2-0 से क्लीन स्वीप किया। इसके बाद उन्होंने इंग्लैंड में जाकर टेस्ट मैच जीता। इन सबके अलावा श्रीलंका ने टीम इंडिया को वनडे सीरीज में भी मात दी। अब श्रीलंकाई टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में भी अच्छा कर रही है। यह वही श्रीलंकाई टीम है जिसे लेकर कुछ महीनों पहले ये बात हो रही थी कि उनकी टीम में अब कुछ अच्छा नहीं बचा है, लेकिन सनथ जयसूर्या के हेड कोच बनते ही श्रीलंकाई टीम ने नई जान आ गई है। वह लगातार अपने अच्छे खेल से फैंस को इंप्रेस कर रहे हैं।

## भारतीय टीम को हराने का है अच्छा अवसर : ब्रैंडन जूलियन

मेलबोर्न । पूर्व ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ब्रैंडन जूलियन ने कहा है कि इस बार मेजबान टीम के पास बॉर्डर गावस्कार सीरीज में भारतीय टीम को हराने का अच्छा अवसर है। जूलियन के अनुसार भारतीय टीम के प्रमुख बल्लेबाज कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली पिछले काफी समय से फार्म में नहीं हैं। इसके अलावा मध्यक्रम भी कमजोर है। जिसका लाभ हमारी टीम दबाव बनाकर उठा सकती है। न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज खराब प्रदर्शन से भी भारतीय टीम पर मनोवैज्ञानिक दबाव रहेगा। कोच गौतम गंभीर बाहर हालांकि अपने खिलाड़ियों का बचाव करते हुए उन्हें पिछली सीरीज से उबरकर बेहतर प्रदर्शन को प्रेरित करने का प्रयास करेंगे पर ये उनके लिए आसान नहीं रहेगा। मुझे लगता है कि ऑस्ट्रेलियाई टीम उन्हें पर्थ में हरा देगी। हमने उनके खिलाफ पिचली चार सीरीज में से कोई भी सीरीज नहीं जीती है इसलिए इस बार हम हिसाब बराकर कर

# वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी मैच रद्द होने के बाद इंग्लैंड ने श्रृंखला जीती

ग्रोस आइलेट, 18 नवंबर (वेब वार्ता)। वेस्टइंडीज के खिलाफ पांचवां और आखिरी मैच बारिश के कारण पांच ओवर बाद ही रद्द होने से इंग्लैंड ने टी20 श्रृंखला 3.1 से जीत ली। वेस्टइंडीज ने पांचवें ओवर के आखिर में बिना किसी नुकसान के 44 रन बना लिये थे जब बारिश होने लगी। एविन लुईस 29 और शाइ होप 14 रन बनाकर खेल रहे थे। बारिश रूकती नहीं देखकर अंपायरों ने मैच रद्द करने का फैसला किया। इंग्लैंड ने पहले तीन मैच जीते थे जबकि वेस्टइंडीज ने चौथा मैच जीता था।

# विराट की जगह नंबर तीन के लिए बेहतर विकल्प बनकर उभरे हैं तिलक

मुम्बई । युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा ने जिस प्रकार से दक्षिण अफ्रीका में हुई टी20 सीरीज में नंबर तीन पर उतरते हुए शानदार बल्लेबाज की है। उससे वह आने वाले समय में नंबर तीन पर उतरने के लिए विराट कोहली के सबसे अधिक विकल्प बनकर उभरे हैं। दक्षिण अफीका सीरीज में तिलक ने दिखाया है कि वह लंबी परियां खेलने के साथ ही एक मैच विजेता खिलाड़ी हैं। नंबर-3 पर बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने लगातार दो मैचों में दो शतक लगाये। तिलक ने सबसे पहले घरेलू किकेट और आईपीएल में चमक बिखेरी थी। उसके बाद से ही वह अवसर मिलने पर अंतरराष्ट्रीय मंच में भी लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। तिलका का यहां तक का सफर आसान नहीं रहा है। करियर के शुरुआती दौर में खराब आर्थिक स्थिति के कारण तिलक को काफी परेशानियों का सामना किया है पर उन्होंने कभी हार नहीं मानी। तिलक के पास शुरुआती दौर में बेहतर सुविधा नही थी लेकिन उनकी बल्लेबाजी काफी अच्छी थी। इसके बाद भी पिता ने तिलक का पूरा साथ दिया। वर्मा को बचपन के कोच ने टेनिस बॉल क्रिकेट खेलते हुए देखा था, और फिर उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। उन्होंने आईपीएल 2022 में डेब्यू किया था। 2020-21 के विजय हजारे ट्रॉफी में दो शतक बना कर लोगों का ध्यान खींचा। मुंबई इंडियंस ने 2022 की नीलामी में तिलक को एक मोटी रकम देकर अपने साथ जोड़ा। उस समय उनका बेस प्राइस 20 लाख था और वे एक अनकैप्ड खिलाड़ी थे। तब से लेकर तिलक लगातार मुंबई इंडियंस की ओर बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

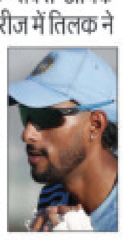

# भारत ने जूनियर एशिया कप हॉकी के लिए टीम का ऐलान किया, इन 20 खिलाड़ियों को मिला मौका

**नई दिल्ली (एजेंसी )।** डिफेंडर आमिर अली मस्कट में 26 नवंबर से होने वाले पुरूष जूनियर एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट के लिए भारत की 20 सदस्यीय टीम के कप्तान होंगे। यह टूर्नामेंट अगले साल होने वाले जूनियर विश्व कप का क्वालीफाइंग टूर्नामेंट भी है। भारत ने रिकॉर्ड चार बार टूर्नामेंट जीता (2004,2008,2015, 2023) है। उसने पाकिस्तान को पिछले साल 2-1 से हराकर खिताब जीता था।

इस साल टूर्नामेंट में 10 टीमों को 5-5 के दो पूल में बांटा गया है। भारत के साथ चीनी ताइपे, जापान, कोरिया और थाईलैंड पूल ए में हैं जबकि बांग्लादेश, मलेशिया, चीन, ओमान और पाकिस्तान पूल बी में हैं। भारत ने मेजबान होने के नाते एफआईएच हॉकी जूनियर विश्व कप के लिये स्वतः क्वालीफाई कर लिया है।

कोच पी आर श्रीजेश के मार्गदर्शन में टीम जोहोर कप की सफलता को दोहराना चाहेगी। श्रीजेश ने कहा, 'जोहोर कप कई खिलाड़ियों के लिए पहला अनुभव था लेकिन उन्होंने जबर्दस्त प्रदर्शन किया। मैं उनके प्रदर्शन से बहुत खुश हूं। खिलाड़ियों ने बेंगलुरू में राष्ट्रीय शिविर में काफी मेहनत की है और हमने अपने खेल में कुछ बदलाव भी किए हैं।'

**भारतीय टीम**

**गोलकीपर:** प्रिंसदीप सिंह, बिक्रमजीत सिंह

**डिफेंडर :** आमिर अली (कप्तान), टी प्रियब्रत, शारदानंद तिवारी, योगेम्बर रावत, अनमोल इक्का, रोहित

**मिडफील्डर :** अंकित पाल, मनमीत सिंह, रोशन कुजूर, मुकेश टोप्पो, थोकचोम किंगसन सिंह

**फॉरवर्ड :** गुरजोत सिंह, सौरभ आनंद कुशवाहा, दिलराज सिंह, अर्शदीप सिंह, अराइजीत सिंह हुंडल

**वैकल्पिक खिलाड़ी :** सुखविंदर और चंदन यादव

# डेविस कप के जरिये विदाई की तैयारी में जुटे नडाल

मालागा (स्पेन)। स्पेन के महान खिलाड़ी रफेल नडाल मंगलवार से यहां घरेलू दर्शकों के सामने होने वाले डेविस कप फाइनल्स के जरिये टेनिस से विदा लेने की तैयारी में हैं। 38 वर्ष के नडाल 20 साल से अधिक समय से खेल रहे हैं और टेनिस के 'बिग थ्री' में से रिटायर होने जा रहे दूसरे खिलाड़ी हैं। रोजर फेडरर ने 2022 में खेल से विदा ली थी जबकि नोवाक जोकोविच अभी खेल रहे हैं। पिछले सप्ताह से मालागा में लगातार अभ्यास कर रहे नडाल ने कहा, ''यह कठिन फैसला है जिसे लेने में मुझे समय लगा। लेकिन जीवन में जो शुरू हुआ है, वह खत्म होना ही है। मुझे लगता है कि यह विदा लेने का सही समय है। मेरा कैरियर इतना लंबा और सफल रहा जितना मैने सोचा भी नहीं था।''

अभी यह स्पष्ट नही है कि नडाल का आखिरी मैच कब होगा क्योंकि डेविस कप टीम स्पर्धा है और अभी तय नहीं है कि आगे के नतीजे क्या होते हैं। स्पेन को मंगलवार को नीदरलैंड से खेलना है जिसमें जीतने पर कनाडा या जर्मनी से शुक्रवार को सेमीफाइनल खेलना होगा। एकल में दो और युगल में एक मैच होना है। अभी पता नहीं है कि नडाल एकल खेलेंगे, युगल या दोनों या एक भी नहीं। नडाल के साथ स्पेन की टीम में चार बार के ग्रैंडस्लैम चैम्पियन कार्लोस अल्काराज, रॉबर्टो बतिस्ता एगुट, पेड्रो मार्तिनेज और मार्शेल ग्रानोलेर्स हैं।

# सहवाग से मतभेद के बाद पंजाब किंग्स से अलग हुए थे मैक्सवेल

**मुम्बई (एजेंसी )।** ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में पंजाब किंग्स के लिए खेलते हुए कई रिकॉर्ड बनाए हैं। मैक्सवेल पंजाब किंग्स के कप्तान भी रहे थे पर मेंटॉर वीरेन्द्र सहवाग से मतभेद के बाद उन्हें टीम छोड़ दी। वह 2014 में किंग्स इलेवन पंजाब में शामिल हुए थे। उनकी टीम तब फाइनल में पहुंची थी पर वहां कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से हार गयी गई। मैक्सवेल ने इस आईपीएल में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 552 रन बनाए थे। पंजाब के साथ अपने अपने सफर को याद करते हुए मैक्सवेल ने कहा कि हम उस समय अंतिम ओवर में हार गए थे। इस क्रिकेटर ने कहा कि आपका सफर कितना भी अच्छा क्यों न हो पर ट्रॉफी के बिना सब बेकार है। साल 2014 के बाद पंजाब का प्रदर्शन गिर गया और वह अंक तालिका में आखिरी स्थानों पर रही। मैक्सवेल ने इसको लेकर कहा कि तब टीम के लिए कठिन समय था और एक युवा खिलाड़ी के रूप में उनके लिए इसे स्वीकार करना मुश्किल रहा था।

2017 में मैक्सवेल की एक बार फिर पंजाब टीम में वापसी हुई। तब सहवाग टीम मेंटर बन गये थे। वहीं मैक्सवेल को कप्तानी मिली। मैक्सवेल ने कहा कि टीम बनते ही स्पष्ट हो गया था कि इसपर सहवाग का प्रभाव है। उन्होंने कोच जे अरुणकुमार के साथ मिलकर फैसले लेने की जिम्मेदारी ली, जिससे खिलाड़ियों और कोचों के बीच भ्रम पैदा हो गया। जिसका प्रभाव टीम पर पड़ा। मैक्सवेल ने कहा कि एक मुकाबले में इशांत शर्मा को आखिरी समय पर टीम में जगह दे दी गई जोकि निर्णय लेने में अव्यवस्था को दिखाता था। टीम पर सहवाग की पकड़ बढ़ती गई। जिससे उनके बीच मतभेद भी बढ़ने लगे। और निराशाजनक सीज़न के बाद मैक्सवेल और सहवाग के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया।

# पृथ्वी सैयद मुश्ताक टूर्नामेंट के लिए मुम्बई टीम में शामिल, श्रेयस करेंगे कप्तानी

मुम्बई । सैयद मुश्ताक अली टी20 टूर्नामेंट के लिए श्रेयस अय्यर मुंबई टीम के कप्तान होंगे। इस टूर्नामेंट के लिए मुम्बई की 17 सदस्यीय टीम में बल्लेबाज पृथ्वी शॉ को शामिल किया गया है पर सूर्यकुमार यादव को नहीं लिया गया है। ये टूर्नामेंट 23 नवंबर से 15 दिसंबर तक खेला जाएगा। पृथ्वी को हाल ही में वजन अधिक होने के कारया मुंबई रणजी टीम से बाहर कर दिया गया था पर अब उनकी वापसी हुई है। टीम में अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे को भी शामिल किया गया है। इसके अलावा बल्लेबाज सिद्धेश लाड भी टीम में शामिल हैं। सूर्यकुमार निजी कारणों की वजह से इस टूर्नामेंट से बाहर हैं। इस टूर्नामेंट में कप्तानी कर रहे अय्यर का लक्ष्य बेहतर प्रदर्शन कर भारतीय टीम में वापसी करना रहेगा। इस रणजी ट्रॉफी सत्र में उन्होंने 90.40 की औसत से 452 रन बनाए हैं जिसमें दो शतक शामिल हैं। इस बल्लेबाज ने ओडिशा के खिलाफ 233 रन (228 गेंद, 24 चौके, नौ छक्के) की तेज पारी खेली और फिर महाराष्ट्र के खिलाफ 142 रन (190 गेंद, 12 चौके, चार छक्के) बनाकर मुंबई की लगातार दो जीत में अहम भूमिका निभाई। वही पृथ्वी को इससे पहले फिटनेस और अनुशासनहीनता के कारण रणजी ट्रॉफी में शामिल नहीं किया गया था। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया में भारत ए के स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर तनुश कोटियन को भी टीम में जगह मिली है।

**मुंबई टीम इस प्रकार है**

श्रेयस अय्यर (कप्तान), पृथ्वी शॉ, अंगकृष रघुवंशी, जय बिस्टा, अजिंक्य रहाणे, सिद्धेश लाड, सूर्यांश शेडगे, साईराज पाटिल, हार्दिक तामोरे (विकेटकीपर), आकाश आनंद (विकेटकीपर), शम्स मुलानी, हिमांशु सिंह, तनुश कोटियन, शार्दुल ठाकुर, मोहित अवस्थी, रॉयस्टन डायस, जुनेद खान।

# आईपीएल नीलामी में इन स्पिनरों पर मोटी रकम लगा सकती हैं टीमें

**मुम्बई (एजेंसी)।** इसी माह 24 और 25 नवंबर को साऊदी के जेद्दा में होने वाली आईपीएल मेगा नीलामी में सभी दस फ्रेंचाइजी खिलाड़ियों पर दांव लगाएंगी। वहीं इस मेगा ऑक्शन से पहले सभी 10 टीमें रिटेन किए गए खिलाड़ियों की सूची बीसीसीआई को सौंप दी है। कई खिलाड़ी ऐसे भी रहे जिनका आईपीएल में बेहतरीन प्रदर्शन रहा लेकिन उन्हें टीमों ने रिलीज कर दिया। ऐसे ही खिलाड़ियों पर फ्रेंचाइजियों की नजरें रहेंगी। इसमें आर अश्विन, यजुवेन्द्र चहल, वाशिंगटन सुंदर के अलावा श्रीलंका के वानिंद हसरंसा जैसे स्पिनर शामिल हैं।

2025 सत्र के लिए कुल 1574 क्रिकेट खिलाड़ियों ने अपना नाम दर्ज कराया है पर बीसीसीआई ने 574 खिलाड़ियों के नाम को ही छांटा है। इसमें से 366 भारतीय जबकि 208 विदेशी खिलाड़ी है। तीन एसोसिएट देशों के खिलाड़ी भी इसमें शामिल हैं। 204 स्लॉट खाली हैं जिसमें 70 ओवरसीज क्रिकेटर्स के लिए है। वहीं 2 करोड़ की सबसे बड़ी रिजर्व राशि रखी गयी है।

**आर अश्विन-** आर अश्विन आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में छठे नंबर पर हैं। उन्होंने 7.12 की इकॉनमी और 29.83 के औसत से अब तक 212 मैच में 180 विकेट लिए हैं। अश्विन 2022 से राजस्थान रॉयल्स से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। अश्विन इससे पहले सीएसके, राइजिंग सुपर जायंट्स, किंग्स इलेवन पंजाब और दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेल चुके हैं। ऐसे में अब सभी फैंचाइजियों की उनपर नजरें रहेंगी।

**युजवेंद्र चहल-** आईपीएल इतिहास के सबसे सफल गेंदाबाज युजवेंद्र चहल को उनकी टीम राजस्थान रॉयल्स का रिटेन नहीं करना सबसे ज्यादा हैरानी की बात रही है। वह सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं, जिन्होंने 7.84 की इकॉनमी और 22.45 अब तक 205 मैच में 160 विकेट लिए हैं। वह राजस्थान रॉयल्स के साथ 2022 से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। युजवेंद्र चहल आईपीएल में इससे पहले 2014 से 2021 तक रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का हिस्सा रहे थे।

**वाशिंगटन सुंदर-** वाशिंगटन सुंदर आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले 100 गेंदबाजों में शामिल हैं। उन्होंने 7.54 की इकॉनमी और 35.81 के औसत से अब तक 60 मैच में 37 विकेट लिए हैं। सुंदर आईपीएल 2022 से सनराइजर्स हैदराबाद के साथ जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिटेन नहीं किया। सुंदर ने आईपीएल में इससे पहले राइजिंग पुणे सुपरजायंट और आरसीबी के लिए खेला है।

**मिचेल सैंटनर-** न्यूजीलैंड के मिचेल सैंटनर ने आईपीएल इतिहास में 6.92 की इकॉनमी और 28.13 के औसत से अब तक 18 मैच में 15 विकेट लिए हैं। मिचेल सैंटनर आईपीएल 2018 से 2024 तक सीएसके का हिस्सा रहे। हालांकि, फ्रेंचाइजी ने उन्हें इस मेगा ऑक्शन से पहले ही रिलीज कर दिया। इस नीलामी में कई फ्रेंचाइजी उन्हें खरीदने के लिए ऊंची बोली लगा सकती हैं।

**वानिंदु हसरंगा-** वहीं वानिंदु हसरंगा आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में 103वें नंबर पर हैं। उन्होंने 8.13 की इकॉनमी और 21.37 के औसत से अब तक 26 मैच में 35 विकेट लिए हैं। हसरंगा आईपीएल 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के साथ जुड़े थे, लेकिन चोटिल होने के कारण पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे। इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। इससे पहले वो आरसीबी से जुड़े थे।

## जाति–धर्म नहीं देखती जहरीली हवा, रॉबर्ट वाड्रा ने किया दिल्ली के प्रदूषण पर पोस्ट

नई दिल्ली । दिल्ली इन दिनों भारी प्रदूषण के दौर से गुजर रही है। यहां लोगों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। वायु प्रदूषण को लेकर रॉबर्ट वाड्रा ने फेसबुक पोस्ट की है। रॉबर्ट वाड्रा ने पोस्ट में कहा है कि ये देखना भयावह है कि बीजेपी और आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के नागरिकों की सुरक्षा और भलाई को अपने राजनीतिक स्वार्थ का विषय बना दिया है। यहां जीतने के लिए विचारधाराओं की लड़ाई नहीं है। यह केवल अस्तित्व का प्रश्न है। जहरीली हवा को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस जाति या धर्म से है। ये एक अंधाधुंध हत्यारा है। अब रोडमैप बनाने का समय आ गया है। समाधान की राह हमसे शुरू होती है। वाड्रा ने कहा कि मैं सोचता हूं कि अगर कभी कोई ऐसा अवसर आया हो जिसमें हमें अपने राजनीतिक मतभेदों को एक तरफ रखने की मांग हुई हो, तो वह यही है। दुनिया के किसी भी अन्य शहर की तुलना में छोटे बच्चे और हमारे वरिष्ठ नागरिक प्रदूषण के इस स्तर से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। समय आ गया है कि हम एक उत्पादक चर्चा में एक साथ आएं। मुझे लगता है, अगर हम वास्तव में अपने पास उपलब्ध पर्याप्त संसाधनों को एक साथ रखें तो समाधान निकाल लेंगे। उन्होंने कहा कि चीन बड़े पैमाने पर पवनचक्की शैली के पंखे (स्मॉग कवर को खत्म करने के लिए) जैसी तकनीकों का उपयोग करके अपने स्मॉग के स्तर को काफी हद तक कम करने में सक्षम है।

## शराब की आदत और पत्नी से झगड़ा हुआ फिर तलवार उठाई और काट दिया गला

बांदा। जिले में एक व्यक्ति ने कथित तौर पर अपनी 30 साल की पत्नी की तलवार से गला काटकर हत्या कर दी। घटना मरौली गांव में हुई। थाना प्रभारी संदीप कुमार ने बताया कि दीपू सिंह (33) ने अपनी पत्नी प्रियंका पर तब हमला किया, जब वे दोनों अपने घर पर अकेले थे। कुमार के अनुसार, दीपू शराब का आदी था और कपल के बीच कुछ विवाद था। उन्होंने बताया कि हमले में पत्नी की तुरंत ही मौत हो गई और उसका पति मौके से भाग गया। घरेलू बहस में निर्मम हत्या का ये कोई पहला मामला नहीं है बल्कि आए दिन ऐसे कई मामले सामने आ रहे हैं। तीन दिन पहले ही दिल्ली के समयपुर बादली इलाके में मामूली विवाद के बाद पति ने चाकू से गोदकर पत्नी की हत्या कर दी। पति द्वारा हमला किए जाने के बाद लोगों ने महिला को अस्पताल में भर्ती कराया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। हमले बाद में शाम को, जब मृत पत्नी की सास घर लौटी और शव को खून से लथपथ देखा, तो उसने तुरंत पुलिस को सूचित किया। अधिकारी ने बताया कि हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। मामले की जांच की जा रही है और फरार आरोपी को पकड़ने के प्रयास जारी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक पुलिस ने बताया कि मृतक महिला और आरोपी पति की यह दूसरी शादी थी। पुलिस को घटना की सूचना सुबह 7:30 बजे मिली। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि महिला को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

## कोस्ट गार्ड ने 7 मछुआरों को बचाया, पाक मरीन की फायरिंग के बाद बोट समुद्र में डूब गई थी

अहमदाबाद । भारतीय जल क्षेत्र में पाकिस्तान मरीन की एक और शरारत सामने आई है। बीते दिन भारतीय जल क्षेत्र में मच्छीमारी कर रहे स्थानीय मछुआरों पर पाकिस्तान मरीन द्वारा फायरिंग की गई। फायरिंग की घटना के बाद भारतीय मछुआरों की बोट समुद्र में पलट गई। हांलाकि भारतीय कोस्ट गार्ड को जैसे ही इसकी सूचना मिली वह मौके पर पहुंच गए और सभी 7 मछुआरों को बचाकर किनारे पर ले आए। जानकारी के मुताबिक रविवार को अरब सागर में आईएमबीएल के पास फायरिंग की घटना हुई। जिसमें जखौ इलाके में भारतीय मछुआरों की बोट पर गोलीबारी की गई और इसके बाद पूरी नाव समुद्र डूब गई। यह गोलीबारी पाकिस्तान की मरीन सिक्युरिटी द्वारा की गई थी। फायरिंग के वक्त नौका में 7 मछुआरे सवार थे। समुद्र में बोट डूबने की सूचना मिलते ही भारतीय तट रक्षक बल के जवान घटनास्थल पर पहुंच गए और सभी 7 मछुआरों को बचाकर द्वारा बचाकर द्वारका लाया गया। हालांकि भारतीय तटरक्षक बल की ओर से इस बारे में कोई आधिकारिक पुष्टि नही की गई है। बताया यह भी जा रहा है कि कि नाव पर कोई फायरिंग नहीं हुई बल्कि पाकिस्तानी मरीन की बोट और भारतीय मछुआरों की नौका के बीच टक्कर हुई थी। इस कारण भारतीय नौका समुद्र में डूब गई। अब सवाल ये उठता है कि अगर ये नौका पाकिस्तान मरीन एजेंसी की बोट से टकराई तो क्या पाकिस्तानी नौसैनिक भारतीय सीमा में घुस आए थे? फिलहाल पूरे मामले में कोस्ट गार्ड द्वारा मछुआरों से पूछताछ की जा रही है। ओखा मरीन पुलिस ने पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है।

# केजरीवाल का फॉर्मूला: 15 दिन में 65 हजार बैठकें फतह कराएंगी दिल्ली

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान होना अभी बाकी है। लेकिन राजनैतिक दल अभी से अपनी जीत का रास्ता ढूंढने लगे हैं। सत्ताधारी आम आदमी पार्टी और विपक्षी दलों भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस ने जोरशोर से प्रचार भी शुरू कर दिया है। इस बीच आप के राष्ट्रीय संयोजक ने अपने नेताओं को अहम टास्क देते हुए कहा है कि यदि 15 दिनों में 65 हजार बैठकें कर लीं तो फिर जीत तय है। केजरीवाल ने 65 हजार बैठकों का फॉर्मूला तैयार किया है। उन्होंने अपने नेताओं को पूरी दिल्ली को मथ देने का तरीका बताया है। इसके साथ ही उन्होंने कमी निकालने वालों से बहस नहीं करने की नसीहत दी है।

केजरीवाल ने कहा है कि सभाओं के दौरान यदि कोई कमी निकाले तो उससे बहस नहीं करनी है, बल्कि एक और मौका मांगते हुए कहना है कि अब इसे ठीक कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा, किसी से बहस नहीं करनी है, दिल जीतना है उसका। कई बार बहस तो जीत जाते हो आप, दिल हार जाते। आप बहस हार जाओ दिल जीत लो। वह आपको कुछ कह रहा है, कहिए कि हां यार बात तो तू ठीक कर रहा है। इतना कहते ही वह आपका दीवाना हो जाएगा। वह आपकी कोई कमी निकाले, वह कहे कि केजरीवाल तुम्हारा ऐसा, बोलो हां यार तू ठीक कह रहा है, हम ठीक करेंगे इसको। एक मौका और चाहिए। कई काम किए हैं, कई काम रह भी गए। सारे काम थोड़े ना पूरे होते हैं। सबका दिल जीतना है, बहस नहीं करनी, लड़ाई नहीं करनी अपने को। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि यदि संभव हो तो मंडल अध्यक्ष और अन्य नेता तीन महीने की अपने काम से छुट्टी ले लें। केजरीवाल ने कहा, पार्टी को समय देना पड़ेगा। कई लोग हैं जो फुल टाइम हैं, कई फुल टाइम नहीं हैं। अगर हो सके तो तीन महीने की छुट्टी ले लो। जो-जो छुट्टी ले सकता है ले लो।

मंडल अध्यक्षों के साथ आयोजित बैठक में अरविंद केजरीवाल ने कहा, 5 बूथ हैं एक मंडल अध्यक्ष के पास। एक बूथ पर 200 से 250 परिवार हैं। हर 50 परिवार पर एक सभा करनी है। लगभग 4-5 मीटिंग हो गई एक बूथ पर। वो इतनी गहन करनी है कि उन 50 परिवार को अच्छे से टच कर लें। एक दिन घर-घर जाकर उन्हें इनवाइट करना है। अगले दिन उनको आसपास किसी गली में बुलाना है। उनके साथ मीटिंग करनी है। 50 को बुलाओगे तो 20-25 परिवार तो आ ही जाएंगे। एक राउंड फिर सबके घर जाना है एक बूथ पर 5 मीटिंग करनी है। 5 बूथ है तो 25 मीटिंग करनी है। 15 दिन में 25 मीटिंग करनी है। एक दिन में एक या दो मीटिंग करनी है। केजरीवाल ने कहा कि 15 दिन में जमकर काम कर लिया तो मथ जाएगी पूरी दिल्ली। ऐसा हो जाएगा जिसा धुआंधार प्रचार आज तक किसी ने देखा ही नहीं होगा। 13 हजार बूथ हैं, एक पर पांच मीटिंग कर लोगे तो 65 हजार मीटिंग। यदि 15 दिन में आपने 65 हजार मीटिंग कर ली तो कोई हरा सकता है आपको? भगवान भी खुश हो जाएंगे, यार मेहनत कर रहे हैं, कर्म कर रहे हैं ये लोग, इनको फल तो मिलना चाहिए।

## बांग्लादेशी घुसपैठिए झारखंड की संस्कृति और समाज के लिए गंभीर खतरा

–असम सीएम हिमंत विसवा सरमा ने झामुमो पर लगाए आरोप

नई दिल्ली। असम सीएम हिमंत विसवा सरमा ने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठिए झारखंड की संस्कृति और समाज के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं। सरमा ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की नीतियों को लेकर आरोप लगाया कि राज्य सरकार घुसपैठियों को संरक्षण दे रही है। गोड्डा में एक रैली में सीएम सरमा ने दावा किया कि बांग्लादेशी घुसपैठिए आदिवासी समुदाय की लड़कियों से शादी कर रहे हैं और उनकी ज़मीनें हड़प रहे हैं। उन्होंने इसे 'लव जिहाद' और भूमि हड़पने की प्रक्रिया बताया। उन्होंने कहा कि ये घुसपैठिए राज्य की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना के लिए खतरा बन चुके हैं। झारखंड विधानसभा चुनावों के लिए बीजेपी के चुनाव सह-प्रभारी हिमंत सरमा ने संथाल परगना क्षेत्र के ऐतिहासिक आंकड़े पेश करते हुए आरोप लगाया कि 1951 में इस क्षेत्र में हिंदुओं की संख्या 90 फीसदी थी, जो अब घटकर 67 फीसदी रह गई है। वहीं, मुस्लिम आबादी 1951 में दो लाख से बढ़कर 31 फीसदी तक पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि झामुमो सरकार वोट बैंक की राजनीति के लिए घुसपैठ को बढ़ावा दे रही है। इस बयान के बाद झारखंड में राजनीतिक माहौल गरमा सकता है।

## इंदिरा गांधी को भी लगता था वह हमेशा सत्ता में रहेंगी, मोदी-योगी भी नहीं रहेंगे: ओवैसी

मुजफ्फरनगर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में उपचुनाव के लिए चुनाव प्रचार के अंतिम दिन एआईएमआईएम के मुखिया असदुद्दीन ओवैसी ने मुजफ्फरनगर के मीरापुर विधानसभा सीट पर हो रहे उपचुनाव के लिए प्रचार किया। इस दौरान उन्होंने सीएम योगी आदित्यनाथ के नारे पर पलटवार किया। वहीं मंच से मुख्यमंत्री को खुली चुनौती भी दे डाली। उन्होंने कहा, 'झांसी में 10 बच्चे जले, जांच में दो जुड़वा बेटी की जलकर मौत हो गई। याकूब मंसूरी ने उन्हें जलने से बचाया था। उन्होंने कहा कि मैं योगी को चैलेंज करता हूं, क्या याकूब मंसूरी के सामने बोलोगे कि क्या कटोगे बंटोगे। ये सब जगह फैलाया जा रहा है। बटेंगे और कटेंगे से क्या होगा। बांग्लादेश में क्या हुआ है।

एमआईएम सांसद ने कहा, 'इंदिरा गांधी भी यही समझती थीं। योगी और मोदी भी यही समझते हैं कि सत्ता हमेशा इनके पास रहेगी। क्या बुढ़ाना कांड में कोई लाल टोपी वाला वहां गया। जब हमारे लोग जेल में जाते हैं तो हम सोचते हैं कि ससुराल गए। शेर के सामने आने का अखिलेश यादव आपने गलत टाइम लिया है। बीजेपी मेरी वजह से नहीं आई है इनकी वजह से आई है।' उन्होंने कहा कि भारत में बैठकर ट्रंप को जीता दिया, बताओ मेरा लड़ना जरूरी है क्या? आप नहीं चाहते हैं हजारों लोग सांसद और विधायक बनें। कुंदरकी के बीजेपी उम्मीदवार हैं क्या-क्या बोलें जा रहे हैं। बता दें कि उत्तर प्रदेश की सभी 9 विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनाव के लिए सोमवार को चुनाव प्रचार का अंतिम दिन है। चुनाव प्रचार के अंतिम दिन तमाम राजनीतिक दलों के दिग्गज नेताओं ने जनसभा और रोड शो किया। अब सभी 9 विधानसभा सीटों पर 20 नवंबर को वोटिंग होगी।

## प्रधानमंत्री मोदी के आरोपों पर सिद्धारमैया का पलटवार

### मोदी के खिलाफ मुकदमा दायर करने की तैयारी में कर्नाटक के सीएम

बेंगलुरु (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर्नाटक सरकार पर लगाए गए लूटने के आरोपों का कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने सोमवार को करारा जवाब दिया है। बेंगलुरु में कनकदास जयंती कार्यक्रम में सिद्धारमैया ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का बयान केवल वोट हासिल करने के लिए जनता को गुमराह करने की कोशिश है। उन्होंने इसे झूठ करार देते हुए, इसके खिलाफ मुकदमा दायर करने की योजना का ऐलान किया। सिद्धारमैया ने कहा, यह एक पूरी तरह से झूठा आरोप है, जो प्रधानमंत्री मोदी अपनी राजनीतिक लाभ के लिए कर रहे हैं। हम कानूनी पहलुओं की जांच करेंगे और इसके खिलाफ मुकदमा दायर करने का इरादा रखते हैं प्रधानमंत्री मोदी ने महाराष्ट्र में एक रैली के दौरान आरोप लगाया था कि कांग्रेस पार्टी कर्नाटक में लोगों को लूट रही है और कर्नाटक सरकार द्वारा वसूला गया पैसा कथित तौर पर महाराष्ट्र चुनावों में खर्च किया जा रहा है। पीएम मोदी ने यह भी कहा था कि कर्नाटक में कांग्रेस ने अपने चुनावी वादे पूरे नहीं किए और बदले में वसूली के अभियान चला रहे हैं, जिससे राज्य में घोटाले उजागर हो रहे हैं। पीएम मोदी ने केंद्रीय मंत्री एचडी कुमारस्वामी पर भी निशाना साधते हुए कहा था कि वह कर्नाटक के हित में कर हस्तांतरण के मुद्दे पर कुछ नहीं बोल रहे हैं। मोदी ने यह सवाल किया कि क्या कुमारस्वामी ने कभी गरीबों के लिए कुछ किया है।

#### कर हस्तांतरण में नहीं हो रहा अन्याय

सिद्धारमैया ने इस आरोप को भी खारिज किया और कहा कि कर्नाटक राज्य को कर हस्तांतरण में अन्याय हो रहा है,

क्योंकि राज्य उच्च करों का योगदान करता है, लेकिन उसे उसका उचित हिस्सा नहीं मिल रहा है। उन्होंने केंद्र सरकार से इसके समाधान की मांग की थी।

## मशहूर यूट्यूबर सौरव को लॉरेंस गैंग ने दी धमकी, 2 करोड़ की मांगी रंगदारी

–गैंग ने अपने इंस्टाग्राम आईडी का किया जिक्र, जय महाकाल भी लिखा

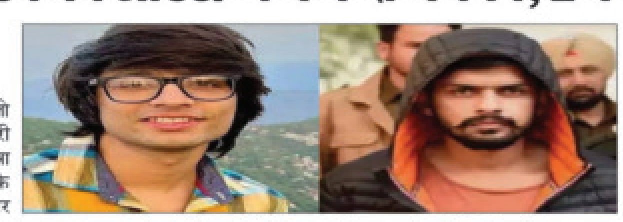

देहरादून (एजेंसी)। लॉरेंस बिश्नोई गैंग जो आजकल बड़े-बड़े लोगों को धमकी देकर रंगदारी मांग रहा है और अपना डर फैला रहा है। बाबा सिद्दीकी की हत्या और सलमान को धमकी देने के बाद अब लॉरेंस गैंग ने देश के प्रसिद्ध यूट्यूबर सौरव जोशी को धमकी भरा पत्र भेजा है। इस पत्र में गैंग ने सौरव जोशी से दो करोड़ रुपये की रंगदारी की मांगी है और परिवार के सदस्यों को जान से मारने की धमकी दी है। धमकी मिलने के बाद सौरव ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई है।

सौरव जोशी जो कि हल्द्वानी के ओलिविया रामपुर के रहने वाले हैं, उन्होंने शिकायत में बताया कि उन्हें लॉरेंस गैंग की ओर से एक पत्र मिला था। पत्र में लिखा था कि गैंग के सदस्य करन बिश्नोई ने उन्हें और उनके परिवार को जान से मारने की धमकी दी है। पत्र में यह भी कहा गया कि यदि सौरव जोशी ने दो करोड़ रुपए नहीं दिए, तो गैंग परिवार के किसी सदस्य की हत्या कर देगी। पत्र के अंत में गैंग के इंस्टाग्राम आईडी का जिक्र भी किया था और जय महाकाल लिखा था।

धमकी भरे पत्र में यह भी लिखा था कि अगर आप पुलिस में जाने की कोशिश करेंगे या किसी अन्य को इस धमकी के बारे में बताएंगे तो उसके गंभीर परिणाम होंगे। हम आपके परिवार के किसी सदस्य की जान ले सकते हैं। इस घटना के बाद सौरव ने पुलिस से तुरंत मदद मांगी और आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

सौरव जिनके 21 मिलियन से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं, एक प्रमुख यूट्यूबर हैं और अपने चैनल सौरव जोशी आर्ट्स के जरिए हर महीने लाखों रुपए कमाते हैं। पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है और धमकी देने वाले आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है।

# एसबीआई लाइफ ने डब्ल्यूओएससीए फाउंडेशन के साथ बाल दिवस मनाया

एजेंसी

**भोपाल :** बाल दिवस के एक सार्थक उत्सव में, भारत की सबसे भरोसेमंद जीवन बीमा कंपनियों में से एक, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस ने एक प्रेरक डिजिटल वीडियो- 'लिप्पी की दुनिया' जारी किया, जिसमें युवाओं के सार, सपनों और शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डाला गया। ओडिशा के क्योंझर में महिला संगठन सामाजिक-सांस्कृतिक जागरूकता (डब्ल्यूओएससीए) एनजीओ के सहयोग से तैयार किया गया है। कंपनी अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए युवाओं को सशक्त बनाने के लिए उनकी शिक्षा में सहयोग कर रही है और उनकी क्षमता को निखार रही है। ब्रांड के दर्शन के अनुरूप बनाया गया डिजिटल वीडियो अपने लिए, अपनों के लिए एसबीआई लाइफ की इस प्रतिबद्धता को दशार्ता है कि वह युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके और उनके सपनों को पूरा करने के लिए उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में काम कर रहा है। उनकी क्षमता को निखार रहा है। यह नया डिजिटल वीडियो एक छोटे बच्चे लिप्पी की प्रेरणादायक यात्रा को दशार्ता है और सपनों को पूरा करने की उसकी अडिग इच्छा को दिखाता है। वीडियो में, हम 12 वर्षीय लिप्पी के जीवन को उसकी अपनी नजर से देखते हैं। वह क्योंझर की रहने वाली है और हमें उसकी रोजमर्रा की जिंदगी में झलक मिलती है, जिसमें उसकी माता-पिता की कठिन मेहनत का बखान किया जाता है, जो एक निर्माण स्थल पर काम करते हुए यह सुनिश्चित करते हैं कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और अच्छे स्कूलों में दाखिला प्राप्त कर सके। कठिन परिस्थितियों के बावजूद, वे उसकी शिक्षा में पूरी तरह से समर्पित हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि वही उनके भविष्य की सफलता की नींव होगी। वीडियो की यह कहानी तब एक दिल को छू लेने वाला मोड़ लेती है, जब लिप्पी, स्कूल में अपनी सीख से प्रेरित होकर, अपने माता-पिता के लंबे काम के घंटों की परेशानी को कम करने और उन्हें राहत पहुंचाने के लिए कुछ खास यानी एक छोटा पंखा बनाती है। एसबीआई लाइफ का संदेश, जिसे लिप्पी की यात्रा के माध्यम से दशार्या गया है, यह बताता है कि शिक्षा और पारिवारिक संबंध जीवन की चुनौतियों को पार करने में कैसे मदद करते हैं। यह ब्रांड की आकांक्षाओं का समर्थन करने की प्रतिबद्धता से मेल खाता है। डिजिटल वीडियो बच्चों और वयस्कों को शिक्षा की शक्ति में निवेश करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए बनाया गया है इस बाल दिवस पर डिजिटल वीडियो के अनावरण पर एसबीआई लाइफ में ब्रांड, कॉर्पोरेट संचार और सीएसआर के प्रमुख श्री रवींद्र शर्मा ने कहा, इस बाल दिवस पर, हम पूरे देश में युवा दिमागों के सपनों और लचीलेपन का जश्न मना रहे हैं, एक ऐसे माहौल को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं, जहां हर बच्चे को फलने-फूलने का अवसर मिले और वह एक उज्जवल कल का पीछा करने के लिए सशक्त हो। डिजिटल वीडियो - 'लिप्पी की दुनिया' के साथ, हमारा लक्ष्य उन रोजमर्रा के पलों की खूबसूरती को उजागर करना है, जो युवा सपनों को प्रेरित करते हैं और उन सपनों को पोषित करने में परिवार के समर्थन की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अभियान हमारे ब्रांड उद्देश्य से गहराई से मेल खाता है, जिसके तहत व्यक्तियों को अपने और अपने प्रियजनों के लिए उज्जवल भविष्य का निर्माण करके अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सशक्त बनाया जाता है। लिप्पी की कहानी को सामने रखते हुए, हम बड़े पैमाने पर समुदायों को प्रेरित करने, शिक्षा, करुणा और आत्म-विश्वास की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानने की उम्मीद करते हैं। उन्होंने आगे कहा, क्यों झर में डब्ल्यूओएससीए एनजीओ के साथ हमारा सहयोग वंचित समुदाय व इलाकों में युवा दिमागों को सशक्त बनाने, उन्हें चुनौतियों से पार पाने और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आधार प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को दशार्ता है। इस तरह की पहलों के माध्यम से, एसबीआई लाइफ बच्चों और परिवारों को उनकी क्षमता का एहसास कराने में मदद करने का प्रयास करता है।

## तीन दिवसीय आर्य महाकुंभ में शामिल हुए राज्यपाल

**फिरोजाबाद :** महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में सिरसागंज में आयोजित तीन दिवसीय आर्य महाकुंभ में सोमवार को पहुंचे केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने भारत की महान संस्कृति का जमकर बखान किया। उन्होंने आयोजन को संस्कृति संरक्षण की दिशा में मील का पत्थर बताया।

# आईसीजी ने पाकिस्तान की समुद्री एजेंसी के चंगुल से सात भारतीय मछुआरों को बचाया

एजेंसी

**नई दिल्ली :** भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) ने पाकिस्तान समुद्री सुरक्षा एजेंसी (पीएमएसए) के चंगुल से सात भारतीय मछुआरों को बचाया है, जिन्हें भारत-पाकिस्तान समुद्री सीमा के पास पकड़ लिया गया था। आईसीजी का जहाज सोमवार को भारतीय मछुआरों के साथ ओखा हार्बर लौटा, जहां सभी की चिकित्सा जांच की गई। इस घटना के दौरान दुर्भाग्य से मछली पकड़ने वाली भारतीय नाव 'काल भैरव' क्षतिग्रस्त होकर समुद्र में डूब गई। आईसीजी के मुताबिक 17 नवंबर को अपराह्न लगभग 3.30 बजे गश्त पर तैनात आईसीजी के

जहाज को नो-फिशिंग जोन के पास काम कर रही एक भारतीय मछली पकड़ने वाली नाव से संकट की सूचना मिली। कॉल में बताया गया कि एक अन्य भारतीय मछली पकड़ने वाली नाव काल भैरव को पाकिस्तान समुद्री सुरक्षा एजेंसी के पोत ने अपने कब्जे में लेकर भारतीय चालक दल के सात सदस्यों को पकड़ लिया है। इसके जवाब में आईसीजी के जहाज को तुरंत अधिकतम गति से बताए गए स्थान पर भेजा गया। पीएमएसए का जहाज 'नुसरत' भारतीयों को लेकर भारत-पाकिस्तान समुद्री सीमा के पीछे जाने का प्रयास कर रहा था, लेकिन इसके बावजूद आईसीजी के जहाज 'अग्रिम' ने दो घंटे तक पीछा करने के बाद पीएमएसए के जहाज को रोक लिया। उन्हें साफ तौर पर बताया कि किसी भी हालत में वह पाकिस्तानी जहाज को भारतीय जल क्षेत्र से मछली पकड़ने वाली नाव काल भैरव से भारतीय मछुआरों को ले जाने की अनुमति नहीं देगा। पाकिस्तानी जहाज पर भारतीय मछुआरों को छुड़ाने के लिए दबाव बनाया। इसके बाद आईसीजी जहाज सात मछुआरों को सुरक्षित वापस लाने में सफल रहा, जिनकी चिकित्सा जांच की गई। इस घटना के दौरान दुर्भाग्य से मछली पकड़ने वाली भारतीय नाव 'काल भैरव' क्षतिग्रस्त होकर समुद्र में डूब गई। आईसीजी का जहाज 18 नवंबर को ओखा हार्बर लौटा, जहां आईसीजी, राज्य पुलिस, खुफिया एजेंसियों और मत्स्य अधिकारियों ने संयुक्त रूप से घटना की जांच की, ताकि बचाव अभियान के लिए परिस्थितियों को परखा जा सके। यह सफल प्रयास समुद्र में भारतीय मछुआरों की सुरक्षा और हितों की रक्षा के लिए आईसीजी की निरंतर प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, जो भारतीय समुद्री समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने में इसके संकल्प को दशार्ता है।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशंनस एलएलपी की ओर से शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**